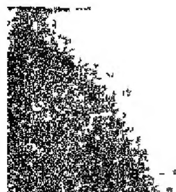




हाँ, यही सच है

, यही सच है

दलबारा सिंह



विद्यार्थी प्रकाशन

के-71, कृष्णनगर, दिल्ली-110051

ISBN 81-85256-15-2

प्रकाशक
विद्यार्थी प्रकाशन
के-71, कृष्णनगर, दिल्ली-110051
प्रथम संस्करण
2001
अक्षर संयोजक
सजय लेजर प्रिंटर्स
नवीन शाहदरा, दिल्ली-32
मुद्रक
आर. के. आफसेट
नवीन शाहदरा, दिल्ली-32

मूल्य . 100 00

HAAN YAHI SACH HAI (Novel) *by* **Dalbara Singh**

वकील धनपत राय अपने घर की छत पर बैठे धूप का आनद लेते हुए किसी केस की फाइल के पन्ने पलट रहे थे। फाइले देखते-देखते उन्हे नीद की झपकी आ गई। उनकी पत्नी गीता चाय लेकर आई।

"क्यो जी, नीद आ गई है।"

"हां, गीता, नीद की झपकी आ गई थी।"

"जी चाय पी लो सुस्ती भाग जाएगी।"

"गीता हर मौसम का अपना-अपना अलग आनद होता है। यह दिसम्बर महीने की मीठी-मीठी धूप कितनी प्यारी लग रही है। सर्दियो की लम्बी-लम्बी राते है—फिर भी धूप के आनंद मे नीद की झपकी आ रही है। कुदरत रानी के करिश्मे है। अब दिन के बारह बजे भी धूप अच्छी लग रही है। जून के महीने में दस बजे ही हम घर के भीतर बैठे हुए भी सूर्य की ध्तपिश महसूस करते है। भगवान की लीला है। मौसम बदलते रहते है। तब्दीली कुदरत का नियम है। समाज के रीति-रिवाज भी बदलते रहते है। व्यक्तियो को भी बदले जमाने के साथ चलना चाहिए। पहले लोग लडकियों को स्कूल-कॉलिज नही भेजते थे। चिट्ठी-पत्री पढने के लिए लडकियो को घर में ही पढाते थे—वह भी बहुत कम, इक्का-दुक्का समझदार पढे-लिखे लोग। आम लोग तो लडकियो को पढ़ाते ही नहीं थे। ज्यादातर बेचारी लड़कियां अनपढ रह जाती थी। अपनी बेटी नीलम अच्छे नम्बर लेकर पास हो जाए तो मै उसे बी ए तक पढा कर एल एल. बी. करवाकर वकील बनाऊगा।"

"छोड़ो जी आप बेटी को वकील बनाओगे तो दामाद जज ढूंढ़ना पड़ेगा जज। वैसे ही रिश्ते नहीं मिलते—वकील बेटी का रिश्ता करना कठिन काम हो जाएगा। मै तो यह चाहती हू कि बेटी नीलम इस वर्ष सी बी. एस. ई. पास कर जाए यही अच्छा है। इससे आगे पढाना ठीक नहीं है। हमने कौन-सी बेटी की कमाई खानी है। आप तो वैसे ही नीलम को आगे पढाने की सोच रहे हैं। यह जरूरी नही है कि वकील की बेटी भी वकालत ही करे। आगे तो फिर लडके वालों की मर्जी होगी—नीलम को पढ़ाएं—नौकरी करवाएं या घर के चौके-चूल्हे का ही काम करवाएं। मैने तो अभी से नीलम को चौके-चूल्हे का पूरा काम समझा दिया है। नीलम अभी से रसोई का पूरा काम सभालने लगी है

"अच्छा ! अब समझा आप को रसोई के काम से आराम मिलने लगा है। बेटी रसोई का काम सभालने लगी है। गीता मै कह रहा हू कि जमाना बदल रहा हे—हमे भी जमाने के साथ ही चलना चाहिए।

ठीक है बेटी चौकं-चूल्हे के काम मे आपका हाथ बटाने लगी है। अपने पाव धोतें हुए रानी 'गोली' (नौकरानी) नही वन जाती है परतु आजकल मिडिल क्लास—हमारे जैसे लोग पढ-लिख कर अच्छी नौकरी कर सकते हैं। बेटी नीलम पढ-लिख कर वकील नही तो स्कूल टीचर तो वन ही सकती है। आप क्या सोच रही हो—मै क्या सोच रहा हू लेकिन हमें यह तो पहले जानना होगा कि बेटी क्या चाहती है। हमे बेटी के सपने पूरे करने होंगे।"

"जी मा को बेटी की पिता से ज्यादा फिक्र होती है। नीलम की हमे आपसे ज्यादा चिता है। मेरी मानो नीलम की पढ़ाई अब वन्द होने दो। सी. बी. एस - ई पास करने के पश्चात बेटी को सिलाई-कढाई का डिप्लोमा करवा दो। दो-तीन वर्ष का कोर्स होगा—इस दरमियान कोई लडका ढूढते रहो। अच्छा लडका मिल जाने पर नीलम की शादी कर देंगे। सिलाई-कढाई बेटी सीख जाए। यह काम तो नीलम को पूरी उम्र काम आएगा। अगर आप नीलम को सिलाई टीचर बनाना चाहें तो फिर मैं आपसे सहमत हो सकती हूं। नीलम को और आगे पढाने के लिए मैं आपसे सहमत नही हूं।"

"गीता मेरे जीते जी तुम क्यो बेकार चिन्ता कर रही हो। वड़ी बेटी अच्छा पढेगी तो छोटे बहन-भाइयो के लिए उदाहरण बनेगी। नीलम पढ़ने मे तेज है। हम क्यो रुकावट डाले—उसे पढने दो। अब बहस बन्द करो—पहले इम्तिहान हो जाने दो। अगर आप ने नीलम को ऐसे कह दिया कि हम तुझे आगे नहीं पढ़ाएंगे तो वह अभी से दिल छोड़कर बैठ जाएगी—ध्यान से पढेगी नही।"

"जी आप तो जिद कर रहे हो।"

"गीता जिद की क्या बात है। इस सिलसिले मे हम बेटी नीलम की सलाह भी ले लेगे। उसका मन क्या कह रहा है—हम तो ऐसे ही वहस कर रहे है। सी बी एस. ई. का इम्तिहान पास करना भी इतना आसान काम नही है।"

धनपत राय हमेशा ही गीता की बातो को ऐसे ढग से टाल देते थे कि गीता समझ ही नही पाती थी कि वह क्या चाहते है। गीता की बातो को सुनकर भी अनसुनी कर वह फिर अपनी फाइलों में मगन हो गए। कोई खास केस था—जिसको जीतने के लिए वह जीतोड मेहनत कर रहे थे।

केस दिल्ली सुप्रीम कोर्ट में चल रहा था। इस केस के लिए वह पहले भी दो बार दिल्ली जा चुके थे। वह गीता से कहने लगे—"गीता, अब आप बेफिक्र रहो, हमे अपने केस के लिए ध्यान से तैयारी करने दो।"

गीता अपने रसोई के कामों में लग गई

समय अपनी चाल चलता रहा। नीलम के इम्तिहान हुए। नीलम और उसकी सहेलिया इकट्ठी बैठी शेख-चिल्ली की भाति आगे भविष्य के लिए योजनाए तैयार करने लगी। नीलम कहने लगी—"अजू मेरे पिता तो वकील हैं—वे मुझे आगे अवश्य पढाएगे। मै एम ए एम. एड. कर लैक्चरार बनूगी।"

"सच नीलम आपका उद्देश्य अच्छा है।"

"कॉलिज लाइफ इज गोल्डन लाइफ। यह सुनहरा समय होता है। कभी-कभी हमारी मैथ की मैडम मिसिज पाठक अपने कॉलिज के दिनो की बाते याद कर वहुत मजे लेती थी। प्राय: वह हमे आगे पढने के लिए ऐसी बाते सुनाकर प्रेरित करती रहती थी। कॉलिज मे कितनी आजादी होती है—वह हमे बताया करती थीं। स्कूलो मे तो अध्यापक डाटते रहते है—कॉलिजो मे लैक्चरार अपना लैक्चर झाड़ कर आगे निकल जाते हैं। इसलिए ही कुछ ऐसे विद्यार्थी जो स्कूलो मे अच्छे नम्बरों से पास होते है कॉलिजो मे जाकर फेल हो जाते है। क्योकि वह स्कूलो मे अध्यापको से डरते हुए पढ़ते रहते है। और थर्ड डिगरी मे पास होने वाले विद्यार्थी कॉलेज मे फर्स्ट डिवीजन मे पास होते है—क्योकि वह समझ जाते है कि पढाई हम अपनी बेहतरी के लिए ही कर रहे है। मैडम पाठक की बातें मुझे सब याद है—वह कहा करती थी—

"नो नॉलिज विदाऊट कॉलिज, नो लाइफ विदाऊट हसबैंड एड वाइफ।"

कुछ भी हो कॉलिज पहुंच कर विद्यार्थी वैसे भी मैच्योर हो जाते है। अपना भला-बुरा आप समझने लग जाते है।"

"नीलम हम अभी से आगे पढ़ने के लिए उत्सुक है। सेठ दौलत राम ने अपनी बेटी अजना को पाचवीं कक्षा पढा कर ही घर बैठा लिया था। वह बेचारी नादान थी, अपना भला-बुरा कहा सोच सकती थी—आगे चलकर वह जरूर पछताएगी।"

बाते कर दोनो सहेलियां अपने-अपने घर चली गई।

समय बीतता रहा। रिजल्ट आउट हुआ। नीलम फर्स्ट डिवीजन मे पास हुई।

घर मे गीता और वकील धनपत राय की फिर बहस शुरू हुई। दो दिन बहस होती रही। गीता नीलम को सिलाई-कढ़ाई का काम सिखलाने की जिद करके बैठ गई। वकील साहब नीलम को आगे पढाने के लिए अपनी दलीले देते रहे। नीलम भी अपनी माता गीता से बहस करने लगी कि उसकी अपनी भलाई आगे पढ़ने मे ही है। अब जमाना बदल चुका है। अब औरते घर की चारदीवारी से बाहर निकल दफ्तर में काम करने लगी है। पिता-बेटी की सलाह एक बन जाने से गीता को अपनी जिद छोड़नी पड़ी। नीलम को आगे पढ़ाने का फैसला पक्का हुआ।

नीलम को अलीगढ यूनिवर्सिटी में प्रवेश दिलवाकर वकील साहब ने नीलम के रहने के लिए होस्टल की फीस भर पूरा प्रबध कर दिया नीलम की सैटिंग कर

वह आगरे लौट आए।

गीता अपनी बेटी नीलम की बहुत चिन्ता करने लगी। एक महीना बीता, दो महीने बीते। गीता वकील साहब से फिर कहने लगी—"जी बेटी को मिलकर आओ ओर खर्चा वगैरा दे आओ। अभी बेटी नादान है—अल्हड है, उसे अपने लाभ-हानि का अभी कोई ज्ञान नहीं है। परदेस का मामला है।"

धनपत राय यह कहते रहते हा आज जाऊगा कल जाऊगा। हर दूसरे-तीसरे दिन गीता वकील साहब से नीलम के बारे मे अपनी चिन्ता जताती रहती।

नीलम होस्टल मे रहकर बहुत बोर-सी रहने लगी। माता-पिता से दूर उसे बहुत डर लगने लगा। एक दिन उसकी नई सहेली संजना आई। दो-चार इधर-उधर की बाते कर वह नीलम से घुल-मिल गई।

"यार नीलम तुमने यह तो बताया ही नही कि आपके साथ रैगिंग हुई थी कि नही ?"

नीलम चुप ही रही।

"अच्छा, लगता है कि ऐसी बुरी रैगिंग हुई होगी कि बताते हुए भी शर्म आ रही होगी।"

"संजना, अपनी सहेली से कैसी शर्म—मैं आपसे कोई बात छुपा ही नही सकती हू। संजना, पापा वकील है उन्होंने मुझे सभी नुक्ते पहले ही बता दिये थे। कुछ लडकियो ने रैगिग की कोशिश की थी—मेरा एक ही जवाब सुनकर उन सबकी बोलती बन्द हो गई थी। मैंने कहा था—माई डीयर फ्रैंडस, आई एम नाट न्यूकमर बट, आई कम हेयर विद माई फादर। थैंक ! कहकर मै आगे चल पड़ी। उन्होने मुझे भी पुरानी खिलाड़ी समझा होगा।"

"नीलम आप ने अच्छा समय सभाला। रीयली यू आर लक्की। वर्ना यहा की पुरानी पापिने कमबख्त बहुत खराब है। रैंगिग बहुत भद्दी करती है। क्या बताऊ मै भी उनके चंगुल मे फंस गई थी—थैंक गाड अपनी क्लास इन्चार्ज आ गई थी इसलिए मै उन पापिनों से बच गई।

मैने एक लडकी के साथ बहुत भद्दी रैगिग होते हुए देखी है। वह लडकी बेचारी शायद देहाती थी। उस बेचारी के पुरानी पापिनो ने कपडे उतरवा दिये थे। वह लडकी नई आई थी। उसे कहने लगी—आप अपना डॉक्टरी चैकअप करवाओ—एक-एक करके अपने पूरे कपड़े उतारो। बेचारी आखिर रोने लग गयी थी।" सजना चटकारे-चुस्किया लेती हुई यह बाते नीलम को बता रही थी।

नीलम को भी यह सब बातें अच्छी लग रही थीं। ऐसे ही नीलम और नई सहेलियों के साथ घुल-मिल गई। अब यहा नीलम का मन लगने लगा। नीलम मन

लगाकर पढने लगी।

इधर घर, गीता धनपत राय को बार-बार नीलम के पास जाने के लिए कहती ही रहती थी। वकील साहब रेल पकड़कर नीलम को मिलने के लिए चल पडे।

रेल अपनी चाल चलने लगी। सभी मुसाफिर अपने-अपने ख्यालो मे खोये नजर आने लगे। कुछ मुसाफिर अपनी नीद पूरी करने लगे। नीद में स्वप्न देखने लगे। कुछ मुसाफिर अखबारो, मैग्जीनो के पन्ने पलटने लगे।

वकील धनपत राय अपने मन के अदर बेटी नीलम के बारे मे ही सोच रहे थे। सयाने बुजुर्ग सच ही कह गए है कि बेटिया बेगाना धन होती हैं। आज बेटी नीलम घर से दूर रह रही है—गीता बेटी की कितनी फिक्र कर रही है। पढ-लिख कर आखिर नीलम बेटी अपने घर चली जाएगी। दामाद राजा फिर नीलम को लेकर छठे छमाही हमे मिलने आया करेगा। इन सोचो मे ही वकील धनपत राय अपनी सीट पर ही सो गए।

कुछ औरते अपनी खामोशी तोड़कर आपस में बात करने लगी। एक बूढी औरत थोड़ी बाह ऊपर कर कहने लगी, "बहन जी, जमाने को देखो कैसी आग लग रही है। बडे-बडे दौलतमद तो अपनी बेटियों की शादियों मे अपनी नाक ऊची करने के लिए दहेज बढ-चढ कर देने लगे हैं। हमारे जैसे दरमियाने दर्जे के लोगो के लिए मुसीबत खड़ी कर देते हैं।"

एक और औरत कहने लगी—"बहन जी, बात तो आप की भी ठीक ही है। मगर हमारे अपने मे भी बहुत कमियां है। बहुत कमजोरियां है। हम लोग अपनी चादर देखकर तो अपने पाव नही पसारते हैं—दोष लोगो को देने लग जाते है।"

पहली औरत फिर कहने लगी—"बहन जी, समाज मे नाक कटवाकर भी हम कैसे जी सकते है। लोक-लाज बचाने के लिए पांव चादर से बाहर निकालने ही पड़ते है। ऐसे तो इस दुनिया के लोग जीने ही नही देते।"

एक और तीसरी औरत भी बीच मे ही बोलने लगी—"बहनो, सभी इस लोक-लाज ने ही दुखी किये हुए हैं। मै तो कहना चाहती हू कि पूरी उम्र कुढ-कुढ कर मरने से अच्छा है कि हम किसी की भी परवाह ना करे। अपनी चादर देख अपने-अपने बूते अनुसार अपने हिसाब-किताब के साथ ही चलें। हम कोई जानवर भी तो नहीं है कि जिस तरफ एक भेड़ चली जाए सभी उसी के पीछे हो जाए। एक व्यक्ति एक किलो वजन उठाने की हिम्मत रखता हो और उसे दस किलो वजन उठाना पड़ जाए तो वह बेचारा मरेगा ही। हमारे मे हिम्मत नहीं है। हम भेड चाल के साथ चलने के लिए मजबूर हैं। भाई आप जानवर नही हो। हम इन्सान है। अपने बूते मुताबिक ही चलो।"

पूरे सफर में तीनों औरतें एक मिनट भी चुप न रह सकीं।

रेल झटका खाकर रुकी। आवाजे आने लगी—

चाय गर्म, पकौड़ा गर्म, खा लो-पी लो, लस्सी पाच-पाच रुपए ग्लास—दाल करारी बाबू जी। आवाजो के साथ ही धनपत राय रेल से नीचे आए। उन्होने यही अलीगढ़ स्टेशन पर ही उतरना था। उनकी बेटी नीलम अलीगढ यूनिवर्सिटी मे उच्च शिक्षा प्राप्त कर रही थी। जिसे वह मिलने आये थे।

धनपत राय तागे पर सवार हो बेटी नीलम के छात्रावास पहुचने तक पूरे रास्ते खामोश रहे। अजीब-सी कशमकश उनके दिलो-दिमाग मे चलती रही। वह बहुत उदास, सोच मगन नजर आ रहे थे। यूनिवर्सिटी पहुंच उनके चेहरे पर खुशी के भाव नजर आने लगे। होस्टल की इन्चार्ज ने उन्हें नीलम का कमरा नबर बता दिया। वह नीलम के पास पहुचे।

नीलम अपने पिता को देख बहुत खुश हुई। नमस्ते कहते हुए नीलम पूछने लगी, "पिताजी आप अचानक आए हो। घर पर सब ठीक तो है ?"

"हां बेटी, सब ठीक-ठाक है, कुशल-मंगल है। यू ही बेटी को मिलने चला आया हू। कुछ दिनो से तुम्हारी माता मुझे कह रही थी बेटी को मिल आओ। तुम्हारी माता तुम्हारी कुछ ज्यादा ही फिक्र कर रही है। अदालत कुछ दिनो के लिए बन्द है। वकीलों की स्ट्राइक चल रही है इसलिए बेटी को मिलने चला आया हू। बेटी आप बताओ यहा पढाई में मन लग रहा है कि नहीं।"

"पिताजी शुरू-शुरू मे कुछ परेशानियां पेश आई थी। मगर अब मन लग गया हे। यहां मेरी कुछ नई सहेलिया बन गई है।"

दोनों बेटी और पिता बाते कर रहे थे—तभी नीलम की सहेली रजनी चाय लेकर आई।

"बेटी आपने यह कष्ट क्यों किया है।"

"यह कष्ट नही पिताजी हमारा फर्ज है। आप नीलम के पिता हो मै नीलम की सहेली हू।" रजनी चाय रखकर बाहर की ओर चली गई।

"पिताजी कुछ और घर की खबर-सार सुनाओ ?"

"हा बेटी अपने घर मे तो सब ठीक है—तुम्हारी सहेली अजना की शादी हो गई है।"

"पिताजी उसकी तो अभी शादी की उम्र नहीं थी।"

'हा बेटी, वह तो तुम्हारे से भी एक वर्ष छोटी ही है। उसके पिता दौलत राम ने अपनी दौलत के हौसले एक अच्छा लडका ढूंढ ढेर सारा दहेज देकर उसकी शादी कर दी है। पैसे वाले लोग लम्बा नहीं सोचते है। अठारह वर्ष की आयु से कम उम्र मे शादी करना कानूनन जुर्म है। मगर लोगो मे कानून की अज्ञानता हे कानूनों की कौन चिन्ता करता है सेठ दौलत राम ने अपनी दौलत के बल पर

ही बेटी की शादी छोटी उम्र मे ही कर दी है।''

''पिताजी दहेज देकर क्या दूल्हा खरीदना पडता है।''

धनपत राय हंसने लगे--''बेटी तू तो बिल्कुल नादान हे। बेटी यह दहेज देना तो पेसे वालों का रिवाज है।''

''पितार्जी यह रिवाज तो फिर अच्छा नही है। ब्याह-शादियो में दहेज वगैरा का तो कोई चक्कर होना ही नही चाहिए। और शादी मैच्योर उम्र मे ही होनी चाहिए।''

''बेटी तुम ठीक कह रही हो। बेटी को अगर उच्च शिक्षा दी जाए यह ही सबसे बडा दहेज हे। यह ऐसा दहेज है जो बेटी के पूरी उम्र काम आता है। बेटी, अपने इस समाज मे दहेज की बुराई तब तक खत्म नही होगी—जब तक शिक्षा घर-घर नही पहुच जाएगी। अब तो यह बुराई समाज में काफी जड पकड चुकी है। इसी कारण से ही लडकी पैदा होने पर घर मे मातम छा जाता है। लड़की बेचारी बनकर रह जाती है। मगर मुझे खुशी है कि बेटी नीलम मेरी आशाओं-इच्छाओ को पूरा करेगी। अपना मन लगाकर पढेगी।''

''पिताजी, हम दुनिया के लिए नया उदाहरण पेश करेंगे। यह दुनिया लडकियो को पढ़ाना बुरा मानती है। हम दुनिया से उलट चलकर नया रास्ता दिखाएगे।''

''छोड़ो बेटी हम भी क्या बातें करने लग गए हैं। अब तुम अपनी पढ़ाई की ओर ज्यादा ध्यान देना। अब तुम काफी समझदार हो गई हो। कोई ऐसा काम मत करना जिससे हमारा सिर झुके। हमे किसी से कोई बात न सुननी पड़े। हमेशा हमारा सिर ऊचा रहे। दुनिया की चिता छोड़ कर मै तुझे उच्च शिक्षा दिलवाना चाहता हू। कुछ बच्चे गलत संगत में पड़ जाते हैं, ऐसे बच्चों की संगत मत करना। इसलिए बेटी हमेशा याद रखना आपका लक्ष्य उच्च शिक्षा प्राप्त करना है। अपने लक्ष्य को याद रखने वाला हमेशा सफलता प्राप्त करता है। प्राय' बिना लक्ष्य को याद रखे व्यक्ति गुमराह होकर भटक जाता है। बेटी तुम घर मे सब बच्चों से आयु में बड़ी हो इसलिए अपने बहन-भाइयों के लिए तुम एक उदाहरण बनोगी। तुम अच्छा पढोगी तो छोटे भी अच्छा ही पढ़ेगे। उनके लिए ऐसा उदाहरण पेश करना जिससे वह भी अच्छा पढने के लिए प्रेरित हो और उन्नति कर सके।''

''पिताजी मै हर भाति आप की बताई हुई बाते पर अमल करूंगी। कभी कोई ऐसा-वैसा काम नही करूगी जिससे आपके मन को कोई ठेस पहुचे।''

''बेटी मुझे भी तुम से यही उम्मीद है—अगर मुझे ऐसी आशा ना होती तो तुझे यहा पढ़ने ना छोडता। बेटी तुझे समझदार समझकर मैच्योर समझकर मै बेफिक्र हू। अच्छा बेटी अब मै चलता हू।'' बेटी के सिर पर हाथ घुमाकर प्यार देते हुए आशीर्वाद देकर वह वापस आगरे के लिए रवाना हुए

पिता के जाने के पश्चात नीलम अपनी किताबो मे खो गई। पढते-पढते उसे नीद आ गई। नीद में उसे अजीब-अजीब स्वप्न दिखने लगे। स्वप्न मे वह अपनी पुरानी सहेली अजना के साथ-साथ ऊचे पहाडो पर चढने लगी। वह दोनो सबसे ऊची चोटी पर पहुच गई। चोटी की दूसरी ओर से आता हुआ एक नौजवान उन दोनो की ओर देखने लगता है। उसके हाथ मे फूलो की माला होती है। उस माला को वह नीलम की ओर फेंकता है। माला सीधे आकर नीलम के गले मे पड़ती है। नीलम की सहेली अजना हंसने लग जाती है—नीलम को कोहनी मारते हुए कहती है कि अब तुम क्यो शर्माती हो आगे जाकर तुम भी माला अपने दूल्हे के गले मे डाल दो ना। नीलम शर्म से लाल हो जाती है। वह नौजवान नीलम की ओर बढने लग जाता है। पाव फिसल कर अचानक वह नौजवान गहरे खड्डे मे गिर पड़ता है। गिरते समय उसके मुंह से एक चीख निकलती है।

उस चीख को सुनते ही नीलम की आख खुल जाती है। नीलम अपने आपको सभालते हुए अपने चारो ओर देखने लगती है। उसके पास ही उसकी सहेली रजना सो रही थी। नीलम अपने स्वप्न पर ध्यान देते हुए फिर सोने का प्रयास करने लगी। उसे फिर धीरे-धीरे नींद आने लगी।

वकील धनपत राय अपने दफ्तर में बैठे किसी सोच में डूबे नजर आ रहे थे। उनका मुन्शी रामलाल अंदर आया। वह भी अपनी सोच से बाहर आए, "क्या बात है रामलाल ?"

"जी अपने सेठ दौलत राम आप से मिलने आए हैं।"

"उन्हें अन्दर बुला लाओ।"

"जी सर" कह कर रामलाल बाहर की ओर चला गया।

सेठ दौलत राम अदर आए। वकील साहब से हाथ मिलाया।

"फरमाओ सेठजी आज हमारे यहा आने का रास्ता कैसे याद आ गया है।"

"बस वैसे ही चला आया हूं। यू ही आप से एक सलाह लेनी है।"

"हुक्म करो सेठ साहब हम आप के क्या काम आ सकते हैं।"

"बात यह है वकील साहब सभी लोग एक जैसे नही होते है।"

"यह तो आप ठीक ही कह रहे हो—पाचों उगलिया भगवान ने एक जैसी नहीं बनाई है। अपनी बता आगे बताओ।"

"देखो वकील साहब जब लोगों को जरूरत होती है तो हाथ-पाव जोड़कर खडे हो जाते है। सिर झुकाकर नाक भी रगडते हैं। गर्ज पूरी हो जाने पर सीना तान चलने लगते है। समय पर पैसा हाथ ना हो तो शर्म महसूस करते हैं। निरीह गाय की भांति शरीफ बने होते हैं। हां जब यही पैसा वापस करना होता है आखें दिखाने

लगते है।"

"मै समझा नही सेठ साहब आप का मसला क्या है ?"

"वकील साहब पांच वर्ष पहले दीनदयाल की लडकी की शादी थी, दहेज के लिए पैसे कम पड़ रहे थे। वह हमसे पैसे लेने चला आया था। हमे भी दया आ गई थी हमने पाच हजार रुपये दे दिए थे। सोचा था कि चलो पुण्य का काम है गरीब की लडकी के हाथ पीले हो जाएगे। लडकी अपने घर चली जाएगी। अब आप ही बताओ हमने क्या गुनाह किया था।"

"सेठ साहब गुनाह नही आपने तो वाकई पुण्य का काम किया था। बेटी अपने घर चली गई। अब क्या हुआ ?"

"अब जब हम असल रकम मागते है तो आखें दिखा रहा है। पहले तो हर वर्ष दो हजार रुपए सूद के देता रहा था। अब सूद असल कुछ भी देने को राजी नही है। अब आप ही बताओ मुझे क्या करना चाहिए। आपकी इसलिए ही सलाह लेने आया हू।"

"सेठजी अगर आप उस पर अदालती केस करना चाहेंगे तो फिर हो सकता है कि आप को अपने बहीखाते भी चैक करवाने पड़ जाएं। हो सकता है आप पर इनकम टैक्स लग जाए।"

"वकील साहब अब कैसे कानून बन गए है, पहले तो कभी ऐसे कानून हमने सुने नही है। हम अपनी मर्जी करते रहे है क्योकि पैसा हमारा है। हम अपने ही जोखिम पर देते रहे हैं।"

"सेठजी हर एक व्यक्ति कानून की मदद ले सकता है।"

"क्या फिर कानून हमारी कोई मदद नही करेगा। हमने अपना और अपने बच्चो का गला काटकर यह पाच हजार रुपए दिये थे। हमने कौन-सा पाप किया था।"

"ठीक है सेठजी आप अपनी जगह बिलकुल ठीक हो। मगर कोर्ट-कचहरियों मे कागजो से काम चलता है। जबानी बातों को भाईचारा ही मान सकता है। अदालतो को तो सबूत चाहिए। क्या आप उसे दो हजार सूद की रसीद देते थे ?"

"नही, रसीद का क्या काम है। हमारा काम तो जबानी ही चलता आ रहा है—अब तक ईमानदारी से ही चल रहा है।"

"सेठजी फिर तो हम आप को यही सलाह देते है कि प्यार से जो मिले वही लेते रहो। बाकी आपकी मर्जी है। केस लडने से तो आप के और पैसे खराब हो सकते है। कानून का उल्लंघन कर जबानी-निशानी ब्याज पर पैसा देना-लेना जुर्म माना जाता है।"

"वकील साहब आप ठीक ही कह रहे हैं—मै सूद को ही असल आया समझ

अपने मन को समझा लूगा। अपने मन को ही तो समझाना है। आप ने नेक सलाह ही दी है। कभी समय निकाल हमारे घर भी आना। कभी मै भी आपके किसी काम आ सकता हूं।"

"हां-हा क्यो नही, कभी मुझे भी आप से काम पड़ सकता है। बुजुर्ग कहते है कुएं को कुआं नही मिल सकता व्यक्ति तो देर-सवेर कही ना कही कभी ना कभी मिलते ही रहते है। वैसे भी आप कितने लोगो के काम आते हो। आप अपने इलाके के मशहूर शाह है। गुरु बिना गत नही शाह बिना पत नही। आप आप ही है। ऐसे ऐरे-गैरे नत्थू खैरे को तो हम फीस लिए बगैर कानूनी सलाह देते ही नही है। आज मैंने आपको मुफ्त कानूनी सलाह दी है। कभी जरूरत पडने पर आप से बिना ब्याज पैसे ले लूंगा।"

दौलत राम ने अपने मन मे ही कहा–दौलत राम तुम वकील से मुफ्त कानूनी सलाह लेना चाहते हो। वकील बिना ब्याज तुम्हारे से पैसा लेना चाहता है। वकील जो ठहरा। पर प्रकट में कहा–

"शुक्रिया वकील साहब, मुफ्त कानूनी सलाह की कभी कीमत चुका ही देंगे। आप कभी हमारे लायक सेवा का मौका तो दो।" सेठ उठ कर मन मे विचार करता हुआ अपने घर की ओर चल पडा।

धनपत राय ने रामलाल को आवाज देकर अंदर बुलाया।

"रामलाल ध्यान रखना अभी मै घन्टे भर के लिए घर जा रहा हू। सेठ के बच्चे ने फ्री मे दिमाग चाट लिया है। हिलने का नाम ही नहीं ले रहा था। मुफ्त मे कानूनी सलाह लेने चला आया। आज का अपना दिन बेकार ही जाएगा। सुबह-सवेरे मनहूस की शक्ल देख ली है। घोड़ा घास से यारी करेगा तो खाएगा क्या। चलो छोडो फिर भी ग्राहक और मृत्यु का कुछ पता नहीं होता। अगर कोई भूला-भटका मुझे पूछने आए तो बता देना। मैं जल्दी ही लौट आऊंगा।" वकील साहब अपने घर की ओर चल पड़े।

सेठ दौलत राम अपने घर पहुचे। उनकी धर्मपत्नी ने उन्हें एक चिट्ठी दी।

"वाह, पुत्र भोले की चिट्ठी।" वह लिफाफा खोल चिट्ठी पढ़ने लगे–

"पूज्य पिताजी और माताजी प्रणाम, मैं यहां कुशल मंगल हू। आपकी राजी-खुशी की भगवान से कामना करता हू। कोई ना कोई गेम खेलना अब पढने के साथ जरूरी है। यहा का माहौल पढ़ने योग्य है। इसलिए मै अच्छे नम्बरो से पास होने की आशा रखता हूं।

यहां सभी विद्यार्थी ट्यूशन पढ रहे है। मैंने भी मैथ की ट्यूशन पढ़नी शुरू की है। पढ़ाई पर बहुत खर्चा करना पड रहा है। आपने जो पैसे पहले भेजे थे वह

खर्च हो गए है। उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए खर्चा बहुत हो रहा है। मैं बी ए तक पढ कर एल. एल बी करके वकील बनना चाहता हू। एक ना एक दिन आपका नाम दुनिया मे रोशन करूगा। कृपा करके आप मुझे शीघ्र ही पाच सौ रुपए मनीआर्डर से भेज देना। खर्चा लेने मै खुद चला आता मगर मै पढाई का नुकसान करना नही चाहता। इसलिए पत्र लिखा है।

आपका आज्ञाकारी बेटा,
भोला।"

दौलत राम की पत्नी लस्सी का लोटा ले आई।

"क्या लिखा है जी बेटे ने, बहुत खुश नजर आ रहे हो ?"

"बात ही खुशी की है। भोला दिल लगाकर पढ़ रहा है। लिखा है पढ़ाई मे काफी मेहनत कर रहा हूं। अच्छा ही है पढ-लिख जाए। आजकल कानून बदल रहे है। मैं चाहता हूं भोला पढ-लिख कर अच्छी नौकरी से लग जाए। ज्यादा पढे-लिखे को फिर दहेज भी अच्छा ही मिलेगा।"

"छोड़ो जी आगे-आगे मत सोचो। पहले बेटा भोला पढ़ तो ले—दिवास्वप्न देखने अच्छे नही होते है। हमे क्या मालूम है शायद भोला अपनी मर्जी से अपनी पसद की किसी लडकी से ही शादी कर ले। हमने सुना है कि कुछ लड़के पढ-लिखकर अपनी पसंद की लडकी से ही शादी कर लेते है। पढे-लिखे और अनपढ़ लोगो के विचारो में बहुत अतर हो जाता है। पढ़े-लिखे बच्चों के बुजुर्गो से विचार भिन्न हो जाते हैं।"

"भाग्यवान भोला ऐसा नही कर सकता। भोला मेरा आज्ञाकारी पुत्र है। वह मेरी मर्जी मुताबिक ही चलेगा। उसे मालूम नही है कि उसकी बहन की शादी पर कितना खर्च आया है। कितना दान-दहेज देना पड़ा है। पूरी एक पेटी कैश देनी पडी है। पढ़े-लिखे बेटे की शादी पर मैं लड़की वालों से पूरी दो पेटी कैश लूंगा, सरकार और आम लोग क्या समझ सकते है कि हम लाख रुपए को पेटी कहते है।"

"जी आप तो ऐसे ही नाराज होने लगे हो। पहले बेटा भोला पढ-लिख तो जाए तब शेखचिल्ली की भाति योजनाए बनाना। अभी तो आप अपना काम देखो।"

सेठ दौलत राम अपना काम देखने बाहर की ओर चल पड़े।

वकील धनपत राय अपने घर पहुच अपनी पत्नी से बाते करने लगे।

"जी अभी आए हो ? कैसी है बेटी नीलम ?"

"गीता मै तो काफी देर का आया हुआ हू। सीधा अपने दफ्तर ही चला गया था। बेटी नीलम ठीक-ठाक है। कॉलिज का माहौल ही कुछ ऐसा है—बेटी कुछ ही महीनों मे पहले से बड़ी नजर आने लगी है।"

"जी इसलिए ही तो मै आप से कह रही हूं कि बेटी के लिए कोई लड़का अभी से ढूंढ़ने लग जाओ।"

"हा गीता कोई अच्छे घराने का लड़का मिल जाए मै भी बेटी नीलम के हाथ पीले करके गंगा नहा लू। मेरी भी अब यही इच्छा है। छोटी दोनों भी जवान होने लगी है, तुम्हारी चिंता किसी सीमा तक ठीक भी है। अच्छा मैं जरा हाथ-मुह धो लू तुम हलका-सा नाश्ता तैयार करो। सुबह से कुछ भी खाया-पिया नही है।"

गीता नाश्ता तैयार करके ले आई।

"जी गर्म-गर्म परांठे खाओ। आपकी पसंद के मूली के परांठे बनाए है।"

"गीता घर-गृहस्थी में अगर मियां-बीवी एक-दूसरे की पसद को समझे, एक-दूसरे की पसद का ध्यान रखें तो घर स्वर्ग होता है। हां अगर मिया-बीवी एक-दूसरे की कमिया निकालने लगें तो वही घर नर्क बन जाता है। इसीलिए तो मै प्राय. यही कहता हू कि लडकियो का पढना-लिखना बहुत ही जरूरी है। अगर आप भी अनपढ़ होती तो फिर सोच भी नही सकती हो कि तुम्हारा ही क्या व्यवहार होता। पढे-लिखे व्यक्ति की पहचान बगैर बताए ही हो जाती है। कुछ मसलो पर हम दोनों एक-दूसरे से कई बार सहमत भी नहीं होते है। मगर हमारी लड़ाई जबान तक ही सीमित रहती है। माता-पिता के व्यवहार का बच्चों पर बहुत असर पड़ता है। माता-पिता अपने बच्चो के लिए आप उदाहरण बनते है।. आज नाश्ते का मजा ही कुछ और है। बहुत आनंद आया। अच्छा एक बहुत जरूरी केस याद आ गया है। बहुत-सी फाइले देखनी हैं—अब मै दफ्तर जा रहा हूं।

पलक झपकने की भांति दिन व्यतीत होते रहे। जैसे ही एक वर्ष व्यतीत हो गया नीलम इम्तिहान देकर फ्री हो गई। जैसे कोई हसीन स्वप्न देखा हो ऐसे ही समय व्यतीत हुआ था। उसे मालूम ही नही हुआ कि कैसे समय पख लगाकर उड़ गया है। अनेक खुशियां दिल मे महसूस करते हुए नीलम रेल पकड़ अपने घर के लिए रवाना हुई। रेल के सफर में नीलम को रह-रहकर अपने घर का ख़याल आने लगा।

कैसा अद्भुत है व्यक्ति का मन ! जहा जाना होता है व्यक्ति का मन पहले ही वहां पहुंचकर वहा की ही कल्पनाएं करने लग जाता है। मन मे विचार उठने लग जाते है कि अब वहां क्या हो रहा होगा। वहा यह हो रहा होगा, वहां वो हो रहा होगा।

कितना समय नीलम अपने माता-पिता से दूर रही थी। मन मे घर के सदस्यो के चेहरे एक-एक करके उसे नजर आने लगे। अपने घर के बारे सोचते-सोचते नीलम का सफर पूरा हो गया।

एक वर्ष मे उसके गाव का नक्शा कुछ भी नही वदला था। बस एक उसका अपना बदन जरूर बदल गया था। अब वह पहले से ज्यादा स्वस्थ नजर आ रही थी। उसके अपने ख्याल भी पहले से बदल गए थे। अव वह अपने आपको पहले से खुले विचारो वाली महसूस कर रही थी। पहले से ज्यादा खूबसूरत हसमुख चेहरा साफ नजर आ रहा था। एक सावन वह घर से बाहर बिता चुकी थी। सोचती हुई नीलम अपने घर पहुची।

नीलम अपनी माता से गले लग मिली। मां-बेटी एक-दूसरे की ओर देखती ही रह गई। एक अजीब-सा दृश्य नजर आ रहा था। कुछ समय के लिए वह दोनो खामोश रही, मुह से कुछ भी बोल न पाई। दोनों की आंखे बोल रही थी।

बहुत अजीब है आखे, खुशी के समय भी भर आती हैं। आंखों ने आखो मे देख कर पूरे वर्ष की बाते जान लीं। मा-बेटी एक-दूसरे को निहारती रही। नीलम की आखों मे आसू आ गए। नीलम की आंखो में आंसू देखकर गीता ने नीलम को गले लगा लिया और ध्यान से बेटी नीलम को देखने लगी।

नीलम का छोटा भाई खेल कर बाहर से भागता हुआ आया।

"मेली दीदी आ गई—मेली दीदी आ गई।"

हंसते हुए नीलम ने उसे अपनी गोद में उठा लिया। भैया को चूमा और बडे प्यार से उसके साथ तोतली आवाज मे बातें करने लगी—

"छोटू भैया मेले साथ पढने जाएगा ?"

"दीदी-दीदी हम आप को भी जाने नहीं देंगे।"

नीलम भैया से बाते करती रही। मा नीलम के लिए खाना तैयार कर लाई। "बेटी खाना खाओ, भूख लगी होगी।"

नीलम खाना खाने लगी और पूछने लगी, "मा बहने कहां है ? पिताजी घर कितने बजे आएंगे ?"

"बेटी तुम्हारे पिताजी 6 बजे के करीब घर आते हैं। तुम्हारी बहने पडोस मे ही हरीराम के घर गई हुई हैं। हरीराम के बेटे श्याम सुन्दर की शादी हो गई है। उसकी दुल्हन को देखने गई हुई है। कहते हैं कि दुल्हन काफी सुन्दर है। दहेज भी बहुत लाई है। सच बेटी कितने खुश-नसीब होते है वे माता-पिता जिनकी बेटियों के लिए अच्छे घर-वर मिल जाते है। मैं कितनी दफा तेरे पिताजी से कह चुकी हूं कि नीलम के लिए अच्छा-सा लडका ढूढो।"

"उफ मा ! मैने अभी अपनी पढाई पूरी करनी है। आप अभी से मेरी शादी के लिए क्यो सोच रही हो।"

"बेटी, मां को अपनी बेटी की हमेशा चिन्ता होती है। अपने घर पहुंच कर पढते रहना। लड़कियो का असली घर तो ससुराल वाला घर ही होता है। जहा उसे

एक न एक दिन जाना ही होता है। पिता का घर तो एक पड़ाव होता है वह हमेशा ही मायका कहलाता है। मैं जल्दी ही तुझे तेरे घर भेजना चाहती हूं।''

दोनो छोटी बहने भी घर पहुचीं।

नीलम उन्हे देखकर हैरान होने लगी। कितनी बदल गई थी दोनो। दोनो ही जवानी की दहलीज पर पांव रख चुकी थीं। नीलम अपनी बहनो से गले लग मिली। तीनों बहने बैठकर बातें करने लगी। अपनी-अपनी पढ़ाई अच्छी भाति करने की डीगे मारने लगीं--मै अच्छे नम्बरो से पास होऊगी--मै स्कूल में फर्स्ट आऊगी। नीलम उन्हे कहने लगी बहस छोडो रिजल्ट सामने ही आ जायेगा। ऐसे क्यों गप्पे मार रही हो। सबकी मेहनत का रिजल्ट सामने आ जाएगा। फिर वह दोनों मां के साथ घर के कामो में लग गई। नीलम आराम करने लगी।

अभी नीलम लेटी ही थी--उसकी सहेली अंजना उससे मिलने नीलम के पास पहुची।

नीलम अंजना को देखती ही रह गई।

''नीलम, क्या देख रही हो ? मैं तुम्हारी सहेली अंजना ही हूं।''

''अरे अंजना तुम तो बहुत बदल गई हो। कितनी मोटी हो गई हो ! कितनी खूबसूरत नजर आने लगी हो। ऐसा क्या खाने लगी हो ? किस चक्की का आटा खाने लग गई हो ?''

''नीलम जब तुम्हारी शादी होगी तब सब समझ जाओगी।''

दोनों सहेलिया बहुत देर तक बैठी अपने दिलो की बाते करती रही। नीलम धीरे-धीरे अंजना की बातों में मजे लेती रही।

''अंजना कैसे बीती सुहागरात ?''

''नीलम क्यो पूछ रही हो, अब तो तुम्हारी शादी भी होने वाली ही होगी। अपने आप सब कुछ मालूम पड जाएगा--जजमान बाल कितने लम्बे सब सामने ही आ जाएगे।''

दोनों सहेलिया धीरे-धीरे एक-दूसरे से अपने-अपने दिलों की बाते बताने लगी। अजना ने अपनी सुहागरात की पूरी राम कहानी ए टू जैड नीलम को सुनाई। ऐसी बाते नीलम ने पहले कभी किसी सहेली से अभी तक नही सुनी थी।

नीलम अजना की बाते सुन हैरान रह गई। अजना की बाते सुन नीलम ऐसे महसूस करने लगी जैसे वह कोई रगीन सपना देख रही हो। अजना की बाते सुन नीलम आनंदित हो रही थी। ऊपरी मन से अजना से कहने लगी--''कजरिए तू तो थोडी बहुत शर्म भी नही कर रही है। शराबी पति ऐसे-वैसे तू तो बहुत बदल गई हे।''

''नीलम बुजुर्ग कहते है कि जिसने की शर्म उसके फूटे कर्म जब अंगीठी

गर्म हो तो चाय पराठे दाल सब्जी कुछ भी बनाते रहो। यह सब बाने तू शादी के पश्चात ही समझेगी।"

नीलम अपने मन में सोचने लगी कि अजना तो बहुत खुशकिस्मत है। नीलम अपनी सोच में ऐसी खोई कि वह भूल ही गई कि अजना अभी उसके पास ही बैठी है।

अंजना ने ही नीलम को हिलाकर उसे ख्यालो से बाहर निकाला।

"नीलम, तुम्हारी शादी कब हो रही है ?"

"अंजना, मा तो बहुत जल्दी मेरी शादी करना चाहती है मगर मै अभी और आगे पढ़ना चाहती हूं।"

"पगली जो आनंद शादी करवाने मे है वह आनंद पढ़ाई मे कहा मिल सकता है। मेरी वात मान जल्दी शादी करवा ले, फिर देखना कैसा आनद है इस प्यार भरी जिदगी जीने का।"

नीलम के पिताजी घर आए।

दोनों सहेलियों ने अपनी बातें समाप्त कीं। अजना उठकर अपने घर की ओर चल पडी।

नीलम अपने पिता से गले मिली।

"बेटी नीलम, कितना समय हो गया है तुम को आए हुए। चिट्ठी डाली होती तो मै तुझे स्टेशन पर लेने पहुंच जाता।

"बस पिताजी इम्तिहान समाप्त होते ही मैं सीधी घर आ गई हूं।"

"बेटी इम्तिहान कैसे हुए ?"

"पिताजी काफी अच्छे हुए है। उम्मीद है कि अच्छे नम्बर लेकर पास हो जाऊंगी।"

"अच्छा बेटी आराम करो काफी थक गई होगी।"

नीलम अपने कमरे में जाकर आराम करने लगी। अजना की बाते याद कर वह अपने मन में खुश होने लगी। सोचते-सोचते उसे नींद आ गई। सपने में भी वह अजना से ही बाते करती रही।

दूसरे कमरे मे नीलम के माता-पिता बातें करने लगे। खुसुर-पुसुर की आवाजे सुनकर नीलम की आख खुल गई। वह ध्यान से उनकी बाते सुनने लगी। उसके पिता उसकी मा से कह रहे थे कि "गीता अब नीलम को कम से कम बी. एड तक पढ़ाऊंगा। नीलम पढ़ने में तेज है। पढने में बहुत रुचि रखती है। बता रही है कि उसके इम्तिहान अच्छे हुए हैं। पढ़ाई बेटी के पूरी उम्र काम आएगी। सूझ-बूझ समझदारी से वह अपनी जिदगी खुशी-खुशी व्यतीत करेगी।"

'जी समय बहुत खराब चल रहा है मैं तो अभी भी यही चाहती हूं कि

जल्दी से जल्दी नीलम के हाथ पीले कर दिये जाएं। आगे तो उसके ससुराल वालो की मर्जी ही होगी, आगे पढाए या न पढाए। हमे तो जल्दी से अपना बोझ दूर कर लेना चाहिए। फिर एक नीलम का ही नही हमे छोटियो की भी फिक्र है। वह भी तो जवान हो रही हैं। अब आप घूम-फिर कर कोई लड़का पसद करो। घर 'बैठे-बैठे ही लडका नही मिल जाएगा। लडका ढूढते-ढूंढते जूते टूट जाते है।''

''ठीक है गीता तुम इतनी ज्यादा फिक्र ना करो। मै तुम्हारी चिन्ता समझ रहा हू। मै अभी से ही उचित लड़के को ढूंढने लग जाता हू। होना तो वही है जो भगवान को मन्जूर है। वह भगवान ही व्यक्ति के मन मे विचार पैदा कर देता है। जैसा भगवान चाहता है वैसा ही माहौल पैदा कर देता है।''

नीलम चुपचाप उनकी बाते सुनती रही। नीलम अपने मन मे विचार करने लगी—लगता है मा मुझे आगे पढ़ने नही देगी। वेशक पिताजी मुझे आगे पढाना चाहते है। मगर मा की जिद भी तो बहुत बुरी है। हमेशा वह पिताजी को मजबूर करती रहती है। आखिर बिचारे पिताजी को मा की जिद के आगे झुकना ही पडता है। सच, मा की जिद मां का स्वभाव ठीक नही है। —नीलम सोचते-सोचते फिर सो गई।

दिन व्यतीत होते रहे। नीलम का रिजल्ट आया। नीलम अच्छे नम्बरो से पास हुई। धनपत राय ने अपनी दलीलों से गीता को समझाया और नीलम का आगे पढने के लिए फिर एडमिशन करवा दिया।

नीलम फिर अपने घर से दूर पढने लगी।

सभी लोग किसी दिव्यशक्ति के हुक्म से बंधे है। व्यक्ति जो चाहता है हमेशा वैसा नही होता है। समय हमेशा ताकतवर साबित होता है। नीलम की मा की इच्छा से उलट नीलम आगे की पढाई के लिए फिर अपनी सहेली रंजना से घुल-मिल गई।

एक दिन नीलम रंजना से कहने लगी, ''रजना अब तो मेरी मा मेरा रिश्ता पक्का करना चाहती है। वह मेरी शादी के लिए पिताजी को बहुत मजबूर कर रही है। शायद मुझे तो पढ़ाई अधूरी ही छोड़नी पडे।''

''नीलम तुम्हारी मर्जी के बगैर मा क्यों जल्दी कर रही है। अब जब एडमिशन ले ही लिया है तो अपनी माताजी को साफ जवाब दो कि जब तक मै पढ रही हू तब तक शादी नही करूंगी।''

''रजना, तू तो बहुत अजीब बाते कर रही है। रंजना अपने माता-पिता को ऐसी बातें कैसे कही जा सकती है।''

''छोड यार नीलम तू तो बहुत डरपोक है। जब तुम्हारे पिताजी ही तुम्हे आगे पढाना चाहते हैं और वह स्वयं वकील है और तुम भी आगे पढने के लिए उत्सुक हो तो अपनी माताजी को साफ मना कर दो। नीलम हमने तो अपने पिताजी से

भी साफ कह दिया है—जब हमारी मर्जी होगी मै तो तब शादी करवाऊगी।''

''रंजना, मै तो अपने पिताजी की किसी भी बात को टाल नही सकती हूं। माताजी पिताजी के घर मे कदम रखते ही पूछने लगती है कि कोई लड़का मिला है या नही। पिताजी मा की बातो को अपने ढग से टाल देते है। इसलिए पिताजी जो भी फैसला करेंगे ठीक ही करेगे।''

रजना कहने लगी—''नीलम मैंने तो अपने पिताजी से साफ बोल दिया है कि मै जब तक पढ रही हूं मेरी शादी की कोई भी बात न सोचना। मैने तो यहा तक कह दिया है कि अपनी शादी भी मैं अपनी पसंद के लड़के से ही करूगी। इसलिए मेरे कारण कोई भी चिता अपने मन मे न रखना।''

''रजना, तू तो सीमा से भी आगे जा रही है—माता-पिता क्या सोचेंगे ?''

''क्यो, क्या सोचेंगे ? मैंने तो साफ बोल दिया है कि जिस के सग पूरी उम्र का कॉन्ट्रैक्ट करना है वह मेरी पसद का ही होगा। वर्ना मै तो साइन ही नही करूगी।''

''रंजना तू तो सीरियस बातो को भी मजाक में ले रही है।''

''क्यो इस में हसी की क्या बात है। यह बात तो जिदगी भर का सवाल है।''

''रजना हम अभी बहुत छोटे बच्चे ही हैं। ऐसे जिंदगी भर के लिए सम्बन्ध बनाने के लिए माता-पिता हमसे समझदार है। उनको उम्र का तजुर्बा होता है। उनकी सोच लम्बी होती है। रजना, क्या नूरी की कहानी भूल चुकी हो। शादी से पहले ही फ्रैंक बन कर दिखा रही थी। उसका रिजल्ट देख ही लिया है। कॉलिज से नाम कटवा लिया। दुनिया से भी मुह छुपाना पड रहा है। इसलिए मैं कह रही हूं लिमिट मे रहना अच्छा होता है। बद अच्छा बदनाम बुरा। एक बार की बदनामी पूरी उम्र के लिए कलकित कर देती है। नूरी कितनी तेज-तर्रार और मॉडर्न बनकर दिखा रही थी। थैंक गॉड हमें समय पर उसका कैरेक्टर मालूम हो गया था। वह कितनी बाते बनाया करती थी। कैसा समय आया लोग उससे बात तक करना बुरा समझने लगे। वह हमे कितने गर्व से कहा करती थी कि लडकों को उंगली पर नचाने की मुझे कला आती है। बस वही दिन मेरा उसके संग आखिरी दिन था। मैंने उसे ना बुलाने की कसम खा ली थी। मैने उसे स्पष्ट शब्दों में कह दिया था कि नूरी हम घर छोडकर इतनी दूर पढ़ने के लिए आए हैं, लड़के पटाने नही। तूने गुलछर्रे उडाने हो तो हमारे साथ तेरा कोई काम नही है। हमें तो अपनी पढ़ाई तक मतलब है।''

''हा नीलम तेरी बातो मे दम है। मगर किसी भी काम की सीमा को पार करना उचित नहीं होता है। मै शादी के कारण अपने माता-पिता के सिर पर बोझ हरगिज़ नहीं बनूंगी। अगर दूल्हा उनकी पसंद का हुआ तो फिर दहेज मांगने वालों को मैं बिलकुल पसद नहीं करूगी माता-पिता हमारी पढ़ाई-लिखाई पर इतना खर्च

करते हैं। उन्हें हमारे कारण से ही क्यो तंग रहना पड़े।"

"हां रजना तेरी यह दलील अच्छी है। कभी हमारी पढाई का खर्चा कभी हमारे लिए दहेज का चक्कर। तभी तो ज्यादातर मांयें लडकियो को पढाती नही है। बात भी सही है पहले पढाई पर खर्चा करो फिर दहेज पर खर्चा करो, तब हमारे पढने का ही क्या फायदा अगर माता-पिता हमारे कारण परेशान रहें।"

"पढी-लिखी लडकियो को दहेज का विरोध करना ही चाहिए।"

"सच रंजना तू तो बहुत स्पष्टवादी है।"

"नीलम स्पष्ट बात कहने वाला कडवा लगता है मगर सच कहने वाला कभी धोखा नही खा सकता। हा कुछ बातें जिदगी मे अनुभव से सीखी जाती है। मै भी कुछ ज्यादा ही खुले दिल की बनने लगी थी। तू मेरी सच्ची सहेली है। शुक्रिया, तूने मुझे नई शिक्षा दी है। हा अब मै तुझे भी समझाती हू—मन की दोचिती हमेशा खतरनाक होती है। बुजुर्ग कहते है कि दो नावो का सवार कभी अपनी सही मंजिल पर नहीं पहुच पाता है। अब तू अपना ही उदाहरण ले ले—तेरे मन में उलझन दोचिती है कि मालूम नहीं पढ़ सकूगी या नही। तो ऐसी मनोस्थिति मे तेरा मन पढाई मे नही लग सकता। तेरे तो सपनो में भी उलझन बनी रहेगी। पढाई मे मन ही नही लगेगा तो पास कैसे हो पाएगी।

कभी सपने मे भी शादी होती नजर आ गई—प्रायः शादी की उमर में जब घर वाले शादी करना चाहते हों ऐसे सपने आ सकते हैं। तब तू जागकर सोचने लगेगी—सपना कही सच तो नहीं हो जाएगा या स्वप्न झूठा ही होता है। यह होगा—वह होगा। अपने मन में नीलम कोई एक पक्का फैसला कर लो—पढ़ना है तो पढना ही है। तभी तू अच्छी भांति मन लगाकर पढ़ सकेगी।

दोचिती मे पड़कर दो नावों पर सवार कोई व्यक्ति पार नही पहुच सकता है। इसलिए बहन मन की उलझन समाप्त करो। अच्छा अब मन लगाकर पढ़ो। आज बहुत बाते हो चुकी हैं—बाकी बातें कभी फिर करेगे।"

नीलम सोचने लगी रंजना भी रजना ही है। मेरे मन मे उलझन कहा है। मेरे मन का तो पक्का फैसला है। पिताजी वकील हैं—जो मेरे लिए सोचेंगे वह अच्छा ही होगा। मेरे प्यारे पिता मेरे पिता ही नही मेरे सूझबूझ वाले रहनुमा भी है। वह अपने आप मेरा फैसला करेंगे कौन-सा मार्ग मेरे लिए अच्छा है। वह जो भी रास्ता मेरे लिए चुनेंगे अच्छा ही होगा।

एक दिन नीलम का एक पत्र आया। उसकी सहेली सजना पास ही बैठी थी। नीलम अपने पिता की लिखाई पहचान कर समझ गई कि पत्र उसके पिताजी का ही है। नीलम ने अपने मन में सोचा कि यह पत्र मै सजना के जाने के पश्चात ही आराम से पढ़ लूंगी। नीलम ने पत्र खोला तक नही।

"क्यों नीलम पत्र पढोगी नही—क्या हमारे से भी कोई भेद छुपा रखा ह। मेरे से पर्दा। क्या चक्कर चलाया हुआ है। नीलम चुप क्यों हो। अच्छा मै अपने रूम मे जा रही हू आराम से पढ लेना। एक मैं ही पागल हू कोई भी भेद छुपा नही पाती हू। एक-एक मन की बात बता दी थी।"

नीलम ने गुस्से से पत्र उठाया और सजना को पकड़ा दिया—"लो पढ़ लो—क्या छुपाया है। पहले तोलो फिर बोलो। संजना मैने तुझ से कुछ नहीं छुपा रखा है। तुझे मेरी कसम अगर पत्र न पढ़ा।"

सजना ने ध्यान से पत्र देखा—पत्र नीलम के पिता का था।

"सॉरी मैडम जी गलती हो गई। मै भी कितनी पागल हू अगर मेरी तसल्ली ना होती तो और गलत काम हो जाता क्योकि मै इस पत्र को किसी का प्रेम पत्र समझ बैठी थी। सोच रही थी कि नीलम ने पत्र पढ़ा क्यो नही है। नीलम मैं गलती मान रही हू—इसलिए आज से मै तुझे मैडम जी कहकर ही बुलाया करूगी। मैडम जी आगे के लिए ऐसी गलती नही होगी।"

"अच्छा हार मान रही है तो बेटा नोट करो आइदा बिना सोचे-समझे किसी पर सदेह नहीं करना। आज अगर अपने मन मे सदेह ले जाती तो कभी हमारा विश्वास न कर पाती। विश्वास ही मित्रता का आधार स्तंभ है। सदेह मित्रता तोड़ देता है।"

"नीलम बुरा मत मानना रजना की भाति मै भी स्पष्टवादी हू। दिल पर आई बात छुपा नहीं पाती हूं। सच्ची बात मेरे मुंह से निकल ही जाती है। थोडा-सा सदेह मन में उठा, फटाक से बोल दिया—मुझे पहले थोड़ा सोचना ही चाहिए था। मैडम मेरा कोई दोष नहीं है उमर का ही तकाजा है। उल्टी-सीधी बाते मन इस उमर मे ज्यादा ही पकड़ता है। मैडम आप अपनी उमर से कही ज्यादा समझदार हो, पत्र मेरे ही हाथ पकड़ा दिया।"

"संजना मै जानती थी मेरे पत्र कहा से आ सकते हैं। कोई और होती तो क्यो पत्र दिखाती। हमेशा चोर की दाढ़ी का तिनका ही पकडा जाता है। अगर कोई चोर ही न हो तो तिनके-फिनके से क्या लेना-देना। मैं तेरे छिछोरेपन को अच्छी तरह जानती हू, मेरे मन मे तेरे लिए कोई गुस्सा नही है।" संजना अपने रूम की ओर चल पडी।

सजना के जाने के पश्चात नीलम अपने पिता के पत्र को पढने लगी।

मेरी प्यारी बेटी नीलम,

बहुत बहुत प्यार।

हम सभी यहा पर बिलकुल ठीक-ठाक हैं। तुम भी अपनी पढ़ाई खूब मन लगाकर कर रही होगी। बेटी तुम्हारी बहनें और भाई भी ठीक-ठाक हैं।

बेटी जैसे कि तुम जानती ही हो कि मेरे विचारो से तुम्हारी माता के विचार हमेशा भिन्न ही होते है। मैने तुम्हे आगे पढ़ाने का फैसला किया हुआ है। अब तुम्हारी माताजी तुम्हारी शादी की बहुत फिक्र कर रही है। उनकी ज्यादा जिद के कारण हमने एक लडका पसंद किया है। तुम्हारी माता जी तो इस रिश्ते को पक्का ही समझ रही हैं। मगर मैने लडके वालो से बोल दिया है कि पहले लडका लडकी एक-दूसरे को देख ले तभी बात आगे होगी। इसलिए बेटी आने वाले शनिवार को तुम घर आ जाना। अगर तुझे लड़का पसद हुआ तो फिर सगाई पक्की कर देगे। शादी तुम्हारी परीक्षा समाप्त होने के पश्चात ही करेगे। तुम्हारी पढ़ाई का कोई भी नुकसान नही होने दूंगा। हमने लडके वालो को बुलाया हुआ है। लडके वाले समय मुताबिक पहुच ही जाएगे। मै अपनी बेटी पर गर्व करता हू। मै तुम्हारा भविष्य सुखी देखना चाहता हूं। शनिवार को स्टेशन पर ही तुम्हें लेने आ जाऊगा। बेटी समय से रेल पकड़कर आ जाना। बाकी बाते यहां आने पर तुम्हें समझा दूंगा।

तुम्हारा पिता

वकील धनपत राय।

पत्र पढ कर नीलम सोचो के समुद्र मे डूब गई। उसे अपने मन मे सजोए सभी सपने टूटते हुए नजर आने लगे। अब क्या किया जाए। रजना की भांति अपने घर माता-पिताजी से कुछ कहने की भी मेरी कुछ हिम्मत नही है। फिर पत्र भी तो पिताजी का ही है। घर तो अब मुझे जाना ही पड़ेगा। वह कैसा भी हो माता-पिताजी से मै कुछ कह ही नही पाऊगी। इससे तो यही अच्छा था पिताजी अपनी समझ मुताबिक ही बात पक्की कर लेते। मेरे देखने से क्या होगा। मैं तो कुछ भी बोल नही पाऊंगी। मुझे समय से घर जाना ही होगा।

समय कब रुकता है—हर पल सरकता ही रहता है।

शनिवार का दिन आया—नीलम रेल पकड़ कर अपने घर के लिए रवाना हुई। पूरे सफर मे नीलम सोच के समुद्र मे डूबी रही। अब वह हमें देखने आ रहे है। माता-पिता के सामने मैं कैसे खुलकर बात कर सकती हू। कैसे एक-दूसरे के अतर्मन के भाव जाने जा सकते है। अपने ही मन के भीतर चल रहे विचारो को हम स्वय भी नहीं पढ़ पाते है। जब अपने ही विचारो का हमें ध्यान नही है—मन के भीतर हर समय कैसे-कैसे विचार चलते रहते है तो दूसरे के मन मे चल रहे विचार हम कैसे पढ़ सकते हैं। मालूम नही है उनके साथ मुझे देखने कौन-कौन आएगा। मेरा वह चेहरा ही देख सकते हैं। मै भी उनका चेहरा ही देख पाऊगी। जब कि व्यक्ति अपने विचारो से किस सीमा तक पहचाना जा सकता है।

"जोडिया जग थोडिया नई बधेरे" चलो देखने से फेस रीडिग से भी बहुत

कुछ समझा जा सकता है। हो सकता है मुझे देखने आने वाले मेरा सामान्य ज्ञान जानने के लिए मुझ से कुछ पूछने लगे।

क्या बता रही थी बोनी..।

"नीलम बहन क्या बताऊ। जब वह मुझे देखने आए उन्होने तो मेरे से कोई बात तक न की। वह भी मेरी तरह ही शर्मा रहे थे। हा चालाक मेरी सास मुझे इधर-उधर घूमने के लिए कहने लगी—बेटा चलो थोड़ा आप से अलग कोई बात करनी है। बडबोली मेरी बिचौलन कहने लगी—जी अच्छी भांति चला-फिरा कर देख लो, बुलाकर देखा लो। हमारी बोनी न तो लगडी है और न ही गूंगी है।"

बात कहनी आसान होती है। प्रैक्टीकली जब काम करना पडता है तो आटे दाल का भाव मालूम पड जाता है।

हां जो विद्यार्थी इन्टरवियू पास कर चुका हो उसकी तुलना उस विद्यार्थी से कभी नही हो सकती जो अभी इन्टरवियू देने जा रहा हो। हां उसके इन्टरवियू के सवालो से यह अनुमान अवश्य लग जाता है कि कैसे सवाल पूछे जाने की संभावना हो सकती है। मेरा इन्टरवियू लेने मालूम नही कौन-औन आएगा। लगता है कि वह मेरी बुद्धि अवश्य चैक करेगे। हां मुझे देखने वाले अगर आप ही विवेकहीन हुए तो फिर ' मैं कैसे समझ पाऊंगी। नीलम अपने कल्पना के घोडे दौड़ाती रही। शायद होने वाली सास या ननद मेरे उनसे ज्यादा मेरा इन्टरवियू वही लेगी। अगर होने वाली ननद शादी-शुदा हुई तो फिर तो उसे अपनी जिदगी का तजुर्बा होगा। घुमा-फिरा कर मालूम नहीं क्या-क्या पूछने लगे। अगर वह अभी हमारी तरह ही कवारी हुई तो फिर उसकी ऐसी की तैसी। एक भी बात मुंह से उसे निकालने नहीं दूंगी। वह मेरे से बातो मे जीतने से रही।

छोडो अगर वह ही मुझे पसद न हुए तो फिर मै जानबूझ कर लगड़ाने लगूगी। बला टल जाएगी।

मा समझेगी बेटी नीलम शर्मा रही है। मै फिर तुतलाने भी लगूंगी। ऐसा नाटक कर दूगी कि दुम दबाकर अपने आप भाग जाएगे।

सबसे पहले अपने पिताजी के विचार जानने होगे। मा के मन को समझाने के लिए शायद वह ड्रामा ही कर रहे हों। पहले भी पिताजी मा की बातों को घुमा-फिरा कर ही टाल जाते हैं। शायद पिताजी का यह भी ड्रामा ही हो। नीलम अपनी ही कल्पनाओं मे मगन थी। उसे मालूम तब पड़ा जब आगरा स्टेशन पर रेल पहुच गई थी। नीलम के मन के भीतर चल रहे विचार बन्द हुए। नीलम अपना सामान उठा रेल से नीचे उतर आई।

नीलम की निगाह अपने पिता धनपत राय पर पडी। वह बहुत उत्सुकता से रेल के हर डिब्बे को देख रहे थे

नीलम अपने पिताजी के पास पहुची, गले लग रोने लगी।

"बेटी यह क्या कर रही हो ? रोने का क्या कारण है ?"

"पिताजी मै आपका पत्र पाकर आ गई हू। मगर पिताजी मेरे लिए आप जो भी फैसला करेगे अच्छा ही होगा। मैं आपका हर फैसला मानूगी। पिताजी मेरे स्लेवस की एक किताब मे एक कहानी है कि अगर नौजवान व्यक्ति नौजवान व्यक्ति की अगवाई कर रहा हो तो यह ऐसा होता है जैसे अधा व्यक्ति अधे व्यक्ति की ही अगवाई कर रहा हो। दोनों अज्ञानतावश खाई मे ही गिरेगे। यह कहानी मुझे बहुत अच्छी लगती है। पिताजी अब मैं उन्हें देखू और वह मुझे देख लेगे इससे मै क्या अनुमान लगा सकूगी। जैसे आपकी मर्जी हो आप अपने विवेक से फैसला कर लेना। आपको जिंदगी का तजुर्बा है। आपको जिदगी का अनुभव है। आपका फैसला ही अच्छा होगा।"

"नीलम बेटी तुम तो बहुत समझदार हो गई हो फिर भी देख-दिखाई करने मे कोई भी नुकसान नहीं है" बातें करते हुए पिता और बेटी घर पहुचे।

नीलम ने घर पहुंच अपनी माता और एक ओर उपस्थित अजनबी दूसरी औरत को नमस्ते कहा। फिर अपनी मा के गले लग गई। कुछ समय के लिए दोनो मां-बेटी खामोश हो गई। फिर गीता बेटी नीलम से कहने लगी, "बेटी नीलम यह रतनो दूर के रिश्ते मे मेरी बहन लगती है।" फिर वह वकील साहब से कहने लगी, "जी कल लडके वाले आएंगे इसलिए रतनो आज ही हमारे पास आ गई है। हमे आने वाले मेहमानो की कैसे और क्या-क्या सेवा करनी चाहिए—रतनो सब कुछ सही-सही बता देगी। रतनो ने और भी कई रिश्ते करवाए है। रतनो से पूछकर कल की तैयारी पूरी कर लो।"

"तैयारी-चैयारी क्या करनी है। चाय-पानी पीते हुए बातें शुरू कर देगे। लडका-लडकी एक-दूसरे को देख लेगे। लडके वाले अपनी पसंद, हा ना का जवाब रतनो को बता देगे। हम बेटी नीलम की सलाह पूछ लेगे। अगर सभी ने रिश्ता ठीक समझा तो मै ग्यारह रुपए लड़के को शगुन के तौर पर दे दूगा। इसमें सोचने की क्या बात है।"

रतनो जो बिचौलगी करने मे चतुर थी कहने लगी—"आप तो वकील है—इतने इज्जतदार है। लडका पसद आने पर क्या सिर्फ ग्यारह रुपए ही देगे।"

वकील साहब रतनो की नब्ज पहचान गए। इसलिए बिलकुल अनजान बनकर कहने लगे—"आपने तो पहले भी बहुत ऐसे रिश्ते करवाए है आप ही बताओ हमे क्या करना चाहिए। हमारा तो यह पहला काम है।"

"देखो जी वकील साहब, कभी गर्म पानी से घर तो जल नही जाते। आप को लड़का पसद हो या ना हो चाय-पानी की सेवा तो आप करेंगे ही। पहले चाय-पानी

का प्रोग्राम तो आपका ठीक है। लड़का देखकर आप अपनी तसल्ली कर लेना। पूरा परिवार अगर लडके को पसद करे, लडके को अच्छा समझे तो आप अपना फैसला मुझे बता देना। मै लडके वालो के विचार भी तभी पूछ लूगी। अगर उनकी और आपकी एक सलाह बने तो फिर आप को थोड़ा काम करना होगा। आप लडके को 500 रुपए दे देना—लो बेटा अभी तो हम यह थोडी-सी भेंट दे रहे हैं। मोटर-साइकिल, फ्रिज, सोफ सैट वगैरा शादी पर सब मिलेगा—बाकी छोटी-मोटी चीजो को तो आप जानते ही हैं। उन चीजों की कोई गिनती नही होती है।''

''बस-बस रतनो, अपनी बक-बक अब बंद करो। इतना बडा चिट्ठा तैयार करने की क्यों सोच रही हो। अगर लडका अपनी रिश्तेदारी मे से है तो क्या हमें लुटवाना चाहती हो।''

''अरे गीता तुमने यह क्या झझट खडा कर दिया है। जब तुम्हे पहले दिन से मालूम है कि मै दहेज के विरुद्ध हूं तो तुमने रतनो से पहले ही क्यो साफ बात नही की। तुम्हे यह तो स्पष्ट करना ही चाहिए था कि हम दहेज के विरुद्ध है। इसलिए हम कोई दहेज नहीं दे सकेगे। लोग रस्मो-रिवाज को बिना मतलब के बढाए जा रहे है। हम तो रिवाजो को तोडेंगे।''

''वकील साहब शायद आप मेरी बात को अच्छी भाति समझ नहीं पाए हैं। मैने दहेज-वहेज की कोई बात नही की है। बिचारे लड़के वालो ने कोई भी डिमाड आप के सामने रखी ही नही है। मैने यह चीजें आपको इसलिए कहने को बोला है क्योकि यह चीजें तो ब्याह-शादियों में शगुन के तौर पर दी ही जाती है। लडकिया ऐसे ही घर से खाली हाथ तो भेजी नहीं जातीं। यह आम जरूरत की वस्तुएं अपनी ही बेटी को शगुन समझ कर दी जाती है। दहेज-वहेज की बुरी बात तब समझी जाती है जब कुछ बुरे लोभी लोग मुंह फाड मागने लग जाते हैं—हमें कार चाहिए, हमे इतना नकद पैसा चाहिए। मैंने आप से यह तो नही बोला कि लड़के वाले यह माग कर रहे हैं। शगुन तो अमीर-गरीब सभी अपने-अपने हिसाब अनुसार करते ही है। आप भी तो इस समाज का एक अंग हो। आप अकेले समाज के रिवाज तो तोड नहीं सकते।''

''रतनो फजूल की बाते छोड़ो। अगर मुझे लडका पसंद हुआ तो सब से पहले मै यह बात स्पष्ट करूगा कि मैं दहेज नही दे सकता हूं।''

''जी जो कुछ रतनो कह रही है वह किसी सीमा तक ठीक है। ऐसे हम खाली हाथ अपनी बेटी को भेज भी कैसे सकते है। यह थोडा-सा शगुन तो करना ही पडेगा। हमे भी तो इसी समाज में रहना है।''

''गीता तुम कुछ नहीं समझ रही। पहले ही बात स्पष्ट कर लेना अच्छा होता है। मामूली शगुन तो हम करेगे ही मगर मुझे लगता है कि रतनो ने लडके वालो

को कुछ ज्यादा ही बडे सपने दिखाए हुए है। कोरी स्पष्ट बात कर लेना सभी के हित मे होगा। चलो कल ही बात स्पष्ट हो जाएगी। मैं अभी चाय-पानी के सामान का प्रबध करने बाजार जा रहा हू।"

बताए समय मुताबिक लडका दिनेश, उसकी माता और बहन नीलम को देखने घर पर आ पहुचे।

रतनो ने अपने गप्प शुरू कर दिए--जी वकील साहब बहुत अच्छे स्वभाव के व्यक्ति हैं। मै इन्हे 10 वर्षो से जानती हू। बहुत शरीफ खानदान के है।

नीलम भी चाय लेकर आ गई। सभी चाय पीने लगे। वकील साहब ने ही बात शुरू की, "जी हमने बेटे दिनेश को अच्छी भाति देख लिया है। आप भी नीलम बेटी से अलग से बातचीत कर सकते हैं। हा एक बात मै अभी स्पष्ट करना चाहता हू कि मै दहेज नहीं दे पाऊंगा। अगर आपको दहेज की जरूरत हो तो फिर बात आगे बढ़ाने का कोई फायदा नहीं है।"

रतनो फिर कहने लगी—"वकील साहब दहेज की बात आपसे कौन कह रहा है। अपनी बेटी को जो मर्जी देते रहना। आपसे कोई कुछ मुंह फाडकर नही मागेगा।"

दिनेश की मां कहने लगी, "रतनो आपकी और वकील साहब की बातो मे मुझे बहुत अंतर नजर आ रहा है। जब वकील साहब सीधी स्पष्ट बात करना चाहते है तो फिर आप पहले से ही क्यों बोलने लग गई है। हमें तो आप कह रही थी कि वकील साहब कह रहे है कि लड़का पढ़ा-लिखा होना चाहिए। पढ-लिख कर अगर कोई सरकारी नौकरी न भी मिले तो अकलमद व्यक्ति अपनी सूझ-बूझ से बहुत कुछ कही से भी कमा सकता है। मै 50 हजार रुपए खर्च करके लडके को कोई फैक्ट्री खुलवा दूगा। मगर वकील साहब की बाते ही कुछ और नजर आती है।"

धनपत राय कहने लगे—"रतनो झूठ बोलने का नतीजा हमेशा बुरा ही होता है।"

"जी मुझे मालूम नही है कि मैं सच बोल रही हू या झूठ मगर हमारी एक बात नोट कर लेना, जैसे आप स्पष्टवादी बन रहे हो--ऐसे कोरे-करारे बनकर आप अपनी बेटी की शादी जल्दी नहीं कर पाएगे। आज के जमाने में कोई भी व्यक्ति अपनी बेटी को ऐसे ही खाली हाथ नहीं भेज सकता। वकील साहब बुजुर्ग ठीक कह गए है कि हाथी के दांत खाने के और दिखाने के और ही होते हैं।

लगता है कि आप किसी बड़े नेता का दहेज विरोधी भाषण अभी-अभी सुनकर आए हो। नेता लोग कहते कुछ हैं करते कुछ और ही है। इन नेताओं ने जनता को हमेशा धोखे मे रखा है। ऐसे नेता लोगो को भाषण देंगे कि अपने बच्चो को हिन्दी पढ़ाओ। इनके अपने बच्चे इगलिश मीडियम के स्कूलों मे पढ़ रहे होते है। लोगों को भाषण देंगे कि दहेज एक सामाजिक बुराई है दहेज बन्द होना चाहिए

जब इनके अपने बच्चो की शादिया होती है तो यह लोगो को उल्लू बनाते है कि भाई हमने दहेज न दिया है न लिया है।

सच तो यह होता है कि दहेज के भरे ट्रक रातोरात लडके वालो के घर पहुचा दिये जाते है। यह सच है कि सरकार ने भी दहेज विरोधी कानून बनाया हुआ है। मगर यह कानून सच होते हुए भी व्यवहारिक झूठ ही है। बस कागजो में कानून बना हुआ है। प्राय इस कानून के प्रति लोगों के दिलो मे कोई रुचि नही है। मैने सैकडो शादिया होते हुए देखी है। लोग सरेआम दहेज देते भी है और लेते भी है। हा कुछ नेता लोग हाथी के दातो वाली बात को पूरा करते है। मै देख लूंगी जब अपनी बेटी को बिना कुछ शगुन दिए ससुराल भेजोगे। हमे घर बुलाकर आपने हम सबकी बेइज्जती की है, आपने यह काम ठीक नहीं किया है। चलो आपकी यह इच्छा थी। अपनी-अपनी समझ की बात है। और सबसे बडी तो सयोगो की बात है।"

"रतनो ठीक है हमें इस बात की खुशी है कि आज ही बात स्पष्ट हो गई। आगे बात बढ़ जाने के पश्चात बहुत कठिनाइयों का सामना करना पड़ सकता था। आपको घर बुलाने का कष्ट दिया है। इसलिए आपसे क्षमा का याचक हू। सॉरी ! बात आगे नही बढेगी।"

देखने आई दिनेश की मा कुछ कहना भी चाहती थी मगर वकील साहब के तेवर देख वह खोटे सिक्के की भाति उठकर चल पडी।

सबके चले जाने के पश्चात धनपत राय गीता से कहने लगे, "गीता सुन लिया है—रतनो कैसे हमें और लडके वालों को बेवकूफ बना रही थी। इन बिचौलियो को तो अपना खाना-पीना और बिचौलगी की फीस मतलब बिचौलगी का सूट ही नजर आता है। शादी के पश्चात इसलिए ही तो लोग बिचौलियो को बुरा कहने लग जाते है। कैसे-कैसे लालची कुत्ते भरे पडे है इस दुनिया मे।"

"जी कह तो आप भी ठीक ही रहे हैं—मगर इन बिचौलियो के बगैर बात भी तो नही बनती है। आप सीधे ही किसके पास जा सकते हो—कुछ बाते रतनो की भी ठीक थी। एक व्यक्ति दुनिया के रिवाज अकेला कैसे बदल सकता है। यह काम तो मुझे नामुमकिन-सा ही लगता है।"

"गीता ऐसी बात नही है। समय-समय की बात होती है। अब जैसे-जैसे शिक्षा फैलेगी लोग इस बीमारी को अपने आप छोडने लगेंगे। अगर आज हम बिना दहेज के बेटी की शादी करेंगे, कल को कुछ और लोग भी हमें देखकर ऐसे ही करने लगेगे। किसी एक को तो पहल करनी ही पडेगी। गीता असल मे दहेज की प्रथा को बढावा देने मे औरतो का ही ज्यादा हाथ है। अगर अपनी बेटी को दहेज न देने का इरादा हो तो अपने घर मे दुल्हन बनकर आने वाली लड़की से भी यह ही

उम्मीद करो कि हमे दहेज नही चाहिए। न दहेज दो न दहेज लो। अपने आप यह सामाजिक बुराई समाज में से समाप्त हो जाएगी। कोई भी औरत किसी का भी दहेज देखने की बात ही न करे। दहेज देखने-दिखाने से दहेज की चर्चा शुरू हो ही जाती है। अगर किसी का दहेज देखा ही न जाए तो यह रिवाज भी अपने-आप बन्द हो जाएगा। जब दहेज लेना चाहते हो तो फिर देना भी पडेगा।

अब आज का उदाहरण आप के सामने ही है। देखो दिनेश की मा क्या इच्छा पाले हुए थी कि दिनेश का होने वाला ससुर दिनेश को 50 हजार में कोई फैक्ट्री लगवा देगा। क्या अपनी बेटी को वह हमेशा अपने ही पास रख लेगी। उसकी शादी नही करेगी। एक हाथ दहेज देते रहो दूसरे हाथ लेते रहो। फिर बेचारी लडकियो को अपने ऊपर बोझ समझते रहो। क्या दुनिया है मुझे तो कुछ भी समझ नही आता है।''

''अच्छा बेटी नीलम यह आज की बात किसी को भी मत बताना। चलो अपनी पढाई पूरी करो। मै कल सवेरे ही तुझे स्टेशन छोड आऊंगा। मै अपनी तरफ से तेरी पढ़ाई को खराब नही होने दूंगा। अगर आज बात पक्की हो जाती तो शायद तेरी पढ़ाई भी बन्द हो जाती। आज की घटना भूल मन लगाकर अपनी पढ़ाई शुरू कर देना। मै ऐसे लडके से तुम्हारी शादी कैसे कर सकता था जो अपनी मा और बहन से डरकर अपने मुंह से एक भी शब्द न बोल सकता हो। ठीक है लड़के की शक्ल-सूरत काफी अच्छी थी। मगर उसमे अपना दिमाग नही है। पढ-लिखकर भी दहेज की प्रथा के विरुद्ध नही है। उसे अपनी बहन के लिए दहेज की चिंता नही थी। अगर वह समझदार होता तो जरूर कहता कि हमे दहेज नही चाहिए। जो हुआ अच्छा ही हुआ है। ऐसे लडकों से भी क्या उम्मीद की जा सकती है।''

दूसरे दिन सवेरे धनपत राय ने नीलम को टिकट कटवा कर रेल मे बैठा दिया।

''सुनो बेटी नीलम मन लगाकर पढ़ते रहना।''

रेल के जाने के पश्चात भी धनपत राय बहुत देर वेटिंग रूम में ही बैठे रहे। गीता और नीलम के सामने तो वह यह कह रहे थे कि आज की घटना को भूल जाओ मगर अब सोचते-सोचते उनका अपना मन चिंतित हो गया था। उन्हे सेठ दौलत राम के कहे शब्द याद आने लगे—वकील साहब मै आप की माली हालत को जानता हू। सब कुछ सोच-विचार कर वह अपने मन से बातें करने लगे। मान लो अगर सचमुच मुझे दहेज देना पड़ा तो फिर मै तो पूरी जिंदगी नही उठ पाऊगा। एक बेटी नीलम की ही फिक्र नही है। छोटी दोनो भी जवान हो रही हैं।

ऐसा नही होगा। मै दहेज नहीं दे सकूगा। हा लडका ढूंढने का काम अब ढीला नहीं छोड़ पाऊगा। मालूम नहीं कब कोई ऐसा लड़का मिलेगा जो दहेज की

प्रथा के विरुद्ध हो। सोच के समुद्र मे डूबे हुए उन्हे मालूम ही नही पडा कब उन्हे नीद आ गई। वह नींद मे अजीब से सपने देखने लगे।

अचानक अजना की नजर उन पर पडी। अजना देख कर हैरान होने लगी कि वकील अंकल यहा कैसे सो रहे हैं। फिर सोचने लगी कि कही मुझे गलती तो नही हो रही है।

अजना धनपत राय को अच्छी भाति पहचान कर सोचने लगी कि अब मै इन्हे कैसे जगाऊं। डरते-डरते नमस्ते कहते हुए अजना ने वकील साहब को नीद से जगाया। नींद खुलते ही वकील साहब हैरान होने लगे, "है ! मै यहां कैसे सो गया था। सेठ दौलत राम की लडकी अजना । बेटी अंजना आप यहा ?"

"अकल जी मै अभी रेल से उतरी हू। आप को यहा सोए देख कर—पहले तो मन मे सदेह उठा कि मुझे ही गलती लग रही है, फिर अच्छी तरह पहचान कर आपको उठाया है। अकल जी आप यहा ही क्यों सो गए थे ? क्या किसी को लेने आए हुए हो ?" फिर अंजना खामोश होकर वकील साहब की ओर देखने लगी।

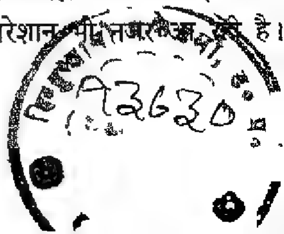
"बेटी लेने तो किसी को नही आया, नीलम को रेल पर चढाने आया था। वह रेल पकड कब की जा चुकी है। मगर मुझे मालूम भी नहीं हुआ यहा कब और कैसे नीद आ गई। बेटी, नीलम अभी पढ़ रही है। हमे मिलने आई हुई थी—आज ही गई है। उसकी छुट्टियां खत्म हो गई है।"

"अकल जी आप बहुत अच्छा काम कर रहे है—पढने से ही जिदगी मे सुख मिलने है। पिताजी ने मुझे पढाया नही था—अब मै बहुत पछता रही हू कि मै क्यो आगे नही पढ़ सकी। मैं और नीलम पाचवीं क्लास तक इकट्ठी पढा करती थीं। मुझे पिताजी ने तब पढ़ने से हटा लिया था। तब पिताजी के कहने पर पढना छोड दिया था। अब पूरी उमर पछताना पड़ेगा। जिंदगी की खुशियों के दिन शायद समाप्त ही हो गए है।" अजना अपने दिल के दर्द मे यू ही बोलती जा रही थी।

"बेटी तुझे तो बहुत अच्छा घर मिला हुआ है। तुम्हें तो खुश होना चाहिए।"

"अकल जी आप तो वकील है सब कुछ जानते हो—मुझे तो अब मालूम हुआ है कि दूर के ढोल सुहावने हुआ करते हैं। अब आपको क्या बताऊं आप तो मेरे पिता समान ही हैं। मेरी खुशियो के दिन बहुत कम थे। अब तो मुझे लगने लगा है कि इस दुनिया में मेरा जीवित रहना ही मुश्किल है।" कहते-कहते अंजना की आखो मे आसू आ गए।

धनपत राय अजना की ओर ध्यान से देखते हुए पूछने लगे, "बेटी ऐसी क्या बात हो गई है ? मै तो तुझे अकेली देख कर ही सोच रहा था कि कोई कारण है—जो बेटी को अकेली ही आना पड़ा है। ऊपर से परेशान भी नजर आ रही है। बेटी मेरे से कुछ छुपाना मत।"



"अकल जी आप तो जानते ही है कि मेरी शादी पर पिताजी ने कितना खर्च किया था। कितना सारा दहेज दिया था। तब तो मै भी खुश थी कि मुझे बहुत अच्छा घर मिला है। मगर तब सच लगने वाला अब सब झूठ लगने लगा है। मेरे ससुराल वाले मुझे नही पिताजी के दिये दहेज को ही प्यार करते थे। अब समय व्यतीत होने पर मालूम पड़ने लगा है। अब हर बात पर मुझे सताया जाने लगा है। एक दिन मेरे पति खूब शराब पीकर घर आए। मुझे और पिताजी को गालिया बकने लगे। रात को तो मै समझी थी कि चलो शराब के नशे मे है कोई बात नही है। चुप रहना ही अच्छा है। मेरे न बोलने का मतलब उन्होने गलत समझा। दिल मे मालूम नहीं क्या सोच रहे थे। मुझे बहुत गलत बातें बोलते रहे। मैं फिर भी चुप ही रही। दूसरे दिन सुबह ही अपनी मां से कहने लगे—अपने बाप की इकलौती बेटी मेरी क्या सेवा कर सकती है। मेरे सिर में इतना तेज दर्द हो रहा था कि मैं पूरी रात सो नही सका। इसे क्या चिंता है मै मरू या जिऊं। इसे तो अपने पिता के पैसे का घमड है। इसे मेरी क्या परवाह है।

मैने फिर कहा जी आप कैसी बातें कर रहे हो—रात को आपने इतनी शराब पी हुई थी कि आपको अपने आप का भी कुछ अता-पता मालूम नहीं था। आप को तो कुछ भी मालूम नही था कि आप क्या बोल रहे हैं—क्या बोलना चाहिए। मेरी बात काट कर कहने लगे—चुप, शर्म नही आती बोलते हुए। मुह फाड रही हे। बहुत कुछ बकते रहे। फिर क्या था मैने भी खरी-खरी सुनानी शुरू कर दी। मेरे पिताजी ने इतना दहेज दिया है—आप का अभी भी पेट नही भरा है। हमारी काफी नोक-झोक हुई। फिर हम चुपचाप अपने-अपने कमरो मे चले गए। काफी दिन आराम से निकल गए। मै भी यह ही सोचने लगी कि चलो अब यह किस्सा यहीं खत्म हुआ।

फिर एक दिन कहने लगे कि हमे कुछ पैसों की जरूरत है। अपने पिता से दस हजार रुपए लेकर आओ। मैंने कहा कि अगर आपको जरूरत है तो फिर जाकर माग लाओ। इस पर वह लाल-पीले होने लगे। कहने लगे कि अगर इज्जत से रहना चाहती हो तो कल ही अपने पिता से पैसे लाकर दो। अगर वह पैसे देने से इन्कार करे तो यहां आने की कोई जरूरत नही है। जब मै चुप करके बैठ गई तो मुझे मारने के लिए तैयार हो गए।

अब मे उन्हें बोलकर आ गई हूं कि ऐसे मुझे डरा-धमका कर मेरे से पैसे नही मंगवा सकते हो। मै आप को कभी भी शक्ल तक नही दिखाऊगी।

अब मन मे डर लगने लगा है कि मुझे अकेली घर आई देख पिताजी घबरा जाएगे क्योंकि मै अकेली कभी भी घर से बाहर नही निकली हू। मन मे सोच भी रही थी यह मुझे अकेली ही क्यो भेजना चाहते है। कहीं ऐसा न हो कि वह मुझ

प भी पहले पिताजी के पास पहुचकर पिताजी से मेरी शिकायत करने लगे। देखो नी अजना अपनी मर्जी कर रही है। फिर जब मै अकेली घर पहुचूगी तो पिताजी तो मेरी एक भी बात नहीं सुनेगे। अकल जी मुझे अब बहुत डर लग रहा है। अच्छा ही हुआ है यहा आप मिल गए है।"

"बेटी तुम्हे ऐसा कुछ नही सोचना चाहिए। तुम्हारे पिताजी तुम्हारी बात क्यो नही सुनेगे ? हर पिता अपने बच्चो को सुखी देखना चाहता है।"

"अकल जी मेरी जिदगी मे सब सच झूठ होता जा रहा है। इसलिए मन मे डर लग रहा है। मै अपने मुह से हमेशा उनकी तारीफ ही किया करती थी कि आपके दामाद देवता है। अब देवता ने राक्षस का रूप धारण कर लिया है। अगर पिताजी भी उनकी भाति ही बदल गए तो मेरा इस ससार में कोई सहारा नही रहेगा। पहले मे अपने मुंह से उनकी तारीफ किया करती थी अब इसी मुह से बुराई करने जा रही हू। कही ऐसा न हो पिताजी सच को झूठ समझे। मुझे अब अपनी किस्मत से डर लगने लगा है।"

"बेटी डरने की कोई बात नहीं है। बेटी अपनी ससुराल से मायके आ जाए तो क्या बात है। दो ही तो जगह है लडकी के लिए मायका और ससुराल। घर मे दो बर्तन हो तो खड़क ही जाया करते हैं। जिदगी में बडी-बडी बातें हो जाती है। और अब तो मैं भी तुम्हारे साथ हू। मै तुम्हारे पिताजी को समझा दूंगा। पहली बात तो यह है कि बेटी हर पिता अपनी बेटी को सुखी ही देखना चाहता है। तुम्हारे पिताजी भी तुम्हारे दुश्मन नहीं बन सकते। तुम्हारी शादी पर उन्होंने कितना खर्च किया था। तुम्हे साथ लेकर वह बेटे अमनदीप को भी समझा सकते हैं। हां अगर उन्हे किसी कारण से पैसों की जरूरत हो तो तुम्हारे पिता उन्हे पैसे भी दे सकते है। बेटी तुम्हारी तो पूरी जिदगी का सवाल है। कोई छोड़ने वाला भी तो रिश्ता नही है।"

अजना के मन को कुछ धीरज मिला। वह अपने घर पहुंची। वह घर का दरवाजा खटखटाने जा ही रही थी—उसे अपने घर में अपने पिता और भैया के झगडने की आवाजे सुनाई दीं। अजना काप-सी गई। फिर उसने हौसला कर दरवाजा खटखटाया। अंदर आवाजें बन्द हुई। कुछ सैकिंड घर में खामोशी हुई फिर दरवाजा उसके भाई भोले ने ही आकर खोला। बहन अजना को देख नमस्ते बोला। अजना नमस्ते का जवाब देकर भोले के साथ ही घर के अदर पहुची। माता-पिता को गले लग मिली।

दौलत राम बडे गुस्से से भोले को कहने लगा—"अंदर आकर बैठ गया है। अमनदीप को भी अदर बुलाकर ला। वो क्यो पीछे रह गया है।"

"पिताजी मै अकेली ही आई हूं वो नही आए हैं।"

चौककर वह अजना से पूछने लगे, "फिर तुम किसके साथ आई हो।"

"जी कुछ—बस यहां किसी काम से ही आई हू।"

"यहा क्या तुम्हारा बाप मर गया है जो अकेली को ही भागना पड गया है। या तेरी मां मर गई है।"

"भगवान कभी भी ऐसा न करे। पिताजी मुझे उन्होने ही भेजा है—तभी आई हू—वर्ना मैं अकेली यहा कभी न आती।"

"ऐसा क्या काम पड गया है। हमे तो लगता है अकेली ऐसे वैसे नही आई, कोई न कोई कारण जरूर है। सतान का सुख भी किसी एक खुशकिस्मत की किस्मत में लिखा होता है। भोले ने नाक मे दम पहले ही कर रखा है और अब अजना अकेली घर पहुच गई है। मालूम नही क्या गुल खिला कर आई होगी।"

"जी आप तो ऐसे ही बच्चो को डांटने लग जाते हो—कम से कम बेटी से पूछ तो लो। कोई कारण हो भी सकता है। बेटी अपना दुख हमें नही बताएगी तो और किसे बताएगी। हम बेटी की बात नहीं सुनेगे तो और कौन सुनेगा। प्यार से भी पूछ सकते हो कि बेटी क्यों अकेली ही आना पड़ा।" कमला अजना की ओर देखने लगी।

"कमला मेरा तो तुम तीनों ने मिलकर नाक मे दम कर रखा है। तुमने शुरू से ही अजना को सिर पर चढा रखा है। अब वह भी हुकूमत चलाना चाहती होगी। घर का काम नही करती होगी। मै अब इसकी कोई बात मानने को तैयार नही हू। अमनदीप साथ होता तो हर बात सुन लेता। मैंने उसे पसंद किया था—मुझे उसमे कोई बुराई नजर नही आ रही है। अब अंजना ने ही उन्हे परेशान किया होगा। ऐसे तो वह हमारे पास आने से कैसे रुक सकता है।"

"पिताजी मै भी तो आप की बेटी हूं। अगर कोई कारण हुआ है तभी यहा आई हूं। अब उन्होंने आप से दस हजार रुपए मगवाए है।"

"फिर तब कौन-सा पहाड़ टूट गया है। अमनदीप को ही भेज देती मै उसे पैसे दे देता। कोई जरूरत पड गई होगी। तुम अपनी अकड दिखाना चाहती होगी। घर-गृहस्थी मे पैसो की जरूरत पड़ भी सकती है। अपने दामाद की मदद करने से हमें क्या घाटा पड जाएगा ? जब उन के पास पैसे आ जाएंगे वह हमें वापिस कर जाएगे। नहीं भी वापस करेगा तो भी हमे क्या फर्क पड जाएगा।

मै कल ही तुझे साथ लेकर अमनदीप को पैसे दे दूंगा। मैंने उसे अपना दामाद बनाया है। मुझे उसमें कोई भी बुराई नजर नही आई है।"

"पिताजी अभी कल पैसे मत देना। अगर आपने कल ही उन्हे पैसे दे दिये

तो वह मुझे बहुत परेशान करने लग जाएगे। उन्होने कहा था कि..''

''बस-बस ज्यादा बक-बक न कर। जब तू यहा मुझे पैसे देने से मना कर रही है तो मालूम नहीं वहा उन्हे क्या-क्या बोला होगा। मैं तुम्हारे को साथ लेकर कल तुम्हारी ससुराल जाऊगा। अमनदीप को भी समझा कर आऊगा कि बेटा अगर ऐसे कोई काम पडे सीधे मेरे पास आ जाना। अंजना को ऐसे अकेली कभी मत भेजना। तू भी कान खोलकर सुन ले। आगे के लिए मैं तुझे अकेली को घर में घुसने नहीं दूगा। अगर तुझे कोई कठिनाई हो तो पत्र डाल देना या किसी के हाथ सदेश भेज देना मै तुम्हारी हर मुसीबत दूर कर दूगा। मै तुझे इधर-उधर अकेली घूमते हुए देखना सहन नही कर पाऊगा। यह मेरी तुझे पहली और आखिरी वार्निंग है। अपने इस भैया को देख रही हो—इसने मेरे सभी सपने चकनाचूर कर दिये है। तीन वर्ष से कॉलिज मे पढ रहा था एक भी कक्षा पास नहीं कर सका है। मेरे पैसे को पानी की भाति बर्बाद कर दिया है। मै समझ रहा था कि अच्छा है भोला पढ़ रहा है। पैसा ही बर्बाद होता फिर भी कोई बात न थी। इसने कॉलिज मे गलत लडकों की सगत में पडकर अपनी आदते भी खराब कर ली हैं। इसे पूछ ले कौन-सा दुनिया का नशा बाकी है जो इस ने न खाया हो। दुनिया भर के नशे इसमें अभी से लग गए हैं। मुझे तो कुछ मालूम ही नही पडता था कि यह क्या गुल खिला रहा है—लम्बी उमर हो बेचारे धनपत राय की जिसने हमें रास्ता बताया। मुझे वास्तविकता तो मालूम पड़ी। मैं हैरान था कि कॉलिज की पढाई का इतना खर्चा लोग कैसे सहन कर पाते है। अचानक एक दिन मैने वकील साहब से वैसे ही पूछ लिया कि आपकी बेटी नीलम का पढ़ाई का क्या खर्चा आ रहा है। मेरे भोले का पढाई पर बहुत खर्चा हो रहा है। तब उन्होंने बताया कि उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए कुछ खर्चा तो करना ही पड़ता है। परन्तु इतना अधिक नहीं जितना आपकी बातों से मालूम पड रहा है। आप एक बार अवश्य भोले का रिकार्ड कॉलिज मे पूछ आओ। मैने भी उनकी सलाह माननी अच्छी समझी। भोला तो मुझे कॉलिज में मिला ही नहीं। हा कॉलिज के रिकार्ड से हमे इसकी सारी करतूते मालूम पड गई। राज खुलने पर बेशर्म हो गया है। अब मैं इसे घर से एक कदम भी बाहर नही रखने दूंगा। घर मे बैठकर खाता रहे। मुझे कोई फर्क नहीं पडेगा। घर में रहकर कम से कम नशो से तो बचा ही रहेगा। मालूम नहीं यह कौन-कौन से ऐब कर रहा है। मैं इस की शादी मे लाख रुपए दहेज लेने के सपने देख रहा था। मगर अब इसकी शादी भी नहीं होगी। बेटी अंजना अब समझी मेरा मन कितना दुखी है। मेरा दिल दर्द से भरा पडा है। अपने दिल के दर्द को मैं ही जानता हूं। इसलिए तुम्हारी बातो मे आकर मै तुझे यहा अपने पास नहीं रख सकता हूं। तुझे मेरी मदद की जरूरत हो तो वहीं तुम्हारी ससुराल में ही मैं तुम्हारी मदद कर सकता हूं। जो तुम्हारी इज्जत

वहा ससुराल में है वह हमारे पास बैठने मे नहीं हो सकती है। बेटी अपने घर मे सुखी रहो। मै खुद तुम्हे तुम्हारी ससुराल छोड़ आऊगा।''

दूसरे दिन दौलत राम अजना को साथ लेकर उसकी ससुराल पहुचे। दस हजार रुपए अमनदीप को दिये और कहा—''बेटा अगर फिर तुझे जरूरत पड़े सीधे मेरे पास आ जाना। अंजना बेटी को ऐसे अकेली मत भेजना।''

वकील धनपत राय अपने घर पहुचे।

''अरे गीता—गीता कहा हो .''

''जी...''

''अरे बोल क्यो नहीं रही हो ?''

''जी नींद आ रही है...नींद आ गई थी। आप इतने लेट क्यों हो गए हो। मैने दोपहर का खाना भी कब का तैयार किया हुआ है।''

''अरे गीता क्या बताऊ इस ससार मे सभी दुखी है। कोई एक भगवान का प्यारा किस्मत वाला ही सुखी हो सकता है। कुछ दिन पहले सेठ दौलत राम अपने लडके भोले के रोने मेरे पास रो रहा था। कह रहा था कि मुझे अपने लडके की कुछ समझ नहीं आ रही है। पढता भी है या नही, खर्चा बहुत कर रहा है। मैने उन्हे भोले के कॉलिज जाने की सलाह दी थी कि आप कॉलिज से भोले का रिकार्ड मालूम कर आओ। उन्हें भोले का रिकार्ड मालूम पड़ने पर बहुत दुख हुआ क्योकि भोला बुरी संगत मे पड़ चुका था।

आज उनकी बेटी अजना मुझे स्टेशन पर मिल गई थी। मैं तो उसे अकेली देखकर ही समझ गया था कि मामला जरूर गडबड़ है। फिर अजना ने ही डरते-डरते अपनी कहानी मुझे बता दी। दहेज के लोभी उसकी ससुराल वाले अब उसे कह रहे है कि अपने पिताजी से हमें दस हजार रुपए लाकर दो। अभी-अभी वह मेरे साथ ही अपने घर आई है। बेचारा दौलत राम और भी दुखी हो जाएगा।

दुनिया मे सुखी नजर आने वाले लोग भी कितने दुखी होते है। उनके दुख तो उनके नजदीक जाने वाले व्यक्ति ही जान सकते है। कितने दुखी है ससार मे इसलिए ही बुजुर्ग कहते है कि जो घर नही देखा वह ही अच्छा है। वर्ना संसारी जीव सब दुखी ही हैं। ससार के लोग यह ही जानते है कि सेठ दौलत राम बहुत पैसे वाला है—बहुत सुखी है। भगवान ने उस पर बहुत कृपा की हुई है क्योंकि लोगो के पास एक ही कसौटी है जिससे वह व्यक्ति को नापते है। वह कसौटी है पैसा ! जब कि व्यक्ति की पहचान उसके गुणो से ही होनी चाहिए। मै भी लोगो की भाति ही दौलत राम को दौलत के आधार पर ही सुखी मानता था। अब दौलत राम को भोले और अजना के कारण दुखी देखकर मालूम पड़ा है कि सामने दीवार पर लटक

रही तस्वीर जैसी सामने से सुन्दर-नजर आती है वैसी वह दूसरी ओर से नही होती है। दूसरा पासा पलटकर देखने पर उसकी कुरूपता भी नजर आ जाती है। तस्वीर की दूसरी ओर मकड़ियो ने अपने जाले बनाये होते है।"

"ठीक है जी जो घर नहीं देखा है वह ही अच्छा है। अजना छोटी उमर मे बेटी नीलम के साथ ही पढा करती थी जी, फिर तो अंजना ने अपनी कहानी बेटी नीलम को भी बताई होगी। बेटी नीलम क्या सोच रही होगी।"

"गीता, अजना नीलम से मिली नही है। नीलम की रेल पहले चल पडी थी।"

"फिर आप वहा ही क्यो ठहर गए थे ? क्या आपको अजना के आने की पहले ही खबर थी ? आप सीधे घर क्यो नही आए, इतना समय आप वहां क्यों बैठे रहे ?"

"गीता तुम इतने सवाल पूछती जा रही हो मैं सभी सवालो का इकट्ठा जवाब कैसे दू। नीलम के चले जाने के पश्चात भी नीलम की सगाई के विचार मेरे मन के भीतर चल रहे थे। वही बैठकर मै सोचने लगा कि अब दूल्हा कहां-कहा जाकर मिलेगा। नीलम की सगाई अब जल्दी हो ही जाए तो अच्छा है। ऐसा सोचते हुए इस चक्कर में ही मैं वहीं बैठ गया। बैठकर सोच रहा था कि मेरे सपने तो लगता है सब झूठे हो जाएंगे। कैसा जमाना आ गया है—जमाने के साथ चलते हुए हमे भी बेटी नीलम की शादी पर दहेज देना ही पड़ेगा। इन विचारों मे घिरे हुए मुझे वही नीद आ गई। नींद मे सपने चालू हो गए। बस थोडा-सा एक सपना याद आ रहा है बाकी सब सपने भूल गया। सपने मे मुझे नीलम के लिए लडका दूर दिल्ली मे नजर आया है। लडका पढा-लिखा है और दहेज का भी लालची नहीं है। मगर कहां दिल्ली कहा आगरा ? सपना अभी पूरा भी नहीं हुआ था—तभी अंजना ने जगा दिया।"

"जी हो सकता है आपका सपना सच ही हो जाए। अगर आप को मिलने-जानने वाला कोई दिल्ली रहता हो तो अवश्य आपका यह सपना सच हो सकता है।

"ऐसा नहीं हो सकता—गीता ये सपने तो व्यक्ति की अपनी सोच, अपने विचारों से ही उत्पन्न होते हैं। जैसी मन में सोच होती है—वैसे सपने नजर आने लगते है। अगर ऐसे सपने सच होने लगे तो बस फिर तो लोग सपनों का ही अध्ययन करते जाएंगे।"

"जी कभी-कभी सपने बिलकुल सच भी तो हो जाते हैं। मुझे पक्का याद है जब मेरे दादा जी की मृत्यु हुई थी मुझे एक सपना आया था कि हमारे घर में कोई मैम्बर गुम हो गया है। जब दादा जी की मृत्यु का पता चला तब मैं समझी थी कि मेरा सपना तो सच ही हो गया है अब भी हो सकता है कि आप का

सपना सच हो।''

धनपत राय सोचने लगे—दिल्ली में मेरा कौन जानने वाला हो सकता है। मेरी तो इतनी दूर दिल्ली मे कोई रिश्तेदारी भी नही है। वहां मुझे कोई जानने वाला ही नही है। वहा मेरा दोस्त भी कौन हो सकता है। वह कुछ देर यूं ही चुपचाप बैठकर सोचने लगे—उनके मन में वकील हकीकत राय की याद आई। ध्यान से सोचने के पश्चात मन मे पूरा याद आया कि जब वह एक केस सुप्रीम कोर्ट मे भुगतने गए थे उनकी भेट वकील हकीकत राय से हुई थी। फिर जब भी केस के लिए दिल्ली जाते थे हकीकत राय उनका बहुत सम्मान किया करते थे। कहा भी करते थे अगर दिल्ली मे आओ हमें जरूर मिल कर जाना। हा उनका एडरैस भी मेरी डायरी मे नोट है।

''जी तब तो आपको दिल्ली जरूर चक्कर लगाना चाहिए। एक जानकारी याद आ गई है। आगे दिल्ली के वकील की दिल्ली में और जानकारी होगी ही। लगता है उनकी हमदर्दी जरूर काम आएगी। कोई भी काम होना हो उसके बीज पहले ही मौजूद हो जाते हैं। लगता है वकील हकीकत राय एक कडी का काम करते हुए हमे दूल्हे तक पहुचा ही देगे। मेरा मन कहता है कि आप का सपना एक कडी का काम करेगा। दूल्हा हमे दिल्ली ही मिलेगा।''

''ठीक है गीता मै कल ही दिल्ली जाकर वकील हकीकत राय से बात कर आता हूं।''

दूसरे दिन धनपत राय सवेरे ही दिल्ली के लिए रवाना हुए। दिल्ली वह सीधे हकीकत राय के पास पहुंचे। हकीकत राय ने उनका बहुत सम्मान किया। हकीकत राय उनसे पूछने लगे, ''फरमाओ धनपत राय जी अब कैसा केस लेकर आए हो।''

''दोस्त अब तो घरेलू काम के लिए ही आपके पास आया हूं। घरेलू काम मे भी आप की मदद की आवश्यकता है।''

''हुक्म करें वकील साहब मैं आपकी क्या सेवा कर सकता हू। मै हर तरह से आपकी मदद करने के लिए तैयार हूं। व्यक्ति-व्यक्ति के काम आता है—फिर आप तो हमारे दोस्त हो। इतनी दूर से चल कर आए हो।''

''हकीकत राय जी आप तो जानते ही हैं कैसा जमाना आ गया है। पहले बच्चो के रिश्ते-नातो की कोई फिक्र नही होती थी। मगर अब बहुत दौड़-भाग करनी पडती है। लोग-बाग मुह भी तो बहुत खोलने लगे हैं। मै अपनी बेटी नीलम की शादी ऐसे लड़के से करना चाहता हूं जो कि पढ़ा-लिखा समझदार हो और दहेज की माग न करता हो। आपके पास भी कितने केस आए होगे लोग कैसे मुह फाडकर दहेज मांगते हैं। अगर लड़का ही समझदार न हो तो दहेज देकर भी लड़की सुखी

नही रह सकती। इसलिए अगर लडका अच्छा न मिले तो लडकी की जिदगी खराब हो जाती है। मै अच्छे लड़के की खोज मे हू। अगर इस काम मे आप मेरी मदद कर सको तो मै आपका अहसान जिंदगी भर नहीं भूलूगा।"

"धनपत राय जी अहसान की क्या बात है। आपकी बेटी मेरी भी तो बेटी ही है। अब यह सवाल बेटी की जिंदगी से सबंधित है। मै इस बात के लिए जल्दी के पक्ष में नही हू। हा मैंने नोट कर लिया है। जब कभी उचित लड़का मेरी समझ मे आया तो आप को सूचित कर दूगा। आप यकीन रखे हकीकत राय ऐसे कामो मे किसी को भी जल्दबाजी की सलाह नही देता है।"

धनपत राय नाइट सर्विस की बस पकड़ कर वापस आगरे पहुंचे।

"अरे गीता क्या बताऊ तुम तो पहले ही कहा करती हो कि लोग टाल-मटोल कर देते है। हकीकत राय ने भी ऐसे ही टाल दिया है। कहने लगे भाई साहब जब कोई लड़का मिला तो आपको सूचित कर दूंगा।"

"जी आप को एक ही जगह जाकर दूल्हा मिल भी नहीं सकता है। आपको बहुत कोशिश करनी पडेगी। जूते टूट जाते है घूमते-घूमते तब कही बेटी के लिए ठिकाना मिलता है।"

धनपत राय यूं ही मायूस होकर लेट गए।

फिर उन्होंने बहुत से दोस्तों रिश्तेदारों से मुलाकात की। जहां कहीं भी कोई लडका बताता वह वहीं पहुच जाते मगर बात बन नहीं रही थी।

आखिर हर काम का उचित समय लिखा होता है। समय आने पर ही बात बनती है। हकीकत राय ने भी अपने दोस्त धनपत राय से किया वायदा भुलाया नही था। उन्हें एक उचित लड़का मिला तब उन्होंने उसकी जानकारी देने के लिए धनपत राय को एक पत्र लिखा।

पत्र देखकर धनपत राय बहुत खुश हुए। वाह हकीकत राय जी अच्छे मित्र हो—फिर वह पत्र खोलकर पढ़ने लगे।

"प्रिय धनपत राय जी,

मै यहा पर कुशलपूर्वक हू। मैं यकीन रखता हू कि आप भी सब ठीक ही होगे। जब से आप मुझे लडका ढूढने का कार्य सौप कर गए हो मैंने अपना स्वय का काम समझकर लडके की तलाश की है। आप जैसा लडका चाहते हो वैसा ही लडका मुझे मिल गया है। लड़का पढा-लिखा है और दहेज विरोधी भी है।

हा जी एक और बात आपको बता रहा हू कि लडका देहात का है। थोडी-सी जानकारी लडके के बारे मै आपको लिख रहा हूं। लडके के पिता अब इस ससार मे नहीं रहे है। लडका अपने भाई-बहनों में सबसे छोटा है। पढा-लिखा है और अब

एक सरकारी नौकरी कर रहा है। अब आप आकर देख लेना। अगर आपने पहले ही कोई लडका पसद कर लिया है तो भी मुझे खुशी ही होगी। एक पत्र लिखकर मुझे जानकारी अवश्य दे देना। आपके पत्र की प्रतीक्षा करूंगा।

आप का दोस्त हकीकत राय।"

पत्र पढकर धनपत राय को मन मे बहुत शाति और खुशी महसूस हुई। उन्हे ऐसा महसूस होने लगा जैसे बेटी नीलम के लिए वर मिल ही गया है। पत्र पढकर उन्होंने पूरी बात गीता को बताई।

"गीता, नीलम के इम्तिहान खत्म हो जाए फिर हम एक चक्कर दिल्ली का लगा आएगे। अगर हमे लड़का पसद हुआ तो बात पक्की कर लेगे।"

"जी आपको अभी अकेले ही जाकर लडका देखना चाहिए। कहीं ऐसा न हो कि यह लडका भी रुक जाए।"

"गीता हमे इतनी जल्दी की क्या आवश्यकता है। नीलम घर आ जाए तो उसे भी साथ ले चलेगे। हम बेटी नीलम से कह देंगे कि बेटी हम दिल्ली घूमने जा रहे हैं। वहां जाकर देख-दिखाई सब बात एक चक्कर मे ही पूरी हो जाएगी। नीलम को पूरी बात तो दिल्ली जाकर ही बताएगे। मै चाहता हूं कि नीलम भी लडके को देख ले। अगर हम अकेले ही दिल्ली गए और लडके वाले नीलम को देखने के लिए कहे—फिर हमे एक चक्कर और लगाना पडेगा। आज के जमाने मे लड़का-लडकी एक-दूसरे को देख लें—इसमे कोई बुराई नही है।"

"जी जैसे आपकी मर्जी है वैसे कर लेना। बेटी नीलम की सगाई हो जाए मेरे लिए यह ही बहुत खुशी की बात है।"

नीलम के पेपर अच्छे हुए। वह रेल पकडकर अपने घर की ओर चल पडी। जैसे-जैसे रेल चल रही थी—नीलम के मन मे विचारो की लडी चालू हो रही थी। क्या माताजी मेरी सगाई की बात फिर करने लगेंगी ? क्या पिताजी मुझे पढ़ाएगे ? पूरे सफर मे नीलम अपने ख्यालो मे खोई रही। सोचते हुए ही वह अपने घर पहुची। अपने माता-पिता और भाई-बहनो से घुल-मिलकर रहने लगी।

एक दिन नीलम अपनी सहेली अंजना के घर अजना की माता से अंजना के बारे मे पूछने के लिए गई।

"ताई अंजना कभी मिलने आई है कि नहीं।"

"बेटी जब तक अपने मायके हो तब तक ही मन मर्जी चलती है। फिर तो अपने ससुराल वालो की आज्ञा मे ही रहना पडता है। बेटी अजना छः महीने पहले आई थी। उसके ससुराल वालो ने तुम्हारे ताऊ जी से दस हजार रुपए मंगवाए थे। तुम्हारे ताऊ जी दूसरे दिन ही अंजना को ससुराल छोड आए थे और दस हजार

रुपए अमनदीप को दे आए थे। मुझे तो कुछ मालूम नही बाप-बेटी की क्या बाते हुई थी—उस दिन के पश्चात बेटी हमें मिलने नही आई। उसने फिर कभी कोई पत्र भी नही डाला है। तुम्हारे ताऊ जी से कितनी बार कह चुकी हूं कि बेटी से मिलकर आओ। वह मेरी कोई बात सुन ही नही रहे है। अब तो भोला भी पाच दिनो से घर नहीं आ रहा है। बाप-बेटा एक-दूसरे की बात मान ही नही रहे है।''

तभी डाकिए ने एक पत्र दिया। कमला ने नीलम से यह पत्र पढने के लिए कहा। ''बेटी, अनपढ व्यक्ति की भी क्या जिंदगी है। कई बार पहले भी ऐसे ही पत्र आते रहे है। मै ऐसे सब पत्र तुम्हारे ताऊ जी को ही देती रही हूं। पहले तो मै डाकिए से ही पूछ लेती थी कि पत्र कहां से आया है ओर किसका है। मगर एक दिन उन्होने डाकिए से बोल दिया था कि हमारा कोई भी पत्र आए घर फेंक कर चले जाया करो। मुझे भी डाटने लगे कि आगे के लिए पत्र किसी ऐसे-गैरे से मत खुलवाकर सुनना। तुम्हारे ताऊ जी ने बताया था कि जो पत्र मैं भोले को दे दिया करती थी—वह पत्र कॉलिज की ओर से भोले की शिकायत के होते थे। पत्र भोला स्वयं पढकर फाड देता था। मुझे क्या मालूम था कि भोला क्यो ऐसा करता है। बेटी नीलम अब यह पत्र पढकर सुनाओ किसका है।''

''ताई यह पत्र अंजना का ही है।''

नीलम पत्र खोलकर पढ़ कर सुनाने लगी।

''पूज्य पिताजी और माताजी प्रणाम।

पिताजी मैंने कई पत्र आपको डाले है। आप कोई भी जवाब क्यो नही देते हो। आपको मेरा कोई पत्र मिला है कि नहीं। अगर आपको पत्र मिले है तो आप मेरे से इतने नाराज क्यो हो। मेरे पत्रों के जवाब क्यो नही देते हो ? क्या आप भी मेरे से दुखी है। मेरे मन में बहुत उलझन है। कभी-कभी तो मेरे मन मे ख्याल आने लगते है कि शायद किसी कारण मेरे पत्र आप को मिले ही नही होगे। पिताजी जब से आप मुझे यहां छोड़ गए हैं मै बहुत परेशान हू। मैंने आपको पैसे देने से मना किया था। चलो आपने जो सोचा होगा ठीक ही सोचा होगा। आप इन्हे भी और मुझे भी कहकर गए थे कि अगर जरूरत पडे तो पत्र डाल देना—ऐसे अकेली मत आना। अब मैं आपको कितने पत्र डाल चुकी हूं। आप जवाब ही नहीं दे रहे हो। आप की नाराजगी है या पत्र आपको नहीं मिल रहे हैं। कारण कुछ भी हो मेरे मन को बहुत धक्का लगा है। बात-बात मे सभी ससुराल वाले मुझे कहने लगे हैं कि तुझ से तो सभी परेशान हैं। तू मायके मे भी सभी को परेशान करती होगी। तभी तो तुम्हारे मायके वालों ने भी तुझे मिलना छोड दिया है। मैं यहा पर बहुत परेशान हूं। आपकी क्या मजबूरी है। मुझे कुछ भी समझ नही आ रहा है। अब

इस ससार मे मेरा कोई सहारा नही रहा है मैं क्या करू। मायके को तो कोई औरत पूरी उमर नहीं भुला सकती है। हमेशा अपने मायके पर ही बेटियो को मान रहता है। भैया भोला भी मेरे से क्यो नाराज है। अपनी बहन से मिलने क्यो नही आता है। किसी कारण से अगर मेरे पत्र आपको मिलते न हो तो भी फिर आप का फर्ज बनता है कि मुझे मिलने आते। मै इस ससार से ही बहुत दुखी हो चुकी हू। यह ससार अब तो मुझे डरावना लगने लगा है। मेरा यह पत्र आपको मिले या न मिलें इस पत्र के बाद मैं आपको कोई पत्र नही लिखूगी। जो मेरे मन मे आएगा वह फैसला मै करूगी। मेरा यह अन्तिम पत्र है। आपको मिल जाए तो मेरा भाग्य और न मिले तो जो मेरे भाग्य मे लिखा लगता है हो जाएगा।

आपकी बदनसीब बेटी,

अजना।''

कमला पत्र सुनकर बहुत दुखी हुई। वह सोच के समुद्र मे डूब गई। यह क्या हो रहा है। मेरी बेटी इतनी दुखी है और मुझे कुछ मालूम भी नही है।

''बेटी नीलम जब तुम्हारे ताऊ जी घर लौटेगे तो मै उनसे पूछूगी क्या वह यह सब मेरे से छुपाते रहे है। मै तो सभी पत्र उन्हे ही देती रही थी। अगर आज भी तुम यहा न होतीं तो मुझे तुम्हारे ताऊ जी शायद ही बताते। दूसरी ओर भोले की ओर से भी मेरा मन बहुत दूखी ही है। सतान तो सतान ही होती है। बच्चे गलती भी कर जाते है। मगर तुम्हारे ताऊ जी का दिल पत्थर हो गया है। हाय राम अब मै क्या करू क्या न करू।''

नीलम कहने लगी, ''ताई जी अब मै घर जाती हू। माताजी मेरी प्रतीक्षा कर रही होंगी। इस संसार में सभी दुखी है। मेरी मां भी मेरी शादी की बहुत फिक्र कर रही है। मगर जमाना बहुत आगे बढ़ चुका है। लडकियो का पढना-लिखना बहुत जरूरी है। अगर अजना बहन कुछ और पढ़ी-लिखी होती तो इतनी दुखी ना होती। अब उसे ससुराल और मायके के ऊपर हमेशा निर्भर रहना पडेगा। अब जैसे अमनदीप उसे परेशान कर रहा है। भोला और ताऊ जी उसकी कोई चिंता नहीं कर रहे हैं। वह बेचारी क्या सोचती होगी। अगर वह कुछ पढ़ी होती तो ऐसे हालातों में अपनी रोजी-रोटी आप कमा सकती थी। बेसहारा औरत कुछ पढ़ी-लिखी हो तो अपना पेट पालने के लिए कोई काम कर सकती है। अपने पावों पर खडी हो सकती है।''

अंजना की दुख भरी कहानी जान दुखी मन लेकर नीलम वहा से अपने घर की ओर चल पडी। नीलम ने घर पहुंचकर अपनी माता को अजना की पूरी कहानी सुनाई।

गीता कहने लगी ''बेटी दुख-सुख तो सब अपनी-अपनी किस्मत के होते है।

जिसकी किस्मत में दुख लिखा होता है उसे दुख भोगना ही पडता है। माता-पिता जन्म जरूर देते है मगर किस्मत तो सबकी भगवान ही लिखता है। लड़कियो को तो कोई भी दुनिया मे घर नहीं रख सकता है। राजाओ-महाराजाओं को भी अपनी बेटियो को ससुराल भेजना ही होता है। बेटी अजना अपनी किस्मत में लिखे लेखो के कारण ही दुखी है। ऐसे भी कितने उदाहरण मिलते हैं कि शादी के पश्चात गरीब घरो मे जन्मी लडकिया अपने भाग्य के सहारे राज दरबारो म पहुंच सुखी हुई है। यह सभी भगवान के खेल है। अपनी किस्मत कोई आप नही लिखता सभी की किस्मत विधाता ही लिखता है।''

''माताजी हमेशा ऐसा नही होता है, अपनी किस्मत आप जगानी पडती है। जो लोग मेहनत छोड़कर किस्मत के भरोसे बैठ जाते हैं–वह यह बात भूल जाते है कि भगवान भी उनकी ही मदद करता है जो स्वय अपनी मदद आप करते हे। अपनी किस्मत बनाने के लिए कडी मेहनत करनी पड़ती है। जो विद्यार्थी स्वय पढना छोड दे और सोचने लगे कि अगर पास होना किस्मत मे लिखा हुआ होगा तो पास हो जाऊगा–क्या वह पढे बगैर पास हो सकता है।''

''बेटी नीलम पढना-लिखना कुछ और बात है–किस्मत कुछ और चीज है। फिर भी अगर पढ़ना-लिखना किस्मत में न हो तो व्यक्ति क्या कर सकता है। भगवान माहौल ही ऐसा बना देता है। पढ़ भी वही सकता है जिसे भगवान पढने के माहौल मे पैदा करे।

यह तो मै भी जानती हूं कि हाथ हिलाए बगैर खाना भी अपने आप पेट मे नही जा सकता है। बेटी कुछ बातें ऐसी है जो अपने दिमाग और अपनी मेहनत से नहीं हो सकती है। यह लेखो की बात है। भाग्य के लेख सिर्फ विधाता ही लिखता है जो कि टाले नहीं जा सकते है। अब तुम्हारी शादी-सगाई के लिए हम कितना घूम रहे हैं। जहा भगवान ने तुम्हारे संयोग लिखे है वही तुम्हारी शादी होगी। कहा होगी ? तुम्हारी किस्मत में क्या लिखा हुआ है ? क्या तुम जानती हो। हम कितनी कोशिश कर रहे हे। जहां भगवान ने तुम्हारे संयोग लिखे है वही बात बनेगी। वर्ना बात नहीं बनेगी। भगवान ऐसा माहौल आप पैदा कर देता है।''

वकील धनपत राय जी घर पहुचे।

दोनों मां-बेटी खामोश हो गई। फिर नीलम रसोई मे अपने पिताजी के लिए खाना बनाने लगी।

धनपत गीता से कहने लगे कि ''गीता, लगता है बेटी नीलम के सयोग दिल्ली ही लिखे हुए हैं। अब नीलम भी परीक्षा देकर आ गई है। अब हमे दिल्ली का चक्कर लगाना चाहिए। अगर वहा बात बन गई तो ठीक है। अगर नही भी बनेगी तो हम

दिल्ली दर्शन कर लौट आएगे। वैसे भी तो लोग-वाग दिल्ली घूमने जाते हैं।"

दूसरे दिन दिल्ली जाने का प्रोग्राम पक्का हुआ। गीता, धनपत राय और नीलम रेल पकड़कर दिल्ली के लिए रवाना हुए। रेल अपनी चाल चलने लगी। पूरे रास्ते तीनों अपनी-अपनी कल्पनाओ के घोडे दौडाते रहे। क्या होगा कैसा होगा। नीलम अपने मन मे सोच रही थी कि इस बार माता-पिता ने इतनी दूर दिल्ली का प्रोग्राम क्यो बनाया है।

रेल दिल्ली पहुची। नीलम दिल्ली पहली बार देख रही थी। मन ही मन वह खुश हो रही थी। मन में विचार उठने लगे अगर मेरी शादी इस शहर मे ही हो जाए तो मैं कितनी खुशनसीब होऊगी। ऐसे शहर मे तो लोग दूर-दूर से घूमने के लिए आते हैं। फिर मै तो यहा पूरी जिदगी व्यतीत करूंगी। उसे यह ख्याल भी नहीं था कि उसकी यह कल्पना सच होने जा रही है।

वकील साहब ने टैक्सी स्टैण्ड से टैक्सी पकडी और शक्ति नगर वकील हकीकत राय जी के घर पहुचे। कुदरतन हकीकत राय जी घर पर ही मिल गए। उन्होने घर आए मेहमानो का बहुत आदर-सम्मान किया।

हकीकत राय ने उनके दिल्ली पहुंचने की खबर लडके वालो को भेजी। फिर हकीकत राय उनसे बातें करने लगे।

"वकील साहब अब आप लड़के को देखो, अगर लडका आपको पसंद हुआ तब ही बात आगे होगी वरना हम चुप कर जाएंगे।"

धनपत राय साहब कहने लगे, "दोस्त हकीकत राय जी अगर भगवान को मन्जूर हुआ तो हम यह रिश्ता पक्का कर देगे।"

हकीकत राय ने लडके मोहन के घर फिर टेलीफोन किया। दूसरे दिन सवेरे 9 बजे का समय नियत किया।

दूसरे दिन वह 9 बजे मॉडल टाउन राम प्रसाद के घर पहुचे। राम प्रसाद बातचीत करने में बहुत तेज था। वह धनपत राय से कहने लगा, "हमारे पिताजी तो बहुत पहले इस दुनिया को छोड गए थे। बडा भाई होने के नाते मैने भैया मोहन को कभी पिता के न होने का एहसास नहीं होने दिया। पूरी जिम्मेदारी मैने पूरी की है। भाई-बहनो की शादियो पर हमने दिल खोलकर खर्चा किया है। सब कार्य अपने हाथों से किये है। अब भैया मोहन की शादी भी दिल खोलकर ही करूगा। हमे किसी चीज की जरूरत नहीं है। हमें भगवान ने बहुत कुछ दिया हुआ है। हा हमे समाज की सभी रस्मे पूरी करनी चाहिए। मोहन की शादी मै दिल खोलकर करूगा—मोहन यह न सोचे की मेरी शादी धूम-धाम से नहीं हुई है।"

धनपत राय राम प्रसाद के इशारे समझ रहे थे। वकील साहब ने भी आखिर

दुनिया देखी हुई थी। वह किसी भी हालत में यहा से खाली हाथ नहीं लौटना चाहते थे। लम्बी सोच-विचार करने के बाद उन्होंने राम प्रसाद जी से कहा, "आपने अपने दिल की सच्ची बाते बता दी है। अब मै कुछ बातें मोहन से अलग करना चाहता हू। अगर मोहन की कुछ माग हो तो मै मोहन से ही पूछना चाहता हू।"

"वकील साहब जो भी आप मोहन से पूछना चाहते हो पूछ सकते हो। मै भी यही चाहता हू कि बात साफ स्पष्ट ही होनी चाहिए।"

राम प्रसाद और हकीकत राय कमरे से बाहर जाकर बाते करने लगे।

धनपत राय मोहन से कहने लगे, "बेटा मोहन मै अपनी बेटी का हाथ तुम्हारे हाथ में देना चाहता हू। इसलिए जो भी आप की कोई माग हो मुझे अभी बता देना। बेटी नीलम यहा मेरे साथ दिल्ली ही आई हुई है। आगे बात मै तब ही करूगा जब तुम मुझे अपने मन की बात बता दोगे।"

"जी दहेज-वहेज की मुझे कोई इच्छा नही है। मगर मै भी ऐसी लडकी चाहता हू जो उमर भर मेरी इज्जत और सेवा करती रहे। मेरी और कोई माग भी नही है।"

राम प्रसाद और हकीकत राय बाहर से अन्दर आए। राम प्रसाद कहने लगा, "वकील साहब हमें दहेज नहीं समझदार लड़की की जरूरत है। मोहन को आपने देख ही लिया है।"

"राम प्रसाद जी मुझे मोहन और मोहन का स्वभाव पसंद है। आप जब चाहे नीलम को देख सकते हे। अगर आप को और मोहन को बेटी नीलम पसद आई तो हम बात पक्की कर लेंगे।"

फिर राम प्रसाद और हकीकत राय ने अलग से बातचीत की। नीलम को देखने-दिखाने की बात तय हुई। हकीकत राय कहने लगे, "ठीक है कल सवेरे 9 बजे बिरला मदिर का प्रोग्राम ठीक रहेगा। कल ही आगे की बातचीत होगी।"

वह दूसरे दिन का प्रोग्राम पक्का कर अपने घर की ओर चल पडे। शक्ति नगर पहुच धनपत राय ने गीता और नीलम को पूरी बात खुल कर बताई कि मोहन का स्वभाव बहुत अच्छा है। मै उसे पसद कर आया हूं। अब कल वह लोग नीलम को देखने बिरला मंदिर आ रहे है। आप दोनो भी लडके को अच्छी तरह देख लेना।

"बेटी नीलम तुम तो पढ़ी-लिखी हो। फेस रीडिग से बहुत कुछ पता लग जाता हे। कल तुम उन लोगों के सवालो के जवाब बहुत धीरज से देना। कुछ औरते जल्दबाज होती हैं। लड़का मोहन देखने मे सुदर है। रोजगार पर लगा हुआ है। मेरे मन मे यकीन हो गया है कि यह रिश्ता हमारे लिए बहुत अच्छा रहेगा। आगे बेटी तेरी किस्मत है। अगर तुम्हारी किस्मत में दिल्ली का अन्नजल ही लिखा हुआ हो

तो बहुत अच्छा है। देहात की जिंदगी से शहर की जिंदगी बहुत अच्छी है। बडे महानगरो मे सभी सुविधाए होती है। बेटी मेरे मन को बहुत खुशी महसूस हो रही है।"

दूसरे दिन धनपत राय, गीता, नीलम और वकील हकीकत राय, उनकी पुत्री रेशमा आठ बजे टैक्सी लेकर बिरला मंदिर की ओर चल पड़े।

नीलम का दिल ऐसे धडकने लगा जैसे वह बड़ी परीक्षा में इन्टरवियू देने जा रही हो। उसकी माता गीता अपने मन मे भगवान से प्रार्थना कर रही थी हे भगवान आज बात बन जाए। नीलम मालूम नही कल्पना मे कहां खोई हुई थी। मालूम भी नहीं हुआ कब टैक्सी बिरला मंदिर पहुच गई। वह सभी मंदिर में मूर्तियो के दर्शन करने के पश्चात बाहर चाय की दुकान पर आकर बैठ गए। वह मोहन और उसके परिवार वालों की प्रतीक्षा करने लगे।

प्रतीक्षा समाप्त हुई। मोहन और उसके परिवार वाले भी वहा पहुंच गए।

धनपत राय और हकीकत राय ने उठकर हाथ मिलाये। सभी मिलकर मदिर के सामने पार्क मे जा बैठे। मर्द मर्दो से और औरते औरतो से बातें करने लगे।

धनपत राय ने चाय वाले को चाय बनाने का इशारा किया। शायद चाय वाले से उन्होंने पहले ही अपना प्रोग्राम बता कर आर्डर दिया हुआ था। दुकान वाला फौरन चाय नमकीन और बर्फी की प्लेटे ले आया। बातें करते हुए सभी चाय पीने लगे।

राम प्रसाद की पत्नी नीलम से बाते करने लगी। कुछ ही समय मे वह नीलम से ऐसे घुल-मिल गई जैसे बहुत पहले से ही वह एक-दूसरे को जानती हो। फिर वह गीता से कहने लगी, "मौसी जी नीलम और नीलम का स्वभाव हमे बहुत पसद आया है। मेरी देवरानी तो अभी से मेरे साथ घुल-मिल गई है।"

पक्की बात बनते देख रेशमा ने फौरन अपनी शेखिया मारनी शुरू कर दी, "जानते हो बिचौलिये कौन हैं। वकील साहब ने आगरे से तुम्हारे लिए नीलम जैसी सियानी समझदार पढी-लिखी लडकी ढूंढ़ी है। हमे जल्दी ही भुला मत देना।"

हसी-मखौल का माहौल बन गया। गीता के चेहरे पर भी लाली आ गई। नीलम की झिझक भी दूर हो गई।

धनपत राय मोहन से कहने लगे, "बेटा मोहन, कोई भी बात दिल मे हो अभी खुल कर बता देना। बात पक्की होने के पश्चात फिर कोई ऐसी-वैसी बात निकले तो फिर अच्छी नही होती है। फिर तो हम उसे अपनी बेइज्जती समझेंगे। अभी आप कोई भी बात कहो हमे बुरी नही लगेगी। अगर अभी आप बेटी को नापसद भी कर दो तो हमें कोई एतराज नही होगा।"

राम प्रसाद ने अपनी हामी भरते हुए इक्यावन रुपये नीलम को शगुन के तौर

पर दे दिए। फिर मोहन के और बाकी रिश्तेदारो ने भी अपनी-अपनी तरफ से शगुन दे दिया।

फिर धनपत्त राय ने भी मोहन की झोली मे एक सौ एक रुपए डाल दिये। मोहन के माथे पर तिलक लगाकर मोहन को प्यार दिया। बहुत ही साधारण रस्मो से मोहन और नीलम का रिश्ता पक्का किया गया।

धनपत राय राम प्रसाद से कहने लगे, "शादी की तारीख आपकी मर्जी से ही पक्की होगी। हमारी ओर से कोई देर नही है। जब भी आप हुकम करें हम शादी करने के लिए तैयार है। जैसे आपकी इच्छा हो हमे बता देना।"

"ठीक है वकील साहब हम अपने पडित से शादी का मुहूर्त पूछ शादी की तारीख पक्की करेगे। हम हकीकत राय जी को पूरी बात बता देगे। आगे आपकी सलाह पूछ कर शादी का दिन और तारीख पक्की कर लेंगे।"

दो परिवारो की निकटता पक्की हो गई। दो अनजाने परिवार रिश्तेदार बन एक-दूसरे के दिलों के नजदीक आ गए। दोनों परिवार बात पक्की कर अपने-अपने घर की ओर चल पडे।

हकीकत राय धनपत्त राय से कहने लगे, "दोस्त अब आप भी शादी की तैयारियां शुरू कर दो। जब भी राम प्रसाद ने हमे शादी की तारीख बताई मै उसकी इत्तिलाह आपको कर दूगा। चलो अभी साथ की साथ दिल्ली दर्शन करवाएं।"

"दोस्त मै आपका कैसे शुक्रिया करू। आपकी कृपा आपकी हमदर्दी से अब तो यहां रिश्तेदारी बन ही गई है। दिल्ली से हमारा गहरा संबंध जुड गया है। अब आप हमे वापिस आगरे जाने की इजाजत दो। अब तो यहा बेटी नीलम के पास हमारा आना-जाना रहेगा ही। फिर कभी फुर्सत मे दिल्ली-दर्शन करेंगे। आपने मेरे इस काम के लिए सच्चे मन से मेरी मदद की है।"

हकीकत राय कहने लगे, "मैने कुछ नहीं किया बेटी नीलम के सयोग यहा लिखे हुए थे--मैने तो बस कुदरत की ओर से लिखा हुआ अपना रोल अदा किया है। मैं कौन हू सयोगो मे दखल देने वाला। संयोग जोरावर होते है।"

धनपत राय ने अपनी बातचीत समाप्त की और वापिस दिल्ली से आगरे के लिए रवाना हुए।

गलत व्यक्ति की संगत व्यक्ति को हैवान बनाकर बर्बाद कर देती है। भोला गलत सगत मे पड गया था। उसके पिता दौलत राम के सभी सपने सभी कल्पनाए अधूरी रह गई--झूठी साबित हो गई। दौलत राम को बहुत अफसोस हुआ कि उसका इकलौता बेटा पढ नही सका है। अब वह सोच रहा था कि भोले का आगे के लिए क्या प्रबन्ध किया जाए। वह चाहता था कि भोले का सम्पर्क उन लड़कों से टूट

जाए जिन्होने भोले की भांति ही अपने-अपने माता-पिता को अंधेरे मे रखा था और अब वह खुद अंधेरो मे भटक रहे है। ऐसा अंधेरा जिसमे से वह कभी भी बाहर नही आ सकेगे।

दौलत राम ने भोले को घर की चारदीवारी मे बंद कर दिया। मगर बुरी आदते कहा जल्दी पीछा छोडती है। अगर यह आदते इतनी जल्दी पीछा छोड दे तो वारिस शाह झूठा साबित हो जाए।

"वारिस शाह ना आदतां जादिया ने,
चाहे कटीए पोरिया पोरियां जी।"

भोला नशे का आदी हो चुका था। नशे की लत से भोले का शरीर टूटने लगा। कमला अपने बेटे का स्वास्थ्य देखकर रोने लगी। वह भोले से हमदर्दी करते हुए पति से कहने लगी, "जी पहले आपने भोले को इतना खुला छोड रखा था। अब एकदम कैद कर दिया है। यह ठीक नही है। ऐसे बेटे को कैद करना बिलकुल गलत है। बच्चे हमेशा गलती कर जाते है—माता-पिता को तो धीरज से ही काम लेना चाहिए। ऐसे बेटे के मन पर उल्टा असर पड़ेगा। जी बेटा घर छोड़ कर कही भाग जाएगा। अब वह आपकी बाते तो मान ही रहा है। आखो के सामने है। पहले क्या-क्या सपने देखा करते थे। अब क्या इसे मारकर ही सास लेगे। तुम्हारा बेटा है—समझा-बुझा कर कोई काम सिखा दो। और कोई काम नहीं करवाना चाहते हो तो उसे अपने ही काम पर ले जाया करो।"

"कमला तुम्हारे प्यार से ही ऐसी बुरी संगत मे पड़ा है। तुम्हारी हमदर्दी इसे और बिगाड़ रही है। अब तो यह पक्का ढीठ बन चुका है। अब मै इसे घर से बाहर नहीं जाने दूंगा। मेरा यह पक्का फैसला है। अगर तुमने भोले से ज्यादा हमदर्दी की तो तुम्हारे लिए भी मेरे से बुरा कोई नहीं होगा।"

कमला को डांटकर दौलत राम गुस्से मे बाहर की ओर चले गए।

सयाने कहते हैं कि मां का दिल मोम का ही होता है। भोले के लिए कमला का मन पिघल गया। वह भोले से कहने लगी, "बेटा तुम अपने पिता के गुस्से को जानते हो। अभी वह तुम्हारी आदतो के कारण बहुत गुस्से मे है। उनका गुस्सा ढीला पड जाए तब मै उनसे बात करूंगी। बेटा तुम कुछ तो होश संभालो। तेरे बगैर हमारा और कौन है। तुम्हारे पिताजी तुझे समझाने के लिए ही यह सब हथकडे अपना रहे है।"

दौलत राम भी अपने परिवार की भलाई ही चाहता था—अपने परिवार को खुश ही देखना चाहता था—वह अपने मन को समझा-बुझा अपना गुस्सा कन्ट्रोल कर घर वापस आया।

"कमला, मरीज को स्वस्थ करने के लिए डॉक्टरों को भी कभी-कभी मरीज को कड़वी दवाई पिलानी पड़ती है। ऐसे ही मै भी भोले का दुश्मन नहीं हूं। मगर

वह अब कडाई के बगैर सुधरेगा नहीं। इसलिए मुझे उसके साथ कडाई करनी पड रही है।"

"जी अगर आप ऐसे कडाई करने लगे तो भोला कुछ उल्टा-सीधा कर बैठेगा। आजकल के बच्चो मे ऐसे ही बहुत गुस्सा है। भोला तो पहले ही बुरी सगत मे पडा हुआ है। अब इसे प्यार से ही समझाओ। वह समझ जाएगा कडाई करने से उसके मन पर उल्टा ही असर होगा।"

"क्या असर होगा। घर छोड जाएगा। छोड जाए। कल मरता आज ही मर जाए। जहा भागना हो भाग जाए। बाहर उसका कोई हमदर्द नही है—जो उसे इतना खर्चा देने लग जाएगा। हा अगर भोला मेरी आज्ञा के बगैर घर से बाहर एक कदम भी निकालेगा तो मै उसे अपनी जायदाद से बेदखल कर दूंगा। तब मै उसकी हिम्मत देख लूगा। ऐसे बेटे का क्या भरोसा है कि बुढापे मे हमे सभाल पाए। जो अपने शरीर पर कट्रोल न रख सके हमारे बुढापे मे वह हमारी क्या सेवा कर सकेगा। हमारी तो उसे अभी से कोई परवाह नहीं है। अब मै तो उसका कोई भरोसा नहीं कर सकता हूं। अगर तुम भी उसकी ज्यादा हमदर्द बनी रही तो तुम्हे भी सबक सिखा दूगा।"

मां की ममता को मा ही जान सकती है। कमला का मन बेटे भोले के लिए नर्म पड़ता जा रहा था।

एक दिन वह भोले से कहने लगी, "बेटा तुमने गलत संगत मे पडकर अपने पिता का मन बहुत दुखी कर दिया है। तुम्हारे कारण मुझे भी झिडकी सुननी पड रही हैं। एक मा होने के नाते तुम्हारी यह हालत मुझसे देखी नही जा रही। मेरा तो कलेजा फटा जा रहा है। अब मै क्या करू ? तेरी मदद कैसे करू ?"

अपनी मा का नर्म रुख देखकर भोला कहने लगा, "मा मुझे बहुत अफसोस है कि मै पढ़ नही सका हू।" भोले की आखों मे आसू आ गए, "मा बचपन मे गलत सगत मिल जाने के कारण मुझे गलत आदते पड गई हैं। मै इन आदतो को एकदम नहीं धीरे-धीरे छोड़ सकूगा। पिताजी से तो मै कह ही नहीं सकता। उनका गुस्सा तो आप जानती ही हो। हा मां मैं तुझे स्पष्ट बता रहा हूं कि अफीम खाने की मेरी आदत अब जल्दी छूटेगी नही। अब अगर मुझे आज अफीम न मिली तो बस..." भोला रोने लगा।

"बेटा अब तुम ही बताओ मै क्या करू।"

मौका सभालते हुए भोला कहने लगा, "मां अगर मुझे जीवित देखना चाहती हो तो मुझे कुछ पैसे दे दो। मै अभी अपने दोस्त से थोडी अफीम ले आता हू। पिताजी के घर पहुचने से पहले ही मैं घर लौट आऊंगा। धीरे-धीरे पिताजी का गुस्सा ढीला पड जाएगा फिर मैं उनके साथ काम में हाथ बटाने लग मैं आप

से पक्का वायदा करता हू कि आगे के लिए मैं कभी कोई गलत काम नहीं करूगा। हा अगर आज आपने मेरी मदद न की तो मै दुखी होकर घर छोड भाग जाऊगा।''

ममता के कारण कमला ने भोले को कुछ पैसे दे दिए। पैसे लेकर भोला सीधा अपने दोस्त टोनी के घर पहुचा। थोडी-सी देर की मुलाकात मे भोले ने अपने दोस्त को अपनी पूरी कहानी बता दी।

अफीम लेकर अमली बेटा खोटे सिक्के की भाति अपने घर लौट आया। उसे यह डर था कि कहीं उसके पिता जल्दी घर न लौट आएं। जब भी भोले का नशा-पत्ता खत्म होने लगता वह माता की मिन्नते करके पैसे माग लेता।

आखिर दौलत राम भी समझ गया कि कमला भोले से हमदर्दी करते हुए भोले को चोरी छुपे पैसे देती है। वह फिर कमला को डांटने लगे कि अगर पिता बेटे को झिड़के तो फिर मा को बेटे के साथ ज्यादा हमदर्दी नहीं करनी चाहिए। ऐसा करने से बच्चे बिगड जाते है। तुम इस बात को समझ क्यो नही रही हो।

वह ही होता रहा जिसका दौलत राम को डर था। कमला हमदर्दी करते हुए बेटे भोले को चोरी छुपे खर्चा देती ही रही।

दौलत राम ने तग आकर कमला को नकद पैसे देने बन्द कर दिए।

भोले को मां की ओर से मिलने वाला खर्चा बन्द हो गया। भोला अपनी मा से भी चोरी छुपे घर का सामान बेचने लगा। उसे घर से ही चोरी करने की आदत पड गई।

दौलत राम ने भोले की यह बुरी आदते देखकर उसे घर से बेदखल कर दिया।

घर से दूर जाकर भोले का संपर्क एक डाकुओ के सरगने से हुआ। भोला डाकुओं के साथ मिलकर डकैतियां करने लगा। भोले का मेल-जोल गलत व्यक्तियो से होने लगा। भोले के मन मे फिल्मी अंदाज से ढेर सारा पैसा कमाने की तीव्र इच्छा जागी। भोला चाहता था कि वह अपने पिता को दिखा दे कि मै रिस्की काम करके कैसे पैसा कमा सकता हूं। बेडर होकर भोला डकैतिया मारने लगा। फिर भोला ने स्मगलिंग का धंधा शुरू कर दिया। बुरी सगत ने उसे बिलकुल आवारा बना दिया।

पुलिस से बचने के चक्कर में एक दिन उसकी गलती के कारण बदमाशो के हाथो ही मृत्यु हो गई। अपने दिल के अरमान और दिल के दर्द यही छोडकर वह ससार की यात्रा पूरी कर परलोक सिधार गया। अपने बेटे की मृत्यु के बारे मे सुन कमला का दिमागी सतुलन बिगड गया। दौलत राम कमला को जजीरो मे बाधकर मैन्टल हॉस्पिटल लेकर गया। इतनी बडी भगवान की दुनिया में दौलत राम का कोई भी हमदर्द दौलत राम की मदद के लिए आगे न आया।

तीसरे ही दिन कमला भी अपने बेटे भोले के पास जा पहुची। भरे मन के साथ दौलत राम ने कमला का अंतिम सस्कार किया

सगे सबंधी, दोस्त-मित्र दौलत राम के पास अफसोस करने आने लगे। सभी दौलत राम को हौसला देकर अपने-अपने घर चले जाते।

बेशुमार इकट्ठी की हुई दौलत को देखकर दौलत राम की आत्मा उसे कोसने लगी—दौलत राम तुझे मेरी धीमी आवाज कब सुनाई दी है। मै तुझे प्राय समय-समय पर याद करवाया करती थी कि यह दौलत तुम्हारे साथ नही जा सकती है। यह दौलत तुम्हारे गले का फदा बनेगी। तुम दौलत से बाते नही कर सकोगे। अब फिर मै तुझे याद करवा रही हू कि तुम्हारा यह शरीर भी एक दिन तुम्हारा साथ छोड ही जाएगा।

भगवान और अपनी मृत्यु को हमेशा याद रखो। अभी भी समय है समझ जाओ।

दौलत राम मेरी आवाज ध्यान से सुन—अगर नही सुनना है तो तुम्हारी मर्जी क्योकि मैं तुम्हारे को बस इतना ही समझाना चाहती हू कि सच्चा धन इकट्ठा कर झूठे धन को त्याग। यह झूठा धन यही छूट जाएगा। तुम्हारा शरीर और यह दौलत यही मृत्युलोक मे ही सगी है। यही मृत्युलोक मे ही रह जाएगी।

दौलत राम का मन कहने लगा—दौलत राम अपनी दौलत के बलबूते मौज कर। तुम्हारे पास पैसा है। दुनिया धन-दौलत को प्यार करती है। तुम्हारे सगे-संबधी से भी ज्यादा अभी तुम्हारी दौलत के सहारे लोग तुम्हारे सबधी बने रहेगे। दुनिया दौलत को दूसरा प्रत्यक्ष भगवान मानती ही है।

दौलत राम अपने ही अंतर द्वन्द्व मे फस गया। वह अब क्या करे—वह मन की दोचिती मे फंस गया। एक मन कह रहा था कि दौलत के बलबूते मौज-मस्ती कर। लेकिन उसका ही दूसरा मन जिसे ज्ञानी लोग आत्मा कहते हैं फिर कहने लगा—दौलत राम धोखे-बेईमानी से कमाई दौलत जरूरत वाले लोगो मे बाट दे। तुझे शाति मिल जाएगी।

बिचारे दौलत राम के दिल के दर्द बढ़ते ही गए। वह सोच के समुद्र में डूब गया। आत्मा और मन की आवाजों में घिरे दौलत राम के दिल के दर्द को लोग-बाग क्या समझते। वह तो लोगों की नजरो मे बहुत सुखी व्यक्ति था।

दौलत राम का मन दुनिया की ओर से वैरागी हो गया। वह कभी-कभी अपने मन मे सोचने लगता कि सब कुछ त्याग कर साधू बन जाए।

उसकी दौलत का नशा उसे मकडी के जाले की भाति चारो ओर से जकड़ लेता। इतनी दौलत जमा करने का क्या फायदा अगर यह दौलत अब मेरे ही काम न आ सकी। दौलत राम अपनी दौलत में फंसा कोई भी दो टूक फैसला न कर सका।

बस लोग इतना ही जानते थे कि दौलत राम को बेटे और पत्नी का कोई

गम नही है। वह तो अपने आप मे ही खोया रहता है। सभी को अपने-अपने दिलो के दर्द नजर आते है। किसी दूसरे के दिल के दर्द को यह दुनिया वाले कहा समझते है।

धनपत राय ने बेटी नीलम की शादी की पूरी तैयारी की। वह राम प्रसाद के सदेश की प्रतीक्षा करने लगे कि वह कौन-सी तारीख पक्की करना चाहते है।

आखिर हकीकत राय ने टेलीफोन करके धनपत राय जी को शादी की तारीख बता दी।

धनपत राय ने अपने भाईचारे की मर्यादा के अनुसार शादी की चिट्ठी मोहन के घर भेजी।

नीलम अपनी शादी का दिन अपनी उगली पर गिनने लगी। नीलम का दिल चाह रहा था कि शादी का मुकर्रर दिन जल्दी आ जाए। नीलम के मन की मोहन की तस्वीर दिन-रात आंखों के सामने घूमने लगी। मोहन की वह शक्ल-सूरत जो नीलम ने दिल्ली के बिरला मंदिर मे देखी थी। मोहन नीलम को तारों मे चाद की भाति ही नजर आया था। उस दिन नीलम तो शर्मा रही थी। मोहन नीलम से भी ज्यादा शर्माता हुआ नजर आ रहा था। नीलम यह सब विचार अपने मन मे कर रही थी कि मेरा देवता कैसे लडकियो की भाति शर्मीला है। एक भोला-भाला चेहरा जो नीलम ने देखा था अब वह ही चेहरा हर समय नीलम को दिखाई देता रहता।

नीलम मन ही मन रंगीन सपने देखने लगी। उसे हर तरफ खुशिया ही खुशिया नजर आने लगीं।

प्रतीक्षा खत्म हुई, शादी का मुकर्रर दिन आया। राम प्रसाद मोहन की बारात लेकर आगरे धनपत राय के घर पहुचा। सभी बाराती बहुत खुश नजर आ रहे थे। बाराती अपनी ही मस्ती मे घूम रहे थे।

सहेलियों के झुड में लुक-छुप नीलम अपने देवता मोहन का सेहरे से ढका चेहरा देखने लगी। नीलम को मोहन का चेहरा कुछ बुझा-बुझा-सा नजर आया।

मोहन किसी चिता मे फसा नजर आ रहा था। सभी की नजरें दूल्हे मोहन की ओर लगी हुई थी। खुश नजर आने की बजाए मोहन चिंतित नजर आ रहा था। कोई चिंता उसे मन ही मन दुखी कर रही थी।

नीलम मोहन का चिंतित नजर आने वाला चेहरा देख खुद उदास हो गई। माता-पिता नीलम का उदास चेहरा देखकर यह समझने लगे कि नीलम उनके प्यार के कारण ही उदास नजर आ रही है। क्योंकि आज उसे मायका छोड़ ससुराल जाना है।

नीलम अपने मन में विचार करने लगी कि मेरे मन-मंदिर के देवता उदास-उदास

क्यो नजर आ रहे हैं। नीलम का मन कहने लगा कि नीलम जरूर कोई गडबड है। मगर नीलम की उदासी की ओर किसी की फिक्र न थी। सभी की निगाहे तो दूल्हे मोहन की ओर लगी हुई थीं।

मोहन का उदास चेहरा देखकर नीलम चिन्ता मे डूब गई।

नीलम को अपना भविष्य धुधला-धुधला-सा नजर आने लगा। नीलम मोहन के इस उदास चेहरे की तुलना अपने मन के अदर बसे चेहरे से करने लगी। मोहन का वह चेहरा जो उसने दिल्ली बिरला मदिर में देखा था। नीलम को उस चेहरे और आज के चेहरे मे जमीन-आसमान जैसा अतर स्पष्ट नजर आ रहा था।

प्रायः नीलम सोचा करती थी कि जव मोहन दूल्हा वनकर मुझे शादी के दिन वारात लेकर लेने आएगा तो मोहन वहुत खुश नजर आएगा। सहेलिया मोहन की मेरे पास आकर तारीफ करेगी। नीलम तेरी किस्मत बहुत अच्छी है। चाद जैसा तुम्हे दूल्हा मिला है। पर आज वह क्या देख रही है। उसका देवता तो ऐसे नजर आ रहा है जैसे कोई अपराधी पुलिस के पंजे मे फंसा हुआ हो।

मोहन वाकई डरा-डरा-सा नजर आ रहा था। वह इतना चितित था कि अपनी बारात में भी उसने अच्छी तरह खाना नहीं खाया।

मोहन का स्वास्थ्य अच्छा था मगर उसके मन के भीतर कोई तूफान उठ रहा था। मोहन की चिन्ता का कारण और कोई नहीं बस अकेला मोहन ही जान रहा होगा। नीलम के मन को ठनक गई कि जरूर कोई खास ही कारण है।

नीलम के पिता शादी की रस्मे पूरी करने में लगे हुए थे। नीलम का अतर्मन टूट जाने के कारण नीलम मिट्टी की मूर्ति की भाति शादी की रस्मो मे भाग ले रही थी। मन में विचार कर रही थी कि मैं अपने देवता को हमेशा खुश रखूगी।

बारात विदा हुई।

मोहन नीलम को डोली में बैठा दिल्ली के लिए रवाना हुआ। रास्ते मे नीलम के मन मे भाति-भाति के विचार उठने लगे। नीलम अपने मन में कल्पना करते हुए सोचने लगी कि मेरे साहिब मोहन का स्वभाव कैसा होगा।

मेरी जेठानियां इनके साथ कैसा व्यवहार करती होंगी।

बड़ी भाभियां ..हा समझने की ही बात है। "मानो तो गंगा मैया न मानो तो वहता पानी।" वैसे बडी भाभियो का दर्जा मा जैसा ही होता है। ननद तो शादीशुदा है। अब वह दो-चार दिनो के पश्चात अपने-अपने घर चली जाएगी। मेरा काम तो बस अपने मोहन देवता की सेवा करना ही है। मैं अपने देवता की पीड़ा, उनके सभी गम आप ही पी जाऊगी। नीलम अपनी कल्पना मे खोई आगे से आगे कल्पना करती रही। डोली माडल टाउन पहुंची। मोहन का पूरा परिवार खुश नजर आ रहा था। कुछ औरतें इकट्ठी हो गीत गाने लगीं।

जित आया नी वीरा जित आया।
घाणी वार वन्ने दीए माए बन्ना बाहर खडा।

नीलम की ननदे और जेठानियो ने नीलम को डोली से नीचे उतारा। अपनी रस्मे पूरी की। राम प्रसाद की पत्नी ने नीलम की जान-पहचान अपने सभी रिश्तेदारो से करवाई।

नीलम का मन बेचैन होने लगा कि कब वह अपने देवता से घुल-मिल जाए। नीलम तो कोई ऐसी-वैसी अभी कल्पना भी नही कर सकती थी कि उसका दूल्हा मोहन पूरी दुनिया से अलग ही होगा। उसे कैसा नर्क जैसा जीवन जीना पड़ेगा। आने वाला समय उसकी कल्पना को झूठा साबित करने ही वाला था कि नीलम तुम्हारे सपने और कल्पनाए झूठी ही है।

नीलम तो अभी अपनी कल्पना में मोहन को अपना आदर्श पति समझने मे ही लगी हुई थी।

नीलम की अतर आत्मा उसे दबी-दबी मद्धिम-सी आवाज मे कह रही थी कि नीलम मामला गड़बड़ है। मगर आत्मा की धीमी-धीमी आवाज को मन की बुलद आवाज ने दबा ही दिया।

नीलम का मन सुनहरे पलो मे रगीन चित्र नीलम को दिखाने लगा।

नीलम और मोहन की जिंदगी के सुनहरे पल, उनकी वो रात जिसकी हर नौजवान लड़के-लड़की को प्रतीक्षा होती है।

मोहन और नीलम की सुहागरात।

राम प्रसाद की पत्नी बीना ने नीलम के कान मे कुछ कहकर मोहन और नीलम को एक अलग कमरे मे इकट्ठा कर दिया।

अपनी जेठानी बीना के कान मे कहे शब्द याद कर नीलम अपने मन में गुदगुदी महसूस करने लगी। वह अपने ही मन से धीरे-से पूछने लगी—अब आगे क्या होने जा रहा है।

कुछ-कुछ नीलम को वह याद आने लगा जो उसकी सहेली अंजना ने उसे अपनी सुहागरात की कहानी बताई थी।

नीलम पढ़े-लिखे लोग तो हनीमून मनाने के लिए दूर-दराज पहाडो के होटलो मे जाते होगे, एक-दूसरे को गुलदस्ते भेट करते होगे। मगर—

कजरिए मै कैसे बताऊं .बस तुम्हारे जीजे अमनदीप ने फुल दारू पी हुई थी ..पहले उन्हे शराबी देख बहुत डर लगने लगा फिर तेरे जीजे की वह ही हरकतें मुझे भी अच्छी लगने लगी। तेरा जीजा तुतलाता हुआ मुझे अपनी बांहो में...नीलम अजना की बताई बातें याद कर रही थी। मगर यहां तो सब कुछ ऐसे नजर आ रहा था जैसे कि उनकी असली सुहागरात न होकर नीलम को किसी नाटक मडली

मे ही नई दुल्हन का रोल अदा करना हो। नीलम महसूस करने लगी कि यहा तो पूरा सच-सच होते हुए भी झूठ नजर आ रहा है। यहा तो ऐसे नजर आ रहा है जैसे मुझसे जबर्दस्ती नई दुल्हन का रोल करवाया जा रहा हे।

यह मेरी कैसी सुहागरात है।

यह तो मेरे अरमानो के कत्ल की रात है। यह तो मेरी जिंदगी की काली अधेरी रात है।

मोहन उसका देवता मुह से कुछ बोल ही नही रहा था। नीलम को ऐसा महसूस होने लगा जैसे मोहन काप रहा हो। नीलम का मन कहने लगा नीलम किसी भी तरीके से अपने देवता से बात तो शुरू कर। कुछ सोचते हुए नीलम फिर चुप ही रही। मुझे कोई बात पहले शुरू नहीं करनी चाहिए।

मोहन के मन मे विचार उठा मोहन कम से कम अपनी अर्द्धांगिनी का नाम ही पूछ कर बात शुरू कर। तू तो मर्द है तुझे ही बात शुरू करनी चाहिए। हौसला कर। नीलम को समझा तुझे मेरी कैसे सेवा करनी होगी। अपनी खामोशी तोडते हुए अपनी अजीब सुहागरात को मोहन नीलम से पूछने लगा, "क्या तुम मेरी उदासी का कारण समझ गई हो कि नहीं ?"

नीलम बिलकुल चुप रही।

मोहन फिर मुंह से एक भी बोल निकाल न पाया।

नीलम और मोहन बिलकुल खामोश हो गए। कुछ समय के लिए शात काली रात की भाति सन्नाटा छा गया। मोहन के चेहरे की खामोशी देख नीलम ने हौसला किया, "मेरे देवता आप के बताने पर ही मै आपकी उदासी का कारण जान सकूंगी। आप अपनी उदासी का कारण अब बताओ। अभी तो मैं आपके बारे में कुछ भी जानती नही हू। हा आपकी उदासी, हमारी सुहागरात के समय आपका उदास चेहरा देख मैं भी बहुत चितित हू। ऐसा क्या कारण है ? किस बात ने आपको इतना परेशान किया हुआ है ?" नीलम हौसला कर खुलकर बोलने लगी, "मेरे देवता आज अपनी शगुनों की रात है। दो जिस्म एक जान होने की रात है। आज की रात दो अनजाने दिलो के एक हो जाने की रात है। आप बिलकुल शांतचित्त बैठे हो—आज मै बोल रही हू मगर अब मुझे तो चुप रहना चाहिए। आपके दुख अब मेरे दुख होगे, आपके सुख मेरे सुख होगे। आपका हुक्म होगा। मै आपके हुक्म की गुलाम बन जाऊगी। फिर हमारा दोनों का एका होगा—अब मै चुप रहूंगी क्योंकि मैं आपके हुक्म की गुलाम—आपके किसी काम मे दखल नहीं दूंगी—अब आगे जो कुछ करना है आपने ही हुक्म करना है। मेरे देवता मुझसे अपना कोई भी भेद छुपाना मत।"

नीलम की प्यार की भाषा समझते हुए मोहन के मन में कुछ करंट जैसा लगा।

नीलम तो अब कुछ ज्यादा ही बोल रही है। मुझे नीलम पर पूरा रौब अभी जमाना चाहिए।

मोहन की बोली एकदम हुक्मरानो जैसी हो गई। अपना हुक्म सुनाते हुए मोहन नीलम से कहने लगा—"नीलम बहुत ध्यान से सुनो। तुझे मेरी हर एक बात माननी होगी। जब तुम्हारे पिताजी मुझे पसद करने आए थे—मैने उनसे एक ही माग मागी थी कि आपकी बेटी को मेरी हर एक बात माननी होगी, मेरी इज्जत करनी होगी। अव मै फिर अपनी वही बात दुहरा रहा हू। जिदगी भर तुझे मेरी आज्ञा माननी होगी। मेरी सेवा करनी होगी।"

मोहन नीलम को अपना अहसान जताने लगा जैसे उसने नीलम के साथ बिना दहेज लिए शादी करके उसके पिता पर बहुत बड़ा परोपकार किया हो।

नीलम कहने लगी, "मेरे देवता मैं आपकी हर बात मानूगी—आपकी जिन्दगी भर सेवा करूंगी। हर हिन्दुस्तानी औरत का धर्म और फर्ज है कि वह अपने पति की सेवा करती रहे। हर आज्ञा मानती रहे। मै भी अपना यह धर्म और फर्ज जरूर निभाती रहूगी। हा एक आदर्श पत्नी होते हुए अपने अधिकार भी जानती हू। आप पति हैं आपके भी कुछ फर्ज हैं।" नीलम बातो-बातो में मोहन के कान खींचने लगी, "जी मै अपने फर्ज बखूबी निभाऊगी। और आपसे अपने पूरे अधिकार भी लेती रहूगी। मुझे आज इस सुहागरात से ही लगने लगा है कि आप मुझे अहसानो के नीचे दबाना चाहते है। आपके कुछ और भी तो जरूरी फर्ज हैं। यह मत समझना कि मै कुछ समझती नही हूं, मुझे यह बाते बोलते हुए शर्म भी आती है। मगर आज अपनी लाज-शर्म सब भुलाकर एक दिल एक जान होने की रात है।"

नीलम की साफ-साफ बाते सुनकर मोहन का अंतर्मन काप उठा। यह नीलम तो मुझे कुछ बडबोली लगती है। जैसे कुछ अनपढ औरते और अल्हड लडके कहते हुए सुने है कि पहली रात को जिसका रौब पड़ जाए वह पूरी उमर सुखी रहता है। नीलम भी शायद उन मूर्खो में से है। और बाते छोड हौसला कर इसे आज ही सबक सिखा दू कि मै बहुत सख्त मिजाज का हू। अपने अतर्मन से फैसला करके मोहन ने अक्खड़ बोली बोलना शुरू किया। मोहन ने गिरगिट की भाति अपने तेवर ही बदल लिए। मोहन ने नीलम से एकदम ऐसा व्यवहार करना शुरू कर दिया जैसे कोई फैक्ट्री का मालिक अपने नए रखे मुलाजिम को समझा रहा हो कि अगर यहां काम करना है तो तुझे मन लगाकर मेहनत करनी होगी। वर्ना काम नही मिलेगा। अपने घर वापस जाओ।

मोहन क्या चाहता है, ऐसे क्यो कर रहा है। ऐसे पागलो की भांति कैसा व्यवहार कर रहा है। क्यो ऐसे पजल हुआ है। नीलम को कुछ समझ नहीं आ रहा था। नीलम अपने मन में सोचने लगी यह कैसी सुहागरात है। नीलम अपने ही मन मे बहुत डरने लगी। मेरे देवता का स्वभाव तो अच्छा नही लग रहा है।

यह तो मुझे एक मजदूरी करने वाली मजदूरन की भांति मेरे ही फर्ज समझाने मे लगे हुए हैं। यह भी लगता है कि यह बहुत ही सीधे-सादे है। इतने सीधे साधारण कि इन्हे सुहागरात का मतलब ही मालूम नहीं है। आगे चलकर क्या होगा।

बेचारी नीलम चुपचाप मोहन का फालतू भाषण सुनती रही। नीलम अपने पिता के दहेज न दे सकने की मजबूरी समझती थी।

नीलम यह बिलकुल न समझ पाई कि मोहन अपने मे कोई कमी महसूस कर रहा है जिसे वह नीलम से छुपाने की ऐसे बोलकर कोशिश कर रहा है।

मोहन को ऐसे समय नीलम की हमदर्दी की जरूरत थी। जिसे नीलम भी समझ नही रही थी।

अपनी झिझक और कमजोरी के कारण मोहन नीलम को डराने लगा। मोहन अपनी इस चाल में सफल रहा। मोहन ने नीलम पर अपना पूरा रौब जमा लिया।

दहेज न लेकर उसने अपनी एक बड़ी उलझन आसानी से हल कर ली। मोहन ने अपनी सुहागरात ऐसे ही नीलम को समझाने में ही व्यतीत की।

नीलम और मोहन की शादी हुए दिन, महीने, वर्ष व्यतीत होते रहे। मगर राज राज ही बना रहा। मोहन और नीलम दुनिया की नजरो मे पति-पत्नी थे। बस दुनिया वाले यह ही जानते थे कि वह दोनों पति-पत्नी है। बाकी कहानी तो बस बेचारी नीलम ही जानती थी। नीलम अब इस हालत मे पहुंच गई थी कि वह अपनी कहानी किसी को भी बता नही सकती थी।

पढ़ी-लिखी समझदार होने के कारण नीलम ने अपनी भावनाओं, मनोवेगों को अपने कन्ट्रोल मे रखना ही उचित समझा। भावुक और विवेकहीन मनुष्य को ऐसे अपने आपको कंट्रोल मे रख पाना बहुत कठिन होता है।

नीलम ने अपने आपे पर कंट्रोल रखकर सूझवान और आदर्श पत्नी का सबूत देते हुए अपनी कहानी दुनिया से छुपाना ही ठीक समझा। नीलम अब समझ गई थी कि दुनिया को कुछ बताने से अकेले मोहन की ही नही साथ-साथ उसकी अपनी भी बेइज्जती है। मूर्ख और अनपढ विवेकहीन औरते मेरी कहानी सुनकर मेरा ही मजाक उड़ाने लग जाएगी। बात का बतगड़ बनाना इन दुनिया वालो को अच्छा लगता है। नीलम ने अपने दिल के दर्द को अपने दिल मे ही रख हालातो का डटकर मुकाबला किया। फिर भी नीलम का मन इतना भरा हुआ था कि वह खुलकर कही रोना चाहती थी। मगर परमात्मा की इतनी बड़ी दुनिया में उसका अपना कोई ऐसा हमदर्द नहीं था—जिसके सामने वह अपने दिल के अरमान निकालने के लिए खुलकर रो लेती। अपने मन के अरमान निकाल कर अपना मन हलका कर लेती।

बेचारी नीलम किसे बताती कि उसे यह दुख है। सुहागन होते हुए भी वह

कवारी ही है। उसकी जवानी वाले अरमान दिल मे ही दबे रह गए है। समय अपनी चाल चलता रहा। नीलम की जवानी के दिन यूं व्यर्थ व्यतीत होते रहे।

मोहन नीलम को धार्मिक किताबे पढने के लिए प्रेरित करता रहता। फिर नीलम को आगे पढाने लगा।

नीलम को पढ़ने का मौका देकर मोहन नीलम को अपने अहसानो के नीचे रखना चाहता था। नीलम ने अपनी मेहनत के बल पर एम. ए. पास की और कॉलिज मे प्रोफेसर बन गई। नीलम का समय अच्छे ढग से बीतने लगा।

जिदगी के अनुभव के साथ नीलम अपने मन को समझाती-बुझाती रही। एक दिन फिर नीलम के पिता की चिट्ठी आई। लिखा था—

"मेरे प्यारे मोहन और नीलम, बहुत-बहुत प्यार। हम यहा कुशल मगल है। यकीन रखते है कि आप दोनों भी आनंद मंगल ही होगे। आप अपने कामों मे व्यस्त होगे। आप दोनो जानते ही है कि काता ने बी. ए. की परीक्षा पास कर ली थी। अब हमने उसके लिए एक लडका पसंद किया था। जव लडके वाले कांता को देखने आए तो शाति को देखकर कहने लगे कि हम चाहते है कि आप दोनो बहनो के रिश्ते हमे ही दे दो। मुझे भी उनकी यह सलाह पसंद आई। मैंने उनकी यह सलाह मान ली है। मैने अपने मन मे फौरन फैसला कर लिया था कि अगर दोनो बहने एक ही घर में चली जाएंगी तो इसमे कोई बुराई नही है। दोनो बहने जिंदगी भर इकट्ठी रहेगी। इसलिए ऐसा सोचकर हमने दोनो बहनो के रिश्ते पक्के कर दिये थे। अब वह शादी के लिए जोर डाल रहे है—इसलिए हमने शादी की तारीख पक्की करके शादी की चिट्ठी भेज दी है। शादी की तारीख 16 अक्टूबर दिन इतवार है। आप दोनो कम से कम एक हफ्ता पहले पहुच जाना। बाकी बातें आपके यहा आने पर होगी। यहां पूरा परिवार आप दोनो की प्रतीक्षा करेगा, जितने दिन पहले आ सको अच्छा है।

आपका पिता
धनपत राय"

पत्र पढ़कर नीलम को अपनी शादी के दिनों की याद आ गई। नीलम सोचने लगी कि पिताजी ने फिर लड़के वाले जरूरत-मद ही पसद कर लिए है। अपनी-अपनी किस्मत है। मां तो पहले ही कहा करती थी कि बेटी माता-पिता बच्चो को जन्म जरूर देते है—मगर हर एक बच्चे की किस्मत तो विधाता ही लिखता है।

परमात्मा मेरी बहनो की किस्मत मेरे जैसी न हो। गरीब पिता ने लडके वाले फिर मोहन जैसे जरूरतमंद ढूढ लिए है। मोहन साहब को भी मेरे जैसी ईमानदार घरेलू नौकरानी की बहुत सख्त जरूरत थी। अब हमें बहनों की शादी पर तो जाना ही है।

नीलम ने पत्र पढकर यह पत्र मोहन को पढ़ने के लिए दिया। पत्र पढकर मोहन कहने लगा कि "छोटी शाति की अभी उमर ही कितनी है। पिताजी ने तो ऐसे ही जल्दबाजी की है। मैं उनका बड़ा दामाद हू। मुझसे उन्होने सलाह तक भी नही पूछी है। अगर वह मेरी सलाह पूछते तो मै अभी छोटी शाति की शादी और पाच वर्ष न होने देता। छोटी उमर में शादी करना कानूनी जुर्म है। मेरी उन्होंने क्या इज्जत की है। क्या उन्होने मुझे अपना दामाद समझा है। मेरे से सलाह पूछनी भी ठीक नहीं समझी है। अब मै शादी पर हरगिज़ नही जाऊगा।"

मोहन की बाते सुनकर पहले तो नीलम चुप ही रही—फिर कहने लगी कि "क्या मुझे अपनी बहनों की शादी पर जाने का भी अधिकार नही है। अब मै जरूर जाऊगी।"

नीलम घायल शेरनी की भाति गरजने लगी, "कान खोलकर सुन लो अगर आप नहीं जाएगे तो मैं अकेली ही चली जाऊगी। अगर आप मुझे जाने से रोकेंगे तो फिर मै आपकी एक भी बात नहीं मानूंगी। तुम्हारी मर्दानगी अपने माता-पिता को पूरी खोलकर ए टू जैड बता दूगी। यह अपनी पूरी कहानी मैं अपने ही मन मे रखना चाहती थी। ऐसे अकेली जाने मे मेरी भी इज्जत नही है यह मैं भी भली-भाति जानती हू। नए बने मेरे बहनोई क्या सोचेगे। अब मेरे सब्र का प्याला भर चुका हे। आगे जो भी रिजल्ट निकलेगा उसके आप ही जिम्मेदार होगे। मैने पूरे अरमानो के साथ आपसे शादी की थी—किसी नाटक मंडली में ऐसी नई दुल्हन का रोल नहीं करना था। आप मुझसे जबर्दस्ती यह झूठा रोल करवाते आ रहे हो। अब मै यह नाटक-वाटक बंद कर दूगी। पाप का घडा अब फोड़ना ही ठीक है। हर एक बात की कोई सीमा होती है। मैं सीमा से ज्यादा खेल खेल चुकी हूं।

आपकी बहादुरी की पूरी कहानी सुन कर पिताजी मुझे आपके साथ एक दिन भी नहीं रहने देंगे। हा मैं अभी भी अपनी ओर से पहल करके आपकी बेइज्जती नही करना चाहती। एक बार फिर ठंडे दिमाग से सोच लो।

मुंह से निकली बात और कमान से निकला तीर वापस नहीं आता है। मै अभी भी आपकी पूरी इज्जत अपने मन से कर रही हूं। क्योकि आपके मेरे ऊपर बहुत अहसान हैं। मै इतनी जल्दी उनको भी भूली तो नही हू। मै बेवफा बनना नहीं चाहती हू।"

नीलम की धमकियो से मोहन बहुत भयभीत हुआ। सोचने लगा अगर नीलम अपनी अड़ी पर आ गई तो फिर मेरा तो घर ही बर्बाद हो जाएगा। दुनिया परो से ही पक्षियो की डारें बनाने लग जाती है। अगर नीलम ऐसे नाराज होकर सच ही अकेली अपने मायके चली जाएगी तो फिर मेरी बहुत बेइज्जती हो जाएगी। यहा भी लोग-बाग मेरे से पूछने लग जाएंगे कि नीलम कहा गई हुई है। तब मै लोगो

को क्या जवाब दूंगा। यह सब तो मेरी इज्जत के खिलाफ ही होगा। नीलम अपने माता-पिता के पास भी मालूम नही क्या-क्या बकवास करने लग जाए। सोच-सोचकर मोहन नीलम से बड़े प्यार से कहने लगा कि "मै एक शर्त पर तुम्हारे साथ चल सकता हूं। वहा तुम मेरे साथ-साथ ही रहोगी। किसी से भी फालतू बात नही करोगी। यहा की गुस्से-गिले की सभी बाते यही छोडनी होगी।"

"जी आप तो समझते नही हो। मै कोई छोटी बच्ची तो नहीं हू। मै भी तो सब कुछ जानती हू कि आपके साथ मेरी कितनी इज्जत है। मै आपकी बेइज्जती कैसे करवा सकती हू।"

मोहन और नीलम ने अपने गुस्से-गिले छोड आपस मे मिल-जुलकर रहने और आगरे जाने का फैसला किया। मोहन ने आगरे जाने की नीलम की बात मानी और नीलम ने चुप रहने और मोहन के साथ-साथ रहने की हामी भरी। शादी से एक हफ्ता पहले नीलम और मोहन आगरा पहुचे। नीलम ने अपने मन के गम अपने मन के भीतर ही छुपाए रखने ठीक समझे। नीलम खुश रहने की बहुत कोशिश करती रही।

मगर व्यक्ति के भीतरी मन की खुशी के बगैर असली खुशी होठों पर आती ही नहीं है, बनावटी खुशी की जितनी मर्जी कोशिशे की जाएं भीतरी मन की खुशी, असली आत्मिक आनंद और बनावटी खुशी अलग-अलग पहचाने जाते है।

एक दिन नीलम की मां गीता नीलम के अंदरूनी मन की पीडाओ को पहचानते हुए नीलम बेटी से दिल की बातें कहने लगी—"बेटी मैंने कुछ बातें तुझसे पूछनी हैं। मां का दिल मा का ही होता है। बेटी मेरी आत्मा कह रही है कि तू कोई बात मेरे से छुपाकर खुश नजर आने की कोशिश कर रही है मगर तेरे मन मे जरूर कोई गम छुपा हुआ है। बेटी अब तक तुम्हारी गोद सूनी क्यों है ? जब तक औरत मा नही बनती, उसकी कोख हरी न हो तब तक औरत अधूरी ही समझी जाती है। बेटी जो भी मुश्किल पेश आ रही हो वह मुझे बताओ। मा-बेटी ऐसी दुख-सुख की सब बाते आपस मे कर ही लेती है। एक मा अपनी बेटी का दुख दूर नहीं करेगी तो और कौन बेटी का दुख सुनेगा। मां-बेटी में कोई पर्दा नहीं होता। मेरे से कुछ भी छुपाने की कोशिश न करना।"

नीलम चुप रहना चाहती थी। मगर मां की आत्मा को तडपते हुए देख नीलम ने अपनी पूरी दुखभरी कहानी, अपने दिल के दर्द मा गीता को सुना ही दिये। नीलम के मन के अंदर छुपी कहानी मन से बाहर निकल आई। नीलम ने दुनिया से न्यारी अपनी नई कहानी अपनी मा को खुलकर सुना दी।

पूरी कहानी सुनकर नीलम की मां कहने लगी—"बेटी यह तो तुम्हारे साथ बहुत बेइंसाफी हुई है। ऐसी कहानी तो तुझे शुरू में ही हमें बता देनी चाहिए थी। हम कब से कोई फैसला ले लेते अब तो बहुत समय बीत चुका है बेटी तू धन्य

है। तुम तो इस घोर कलयुग के जमाने में भी साक्षात देवी का ही रूप हो। छोटी-छोटी कुआरी कन्याओं को कजका कहते हैं मगर तूने तो कुआरी रहकर यह सिद्ध कर दिया कि तुम भी किसी देवी का ही रूप हो। देवी मा के समान हो। तुम्हारी सहनशीलता की कोई सीमा ही नही है। हर एक चीज की कोई न कोई सीमा तो होती ही है। तुम्हारा सब्र तुम्हारी सहनशीलता सीमाओ से भी पार है। बेटी अब तो मुझे भी यही कहना पड रहा है कि बेटी अब बहुत देर हो चुकी है। बेटी अपना मन मारकर ही अपने देवता मोहन की पूजा करते रहना। सुना है भगवान के घर देर जरूर है—अधेर नही। उचित समय आने पर सब ठीक हो जाएगा।''

नीलम का मन कहने लगा कि नीलम अब वह उचित समय कम से कम इस जीवन मे तो आने से रहा।

कांता और शांति की शादी का दिन आया।

धनपत राय ने अपना दिल खोलकर बारातियो की सेवा की। खुशी-खुशी शादी की रस्मे पूरी की गई। काता और शाति की डोलिया विदा होने लगीं—स्पीकर पर टेप चालू हो गई—

आह लै माए साभ चाबिया धीया चल चलीया सरदारी।

कांता और शांति की आखो से टप-टप आसू निकलने लगे। मां गीता ने अपने मन पर काबू रखने की भरपूर कोशिश की मगर फिर भी वह अपना रोना फूटने से न रोक सकी। मा का रोना निकलने की ही देर थी—नीलम का मन भी भर आया। नीलम फूट-फूट कर रोने लगी।

बुजुर्ग औरतें नीलम और गीता को चुप कराने लगी।

गीता नीलम के गले मिल जार-जार रोती रही। मानो वह नीलम को कह रही हो—बेटी तेरी पीड़ा, तेरे मन के दर्द मैं अच्छी तरह समझ रही हू। असल मे मेरा रोना तो तुझे देखकर फूट रहा है। बेटी मैं तो अब तुझे सिर्फ दिलासा ही दे सकती हू। तेरी किस्मत को बदलना मेरे बस मे नहीं है।

नीलम ने ही अपनी मा से कहना शुरू किया—''मां चुप हो जाओ। अब तो तुझे खुश होना चाहिए। तुम मुझे दिलासा तो क्या दे रही हो—आप ही चुप नहीं हो रही हो।''

''बेटी ऊपर के मन से तो मै चुप हो ही जाऊगी। अब मेरी आत्मा तो तुम्हारी ओर से हमेशा दुखी ही रहेगी। दिल तो अब रोता ही रहेगा। बेटी जैसे तू अपना फर्ज निभा रही है ऐसे अपना नारी धर्म निभा पाना बहुत मुश्किल होता है। बेटी मुझे तेरी मां होने का गर्व है। अपने देवता की पूजा अर्चना ऐसे ही करते रहना। अब यह ही तेरा नारी धर्म है। सेवा का मौका भी किस्मत से ही मिलता है।''

''माताजी अब आप बेफिक्र होकर अपनी जिंदगी के बाकी दिन व्यतीत करो।

बेटिया अपने-अपने घर पहुंच गई है। अब तुम्हारी चिता खत्म हुई। आपके सभी फर्ज पूरे हो गए है। अब जल्दी भैया सुनील की भी शादी कर देना। आपको सुख-आराम मिलने लग जाएगा। भाभी आ जाए आप माला पकड लेना--सच्ची भक्ति करने लग जाना।''

''बेटी परमात्मा को क्या मन्जूर है हम क्या जान सकते है। मोहन बेटा देखने मे कितना सुदर है। हमने तुम्हारे लिए भी अच्छा ही सोचा था कि तुम सदा सुखी नजर आओ। मगर हम अदर के मोहन को कैसे पहचानते ? बेटी औरत जिन अरमानो को दिल में लेकर पिता के घर से विदा होती है--तेरे उन सभी अरमानो का कत्ल हुआ है। बेशक इसमे हमारा कोई दोष नही है। मगर तेरी कहानी जानकर मेरे मन के अंदर की आग अदर ही अदर सुलग रही है।'' मा का दिल फिर भर आया।

कुछ देर चुप रहने के पश्चात नीलम कहने लगी, ''मा मेरी किस्मत मेरे साथ है। हा मैं खुश हूं। मुझे कोई अफसोस नही है। मेरी किस्मत मे जो लिखा था वह ही मुझे मिला है। मैं अब बिलकुल समझ गई हूं कि विधाता के लिखे लेखों को कोई भी बदल नही सकता है। अगर मै ऐसे ही दुखी होती रहू तो फिर इसका मतलब होगा कि मुझे विधाता के लिखे लेखों पर गुस्सा-गिला है। मै विधाता की शक्ति को मान नहीं रही हूं। मां अब मैं माथे के लेख लिखने वाली माता की ही पूजा करती हू। माता ने मुझे सब्र-सतोष का दान बख्शा है। मैं अब पल-पल उस जगत पालनहारी माता का ही ध्यान करती हूं। उसका ही गुणगान करती रहूगी। इसलिए मा मेरी चिन्ता छोड़ो। अब मैंने परसों कॉलेज जाना है। इसलिए हमे कल ही दिल्ली वापस जाना है।''

मा-बेटी देर रात तक बाते करती रही।

दूसरे दिन सवेरे नीलम ने अपने पिताजी से दिल्ली जाने की आज्ञा मागी। मोहन और नीलम रेल पकडकर वापस दिल्ली पहुच गए।

दिल्ली पहुच नीलम चुपचाप रहने लगी।

मोहन नीलम की उदासी देख चितित रहने लगा। मोहन की सोच नीलम की उदासी देख बढने लगी। दिन-ब-दिन मोहन का मूड खराब रहने लगा। मोहन हर समय यह सोचने लगा कि नीलम ने जरूर अपनी मां को अपने दिल का भेद बता दिया होगा।

मोहन की अतर आत्मा उसे कहने लगी--मोहन तुमने बहुत बडा पाप किया है। तुझे ऐसा नही करना चाहिए था। अपने स्वार्थ के कारण किसी के दिल के अरमानों का कत्ल करना ठीक नहीं होता है। नीलम भर जवान थी--पूर्ण औरत थी। बस तुझमें कमी जरूर थी। अपनी झूठी लोक-लाज के लिए तुमने नाजायज ही नीलम

को कैद किया हुआ है। मोहन अपने आप से ही पूछने लगा--क्या मै आदर्श पति हू। क्या मै सपूर्ण मर्द हूं। शादी का क्या मतलब होता है जानते-बूझते हुए गलती करना सबसे बडा पाप होता है। ऐसी गलती तो माफ भी नहीं होती है।

नीलम फिर भी अपना पतिव्रत निभा रही है। मोहन की अतर आत्मा काप उठी--मोहन तुम अपने आप को शुद्ध घी साबित करना चाहते हो। मगर क्या यह सच तुम अपने आप, अपनी आत्मा से छुपा सकते हो। अपनी कमजोरियो को ढंकने के लिए नीलम के चाल-चलन पर संदेह उठा रहे हो, तुझे अपने किये पाप पर शर्म आनी चाहिए।

मोहन की अंतर आत्मा कहने लगी--मोहन तुम शादी के योग्य कहा थे। क्यो नीलम की जिदगी बर्बाद की है। मोहन के मन ने फिर अपनी आवाज ऊची की--आत्मा की धीमी आवाज को दबाना शुरू कर दिया। मन कहने लगा--मोहन तुमने बिना दहेज लिए नीलम से शादी कर बहुत पुण्य का काम किया था। अगर तुम नीलम के साथ शादी करने के लिए आगे न आते तो वह अब तक अपने पिता के घर मे क्वारी ही बैठी रहती। दूसरे तुमने नीलम को आगे पढ़ने का अवसर देकर उसे लैक्चरार बनाया है। एक ही पुण्य से सारे पाप धुल गए है।

पढ़-लिखकर नीलम की जिदगी सफल हो गई है। नीलम अपने सैक्स को कट्रोल कर हमेशा सुखी रहेगी। हिन्दू धर्म मे ब्रह्मचर्य का पाठ इसलिए ही पढाया जाता है कि आदमी आदमी से इन्सान बन सके, आदमी से हैवान न बने।

मन और आत्मा की आवाजें सुनकर मोहन अपने ही अंतरद्वन्द्व में घिर गया। इसी कारण से उसका व्यवहार पागलों जैसा होने लगा। उसे एक ही चिंता सताने लगी कि नीलम अभी भी भटक न जाए। मोहन नीलम की मिनट-मिनट की हर हरकत, हर कदम की रखवाली करने लगा।

नीलम मोहन को दिल से अपना देवता मानती थी। जिन बातो का मोहन को डर था--नीलम उन बातो को, अपने मनोवेगो को अपने अधीन कर चुकी थी। मोहन के बगैर वह एक पल भी अकेली नही रहना चाहती थी। मोहन ने नीलम के डर के कारण ही अपने दोस्तों, रिश्तेदारों को मिलना छोड़ दिया। दिन-ब-दिन मोहन का व्यवहार चिड़चिड़ा होने लगा। कभी-कभी मोहन अपने पर से ही कंट्रोल खोने लगा। वह नीलम को मारने-पीटने, धक्के-मुक्के मारने लग जाता। मोहन के व्यवहार के कारण सभी मोहन से दूर रहने लगे। मोहन का मन कहता--सांप को पिटारी मे बन्द करने से उसका विष खत्म नही हो जाता। पिटारी से निकलते ही आजाद होते ही वह फिर डक मारता है। प्राय. मोहन नीलम के सामने अपनी बढाई आप करने लग जाता, "नीलम पूरी दुनिया मे बस एक मै ही अवगुणों से दूर हू। और पूरी दुनिया अवगुणों से भरी पड़ी है। इसलिए तुम खुशकिस्मत हो जिसे मेरे जैसा

पति मिला है।''

नीलम व्यग्य से कहती--''तुम्हारे जैसा मर्द दुनिया में ढूंढ़ने से भी नही मिल सकता--बस आप ही एक मर्द हो। गम खाना, कम खाना हर एक के वस मे नही होता--मैं अपने गम हिम्मत करके पी तो लेती हू।''

मोहन नीलम का व्यग्य समझकर एक ही चुप्पी पकड़ लेता। नीलम का मन उसे प्रेरित करता कि नीलम हिम्मत से सभी बधन तोड डाल। नीलम मनोवेगो की भावुकता मे मोहन से बगावत करने के लिए तैयार हो जाती।

नीलम की आत्मा की आवाज फिर मन की आवाज को दबाने लग जाती--नीलम रुको, सोचो--कोई गलत कदम न उठाना। लोग क्या कहेगे ? घर से बाहर निकली औरत की क्या इज्जत है। सभी बुरी नजरो से देखेगे। मन फिर जोर पकड़ता--नीलम आत्महत्या करने वाले कितने बहादुर होते है। फौरन आजाद हो जाते है। नीलम की आत्मा आवाज देती--नीलम सब्र का दान किस्मत से मिलता है--जो तुझे मिला हुआ है। यौवन कुछ समय पश्चात ढल जाएगा--तुझे फिर कौन पूछेगा। सोचते-सोचते नीलम को नीद आ गई।

नीद मे नीलम बडबड़ाई--काटे हमेशा लम्बी उमर भोगते हैं--नीलम तुम्हारी जिदगी कांटो की भाति ही है।

मोहन ने करवट बदली और नीलम को चीखकर डाटने लगा, ''क्या मेरे खिलाफ कुछ योजनाए सपने मे सोच रही है।''

नीलम का भरा मन उछल पडा, ''मैंने क्या योजना बनानी है। मेरी जिदगी बर्बाद करनी थी सो कर दी है। मै कोई पत्थर की मूर्ति नहीं एक सपूर्ण औरत हू। मेरे भी अपने कुछ अरमान है। पूरी दुनिया वेवकूफ है--एक आप ही अकलमद हो। मेरे से हमेशा दूर ही रहे हो। कोई और औरत होती तो कब की तुम्हे सीधा कर देती। सीधे रास्ते पर ना आते तो साथ छोड जाती।''

''नीलम क्यो ड्रामे कर रही है। एक मैं हू जिसने तुझे अपने पैरों पर खडा कर दिया। भूल रही है मेरे उपकारो को ? तुम्हारे जैसी वर्ना सड़को पर रोड़ी फोड रहीं होती है। धक्के खाती फिर रही होती है।''

''हां, हां तुम ठीक कह रहे हो--तुम तो धर्मात्मा हो--अगर आने वाले समय की कोई चिता होती तो कम से कम किसी का बच्चा ही गोद ले लिया होता। अब बुढापे मे हमें कौन संभालेगा।''

''नीलम यह बात तुम सीधे मुंह भी कह सकती थी। मै आज ही मालूम कर लूगा कि बच्चे कहां से गोद मिलते है। पहले मै अपने भाई से ही एक लड़का माग लेता हू। सबसे छोटा बेटा अभी दो वर्ष का ही है। वह हमारे पास रह जाएगा। अपनी जायदाद भी घर की घर मे ही रह जाएगी। कितनी मेहनत से हमने यह अपनी

काठी बनाई है। भाई और भाभी भी खुश हो जाएंगे।"

"जी ऐसे कोई अपना बच्चा नहीं देगा। क्या आपने बच्चों को भी बाजार की वस्तु समझ लिया है। मैं तो आपके गए गुजरे खानदान को अच्छी तरह जानती हू। आप जिंदगी भर कोई बच्चा गोद नहीं ले सकेंगे। यह मेरे दुखी मन की सच्ची आवाज है।"

"बेशर्म मेरे खानदान को बुरा भला कह रही है। तेरे जैसी बडबोली को हमारे जैसा खानदान ही रख सकता है। तू बहुत मनचली और त्रिया चरित्र दिखाने वाली औरत है। अब मैं तुम्हारी चालें समझ गया हूं। मेरी जायदाद तू अपने कमीने भाई-भतीजों को देना चाहती है। मैं भी अब उन सालों को यहा फटकने नही दूगा। मुझे क्या जरूरत है कहीं भाग दौड़ करने की। दफा हो मेरी आखों के सामने से। मेरे भाई-भतीजे, मेरा अपना खानदान अपने आप हमे बुढापे मे संभाल लेंगे। पानी से खून हमेशा गाढ़ा होता है। हरामजादी! अब मेरी नीद खराब न कर—मुझे सोने दे।"

एक झूठ छुपाने के लिए व्यक्ति को और भी सौ झूठ बोलने पड़ते हैं। कोई कमी मोहन को अदर ही अदर परेशान कर रही थी। अपनी कमजोरी का इलाज करवाने की बजाय मोहन ने सन्यासी बन जाने का नाटक शुरू कर दिया। मोहन लोगों को कहने लगा कि भक्त कबीर साहब गृहस्थी होते हुए भी ब्रह्मचारी ही थे। यह बात मोहन बहुत आसानी से कह देता। जैसे कि लोग बेवकूफ हों।

प्राय: मोहन स्वामी विवेकानद की लिखी किताबे पढ़ता रहता। हर एक मिलने वाले को मोहन बताने लग जाता कि मै मास-मछली या किसी भी विलासिता की वस्तुओं को कभी हाथ नहीं लगाता हू। मे ससार मे रहते हुए भी संन्यासी ही हू। मोहन यह बाते अपनी सच्ची कहानी को छुपाने के लिए ही कह देता था।

सच को छुपाने की कोशिश करता मोहन हीन-भावना का शिकार हो गया। मोहन के मन के अदर दुविधा रहने लगी। मोहन सोचने लगा कि क्या लोग मुझे देवताओं के समान समझ रहे होगे। या फिर लोग मूर्ख ही समझते होंगे। मोहन का मन कहता कि लोग-बाग तो देवता ही समझ रहे होंगे। फिर मोहन का अपना वही मन कहने लगा—नही! लोग शुद्ध घी की पहचान अपने ढग से कर ही लेते है। अगर शुद्ध देशी घी अग्नि के पास भी न पिघले तो क्या उस घी को लोग शुद्ध मान सकेंगे। गृहस्थियों के बच्चे अवश्य होते हैं। अगर न हों तो लोग समझ ही जाते है कि मियां-बीवी दोनों मे से एक में जरूर कोई खोट होगी। भगवान राम के भी बेटे थे लव-कुश। शादीशुदा व्यक्ति के बच्चे पैदा न हुए तो लोग क्या नही समझ रहे होगे। लोग मुझे भी मूर्ख समझते होगे।

भाति-भाति के विचार मोहन के मन मे आने लगे।

कभी-कभी मोहन अपने आप को ही फटकारने लगता—तुमने नीलम से शादी करके अच्छा नहीं किया है। कितना अच्छा होता अगर दुनिया को बाल-ब्रह्मचारी बनकर नजर आते। अब तुम लोगो की नजरो मे भोगी गृहस्थी हो। वैसे असलियत मे बचपन से ही ब्रह्मचारी हो।

सोचते-सोचते मोहन अनजानी दुनिया मे पहुच जाता। मोहन अपने आपको दुनिया से कटा-कटा-सा महसूस करने लगा—मुझे तो संन्यासी ही होना चाहिए था। मोहन की इस दुविधा ने नीलम को और बेचैन कर दिया। बेचारी नीलम के लिए और परेशानिया खडी हो गई।

मोहन बगैर कारण से ही किसी न किसी के साथ झगडा करने लगा। जब कभी नीलम और मोहन कहीं टैक्सी लेकर जाते टैक्सी का किराया देते समय मोहन टैक्सी ड्राइवरों से झगडने लग जाता।

आस पडोस, दोस्तो, रिश्तेदारो मे मोहन अपने ऐसे व्यवहार के लिए बहुत बदनाम हो गया।

कोई भी व्यक्ति मोहन से बात तक करके खुश नही था।

दिन-ब-दिन नीलम का मोहन के साथ घर से बाहर निकलना मुश्किल होने लगा।

प्राय: मोहन और नीलम टैक्सी कॉलिज के सामने वाले टैक्सी स्टैण्ड से ही लिया करते थे। सभी टैक्सी-ड्राइवर मोहन के चिडचिडे स्वभाव से तग होने लगे थे। मोहन के साथ-साथ नीलम की जान-पहचान भी टैक्सी ड्राइवरो से हो गई थी।

जब कभी मोहन टैक्सी के किराए के कारण झगडा करता नीलम चुप-चुपाते टैक्सी का किराया आप दे देती। इसलिए मोहन की निगाहे बहुत सदेही होने लगी। प्राय मोहन उसे ड्राइवरो की बुरी आदतो से अवगत कराता रहता—

"नीलम, यह साले टैक्सी ड्राइवर बहुत बदनाम होते हैं। क्योकि इनकी निगाहे अच्छी नहीं होती है। यह लोगों की बहू-बेटियो को टेढी नजरो से ही देखते है।" मोहन के अपने मन मे नीलम की फिक्र थी। मोहन नीलम का बहुत ध्यान रखने लगा कि नीलम टैक्सी ड्राइवरो से ऐसी-वैसी बातें तो नही करती।

गुस्साया हुआ मोहन एक दिन नीलम को डाटने लगा, "नीलम तुम टैक्सी का किराया मुझसे पूछे बगैर क्यो देती हो ? क्या तुम मुझे जीते जी मुर्दा समझने लगी हो ?"

मोहन की ऐसी फालतू बातें सुनकर टैक्सी ड्राइवरों ने मोहन और नीलम को टेक्सी देनी बन्द कर दी। सभी टैक्सी ड्राइवर मोहन के व्यवहार से तग आ गए।

मोहन के व्यवहार के कारण दुखी हुई नीलम ने राकेश की टैक्सी महीने के

हिसाब से किराया पूछकर पक्की ही अपने साथ लगा ली। टैक्सी का किराया एडवास ही नीलम राकेश को मोहन के आगे-पीछे ही दे देती। नीलम ने मोहन को ऐसे ही विश्वास दिला दिया कि राकेश अपनी मर्जी से उनकी फ्री सेवा कर रहा है क्योंकि आप अच्छे व्यक्ति हो।

राकेश ने भी नीलम की बात को बल देते हुए कहा, "बाबू जी आप तो देवता हो इसलिए मै आपकी फ्री सेवा करता रहूगा। कभी आपका मन हो तो पैट्रोल का खर्चा दे देना।"

राकेश की नीयत पर सदेह करता हुआ मोहन कभी-कभी भावुक हो उठता—फ्री सेवा ? मैं कोई पहुचा हुआ साधू-सत भी नही हूं। यह कोई नीलम की नई चाल हो सकती है। कही दाल मे कुछ काला तो नही आ गया है। कहते है कि ओरतो मे चार सौ बीस चरित्र होते हैं। मुझे नीलम और राकेश पर नजर रखनी चाहिए।

समय अपनी चाल से चलता रहा। मोहन की चिंता बढती ही रही। इस घोर कलयुग मे फ्री सेवा ! टैक्सी ड्राइवर को और क्या लालच हो सकता है। एक गरीब टेक्सी ड्राइवर फ्री सेवा करता रहे तो उसके बच्चे खाना कहा से खाते होंगे। मोहन दिन-ब-दिन सोच मे डूबा रहने लगा।

नीलम ऐसे-वैसे समय व्यतीत करती रही। सब कुछ सच होने के बावजूद उसकी किस्मत मे झूठ की भाति रोल करना ही लिखा था। अब नीलम को अपनी मा के कहे शब्द याद आने लगे—"बेटी क्या तू जानती है कि तुम्हारी किस्मत मे क्या लिखा हुआ हे।" भगवान आपने मेरी किस्मत कैसी लिखी है। नीलम फिर अपने ही मन को समझाने लग जाती—अब किया क्या जा सकता है। जैसे भगवान को अच्छा लग रहा है—वैसे ही ठीक है। किस्मत के लिखे लेखो को कैसे टाला जा सकता है। अब यह लेख मिट भी नहीं सकते है।

एक तो नीलम को नाटक मडली की भाति मोहन की पत्नी होने का रोल करना पड रहा था—ऊपर से मोहन नीलम को ज्यादा ही संदेह भरी निगाहों से देखने लगा। मोहन नीलम को दुनिया की निगाहों से छुपाकर रखना चाहता था। नीलम अपनी ही कल्पनाओ मे खोई-खोई रहने लगी। जिदगी मे उसे दुख ही दुख मिलते रहे—सुखों की तो बस यह कल्पना ही कर सकती थी। फिर भी नीलम खुश रहने की कोशिश करती रहती। नीलम हमेशा लोक-लाज से डरती रहती। नीलम दुनिया की नजरो में आदर्श पत्नी थी। नीलम की लोक-लाज कायम थी—बस यह ही उसके जीने का एक सहारा बाकी था।

प्राय: मोहन और नीलम की नोक-झोंक होती रहती।

अब नीलम का मन भी लडने के लिए बहाने ढूंढ़ने लगा। नीलम का मन अब दुखी रहने लगा। नीलम ऐसी जिदगी जीते-जीते तग हो गई थी। नीलम मोहन की कैद से निकल भाग जाना चाहती थी। परतु अब बहुत देर हो चुकी थी। बगावत करने की उम्र व्यतीत हो चुकी थी। नीलम फिर अपने मन को समझा-बुझा शात कर सोचने लग जाती—अब मै क्या बगावत कर सकती हू। जब कभी भी नीलम को अपने आप पर ज्यादा ही गुस्सा आता वह आने-बहाने मोहन से लडने लग जाती।

जब ज्यादा गुस्सा आता तो वह अपने मन को समझाने लग जाती—अभी भी तुझे मोहन का ही धन्यवादी और अहसानमंद होना चाहिए। मोहन ने तुझसे शादी की, तुझे आगे पढ़ने का अवसर दिया—अपने पैरो पर खडा किया। अब तुझे अपनी रोजी-रोटी का तो फिक्र नही है। साहब मोहन तो अपनी मन.स्थिति के कारण बेबस हे। इनकी मन स्थिति समझते हुए पति-परमेश्वर की सेवा करनी ही उचित है। नीलम का मन कभी-कभी मोहन के लिए मोम की भाति पिघलने लग जाता। नीलम अपने मन को समझाती—अगर इनकी चिता और बढ गई तब मेरे लिए और मुसीबते खडी हो जाएंगी। फिर मैं इन्हे कैसे संभाल पाऊगी। सभी कुछ सोच-विचार कर नीलम अपने पति-परमेश्वर की सेवा तन-मन से करने लग जाती। खाली समय मे धार्मिक किताबे पढने लग जाती।

नीलम की जवानी ढलने लगी। मगर मन के अरमान तो मन मे ही थे। कहते है कि मन तो कभी बूढ़ा नहीं होता है। बूढा तो यह शरीर ही होता है।

माया मरे न मन मरे,
मर मर गए शरीर।
आशा तृष्णा ना मरे, कह गए भक्त कबीर।

एक दिन नीलम गहरी नीद सो रही थी—सपने मे उसे अपने कॉलिज के दिन नजर आने लगे। नीलम की सहेली सजना कह रही थी—नीलम, अपना उल्लू सीधा रखो। इस दुनिया मे तो सीता सावित्री जैसी भी बदनाम हुई थी।

कुछ राते नीलम को ऐसे ही ऊट-पटाग सपने नजर आते रहे। नीलम को ऐसे ही सपने नजर आ रहे थे—सुवह होने वाली थी। नीलम का मन और सपने देखने मे लगा हुआ था।

मोहन नीलम को बेफिक्री से सोते हुए देख पागलो की भाति चीखते हुए नीलम को डांटने लगा, "क्या तू अभी बच्ची है ? ऑफिस जाने का समय हो रहा है—अभी तक उठी नहीं है।"

नीलम का मूड सुबह-सवेरे ही बहुत खराब हो गया। नीलम भी मोहन पर टूट पडी, "जल्दी उठकर मैने तुम्हारा क्या मातम करना है। पूरी उम्र व्यतीत हो गई है तुझे ना लाज शर्म है न ही तुझे मृत्यु आ रही है नीलम उठने में वाकई बहुत

लेट हो चुकी थी। नीलम बुड-बुड़ करते हुए जल्दी-जल्दी हाथ-मुह धोकर तैयार होने लगी।

राकेश अपने समय पर अपनी टैक्सी लेकर घर आया। गुस्से से भरे मोहन ने भी अपनी दफ्तर की कुछ फाइले उठाई और दफ्तर जाने को तैयार हुआ।

नीलम राकेश से कहने लगी, "राकेश आज पहले इन्हे दफ्तर छोड दो।"

राकेश ने पहले मोहन को दफ्तर छोड दिया। फिर नीलम ने उसे अपने कॉलिज चलने के लिए कहा।

नीलम का मूड अपसेट देखकर राकेश ने हौसला कर पूछ ही लिया—"मैडम जी आज आपका मूड बहुत खराब नजर आ रहा है।"

नीलम भरे मन से कहने लगी, "राकेश तुझे हमारे साथ चलते हुए कितना समय बीत चुका है। क्या तुमने हमे कभी किसी ब्याह-शादी मे जाते हुए देखा है। नही देखा होगा। आज हमारा मन बहुत दुखी है। जब मन ऐसे दुखी हो तो किसी न किसी से तो मन की बात बताकर मन का गुबार निकालना ही पड़ता है—अगर कोई सुनने वाला हो, न हो तो रो-रोकर ही मन हल्का करना पडता है। परतु मैं ऐसी अभागन हूं कि जो न तो रो ही सकती हू और न ही अपने मन के दर्द किसी को बता सकती हू। मेरा अपना ऐसा कोई भी हमदर्द नही है जिसके पास मै अपना दुख बताकर अपना मन हलका कर सकू।

इतनी बडी दुनिया मे मेरे रोने के लिए भी कोई जगह नही है। राकेश, मुझे गलती से, भूले से गलत मत समझना। तुम पाच-सात वर्षो से हमारे साथ चल रहे हो इसलिए ही मै तुझे अपना हमदर्द समझकर तुम्हारे सामने थोड़ी भावुक हो गई हू। वैसे नही तो मन अदर ही अदर रो रहा है। मै अपनी आंखो में आसू भी नही ला सकती हूं।"

"मैडम जी आपका मूड खराब देखकर ही मैने आपके दुखी होने का कारण पूछा है। बिना किसी कारण ऐसे तो व्यक्ति का मूड खराब होता ही नही है। कहा आप पढे-लिखे व्यक्ति और कहां हम अनपढ लोग। इससे पहले तो मैंने कभी आप के साथ फालतू कोई बात बोली ही नही है। आपको घर से कॉलिज और कॉलिज से घर पहुचा सीधे अपने स्टैण्ड पर चला जाता हूं।"

"राकेश आज मै अपने दिल के दर्द तुझे अपना छोटा भैया समझ कर बता रही हू। ऐसे मेरे मन का भार कुछ हल्का हो जाएगा। मेरे मन में बहुत गुबार भरे पडे है। दुनिया मे कितने ही जोडे नि:सतान होते है। हमारी भी अपनी कोई सतान नही है। मगर साहब जी हमारी कोई बात मानते ही नहीं है। आज सवेरे मैंने यही बात बोली थी कि साहब जी जब अपनी कोई संतान नही है तो किसी का बच्चा गोद ले लो। साहब 'मैं न मानू' की रट लगाते रहे—मुझे गुस्सा आ गया। मेरा गुस्सा

भी बस ऐसे ही बढ गया। अब मै महसूस कर रही हू कि मुझे भी थोडा धीरज से काम लेना चाहिए था। वैसे मै यह ही सलाह दे रही थी कि बुढ़ापे का कोई सहारा तो नजर आए। कोई आशा चाहिए।"

नीलम भावुकता के वेग मे ऐसी-ऐसी बातें राकेश को बताने लगी जिन्हे सुनकर राकेश हैरान होने लगा—नीलम की बाते सुनकर राकेश के मुह से यही निकला, "मैडम जी आप धन्य हैं। हा, जहा तक बच्चा गोद लेने की बात है मै कल ही मोहन साहब से सलाह कर किसी का बच्चा गोद दिलवाने की कोशिश करूंगा।"

दूसरे दिन राकेश मोहन से बाते करते-करते साफ-साफ कहने लगा—"साहब जी, मैडम जी की बच्चा गोद लेने की सलाह आप अवश्य मान लो—उनके मन को भी शांति मिल जाएगी। आशा-उम्मीद के सहारे ही जिदगी के दिन व्यतीत हो जाएंगे।"

मोहन सदेह भरी निगाहों से राकेश को देखते हुए पूछने लगा, "मैडम ने बच्चा गोद लेने की बाते तुझ से कब की है।"

"जी मैडम जी कह रही थी कि साहब जी किसी का बच्चा गोद नहीं ले रहे। तुम साहब जी से बोलना कि आप किसी का बच्चा गोद अवश्य ले लो।"

"राकेश तुमने ऐसी बाते मैडम से किस समय की है ?"

"जी आप उल्टा-सीधा सोचने की बजाय किसी का भी बच्चा गोद लो—इसमे ही आपकी भलाई है।"

"अच्छा अब तू मैडम का हमदर्द बनकर मुझे समझ-बेसमझ की बातें सिखाने लगा है। अब मैं समझा कि नीलम क्यो उखडी-उखड़ी-सी बाते करने लगी है। मेरे सामने कैंची की भाति अपनी जबान चलाने लगी है। लगता है कि तू मुझे बुद्धू बनाने की कोशिश में लगा हुआ है। मुझे बेवकूफ बना रहा है—फ्री सेवा—साला बदमाश। अब मेरी तुम्हे यह आखिरी वार्निंग है कि हमारे घर कभी मत आना। तेरी यह मनहूस शक्ल मुझे कभी नजर नही आनी चाहिए। जा दफा हो यहा से। आया है हरामी फ्री सेवा करने वाला। त्रिया चरित्र बनाकर मालूम नहीं साले कमीने को कितने पैसे चोरी-छुपे देती रही होगी।"

राकेश को मोहन से ऐसी सुनने की क्या आवश्यकता थी। राकेश गुस्से मे उठकर घर से बाहर की ओर चल पडा। वह फिर कभी नीलम के घर नही गया।

बुजुर्ग कहते हैं कि कुएँ से कुआँ कभी नही मिल सकता, व्यक्ति को व्यक्ति तो मिल ही जाते है। कभी न कभी किसी न किसी मोड पर व्यक्ति का व्यक्ति से मेल हो ही जाता है।

अचानक एक दिन नीलम की मुलाकात अपनी ही प्यारी सहेली सजना से अपने ही कॉलिज में हो गई। आखों के सामने खडी सजना को देखकर उसे यकीन ही

नहीं हो रहा था कि उसकी प्यारी सहेली ही उसके सामने खड़ी है नीलम का मन अभी भी यही कह रहा था कि नीलम, तुझे बहुत बड़ी भूल हो रही है।

सजना नीलम को पहचान फट से नीलम को गले लग मिली। दोनो सहेलिया एक-दूसरी की ओर देखती ही रह गई।

हैरान हुई नीलम सजना से कहने लगी—"सजना, यार आज सूरज पश्चिम से कैसे निकल आया है। किस्मत ने आज हमे कैसे मिला दिया है। मुझे तो यकीन ही नही हो रहा था कि सामने मेरी जान, मेरी प्यारी बचपन की सहेली सजना ही खडी है।"

"मै तो तुझसे पहले ही कहा करती थी कि अगर दिल में सच्चा प्यार हो तो भगवान कभी न कभी मिला ही देता है। आज किस्मत ने हमें कैसे मिला दिया है। आज मुझे ऐसा लग रहा है जैसे यह ससार ही बहुत छोटा हो गया है।"

"जैसे आगरे और दिल्ली की दूरिया समाप्त हो गई हो।"

"यार नीलम, पहले यह तो बता कि तुम यहां कैसे हो—यहां रैगुलर हो या आन डैपुटेशन आई हुई हो। मेरा तो यहां अभी स्थानातरण हुआ है। तुम अपना हाल सुनाओ कहां रहती हो ?"

"सजना, मेरी प्यारी सहेली ! आज किस्मत ने हमेशा-हमेशा के लिए फिर मिला दिया है। मैं पहले से ही यहा पढा रही हू। यही टीचर्स फ्लैट्स मे रहती हू। मेरे फ्लैट का नबर आठ है।"

दोनो पुरानी सहेलिया बात करती रहीं।

नीलम ने सजना की जान-पहचान अपने स्टॉफ मैम्बरो से करवाई।

किस्मत के करिश्मे है सजना को भी नीलम के साथ का ही फ्लैट अलॉट हुआ। किस्मत ने अजीब सयोग बनाया। अलीगढ यूनिवर्सिटी में इकट्ठी पढने वाली सहेलियां दिल्ली यूनिवर्सिटी पहुंच लम्बे समय पश्चात एक-दूसरे के नजदीक आ गई। उन्होंने कभी ऐसे संयोग की कल्पना भी नहीं की थी। उन्होंने कभी सोचा भी नही था कि एक दिन किस्मत उन्हें ऐसे मिला देगी। दोनो सहेलिया बहुत खुश हुई। नीलम तो कुछ ज्यादा ही खुश नजर आ रही थी—क्योंकि अब उसे कोई अपना हमदर्द मिल गया था। नीलम सोचने लगी कि अब मै अपने दिल के दर्द अपनी सखी के सामने प्रकट कर अपना दिल तो हल्का कर ही लूगी। मन में दबी हुई बातें संजना को कह पाऊंगी।

एक दिन संजना नीलम के घर नीलम से मिलने आई। सजना को भी इतनी दूर दिल्ली मे कोई अपना मिल गया था। कहा दिल्ली कहां आगरा—यहां नीलम जैसी सखी का मिल जाना कुदरत का ही करिश्मा था। नीलम ने सोनू को चाय बनाने के लिए बोला और दोनो सहेलियां घुल-मिलकर बातें करनी लगीं। सजना कहने लगी,

नीलम, किसी ने ठीक ही कहा है खूब गुजरेगी जब मिल बैठेगे दो पुराने दिलदार।"

नीलम ने सजना की खूब सेवा की फिर सजना की जान-पहचान अपने देवता मोहन से करवाने लगी।

मोहन बुझा-बुझा चिंतित नजर आ रहा था। दोनो सहेलिया खुश नजर आ रही थी।

सजना जो शुरू से ही अपने स्वभाव से ही हसमुख थी और बड़बोली थी, कहने लगी—"जीजा जी आप तो बहुत गम्भीर स्वभाव के नजर आ रहे हो—कोई टोटका नही सुनाओगे।"

मोहन मुह से एक लफ्ज भी न बोल पाया।

सजना फिर नीलम से पूछने लगी—"नीलम, तुम्हारी फुलवाड़ी नजर नहीं आ रही है।"

नीलम कहने लगी, "सजना मै तेरी बात समझी नही हू कि फुलवाड़ी किस उद्देश्य से कहा है ? फुलवाडी तू किसे कह रही है ?"

"ओह-हो नीलम तू भी कमाल की औरत है—मै तो यह पूछ रही हू तेरे बच्चे कहा गए हुए है।"

"सजना पहले तुमने हमे यह तो पूछा ही नही है कि हमारे कोई बच्चा है या नही। सजना हमारे एक भी बच्चा नहीं है। तुमने ऐसे ही फुलवाड़ी कैसे समझ लिया है।"

"सौरी नीलम बस मै भी ऐसे ही हू। मेरे स्वभाव को तो तू जानती ही है। साफ-साफ बात मुह पर कह देने की मेरी आदत है। जो बात मन मे आई फौरन कह दी। असल मे नीलम मेरे अपने चार बच्चे हैं। तुम्हारी शादी तो हमारे से भी पाच वर्ष पहले हुई थी। इसलिए मै यही समझी थी कि तेरे भी कम से कम पांच-छ बच्चे तो जरूर होगे।"

नीलम का मुरझाया चेहरा देखकर सजना कुछ कहने वाली थी—तभी मोहन सजना को डाटने लगा—"तुम कैसी औरत हो, हम कोई अनपढ़-गंवार या जानवर है जो तुमने हमारे बच्चो की कल्पना की है। हमने तो एक भी बच्चा पैदा नही किया है। देश में गरीबी है, बेरोजगारी है—समझदारी तो यह है कि हम अपने समाज पर और वजन न बढाएं। जहा तक कोशिश हो बच्चे पैदा ही न किए जाए।"

"माफ करना जीजा जी गलती हो गई है—आपका मन दुखाया है। नीलम बहन मेरी बचपन से ही सहेली है। हम एक-दूसरे के दिलो के भेद जानती है। मै तो बहुत ही ओपन माइंड की औरत हू—स्पष्ट बात मुह पर ही कह देती हूं। यह ही तो कारण है कि मैं नीलम से खुलकर बातें करने लगी थी। परतु कुदरत ने आपसे बहुत बेइंसाफी की है। शादी हुए इतने वर्ष बीत जाने पर भी आपकी अपनी

कोई सतान पैदा नही हुई है। आपको कुदरत का भरोसा छोड अभी भी डॉक्टरी चेकअप करवाना चाहिए। साफ-साफ कारणो की जड पकड़ मे आ जाएगी कि संतान क्यो नही हो रही। यह मेरा आप दोनो को सुझाव है। अपनी पहली गलती के लिए माफी चाहती हू।''

''माफी वह भी तुझे। कान खोलकर सुन--तू कभी नीलम से फालतू बात नही करेगी। तुम्हारी बोल-चाल और विचार अनपढ-गवार औरतो जैसे नजर आ रहे है। अब मै और ज्यादा बर्दाश्त नही कर सकूगा। हमे डॉक्टरी की सलाह देने वाली तुम कोन होती हो। मै किसी भी बात से अनजान नही हू। मुझे सभी कुछ ज्ञान है। मे यह भी जानता हू कि मुझे क्या करना चाहिए। अच्छी भाति कान खोलकर सुन ले--अपना अनुभव, अपना ज्ञान नीलम को बताने की कभी दुबारा कोशिश न करना। मैने तेरा ज्ञान, तेरी बुद्धि को पहचान लिया है। तुम बहुत पुराने और घटिया विचारो वाली हो। अनपढ-गवारों की भाति एक मशीन बनकर बच्चे पैदा करने पर लगी हुई हो। भई तुम औरत हो, कोई बच्चे पैदा करने वाली मशीन तो नहीं हो--जो हर वर्ष ही एक बच्चा पैदा करने का काम कर रही हो।'' मोहन नीलम को भी डाटने लगा।

संजना उदास होकर घर से बाहर की ओर चल पडी।

''जी आपने अपने घर आई मेरी सहेली की बहुत ज्यादा बेइज्जती कर दी है। आपने अच्छा नहीं किया है। अपने आप को पढ़े-लिखे समझदार समझ रहे हो--सच्ची बात हमेशा कडवी लगती है। अब तुमने आगे कभी ऐसी गलती फिर की तो मुझसे बुरा कोई न होगा। आज की गलती के लिए तुम्हे उससे माफी मागनी होगी।''

''क्या कहा माफी मागू--वह भी उस औरत से जो पढी-लिखी होकर भी चार बच्चे पैदा कर बैठी है। मुझे तो वह बहुत नीच ख्यालों की औरत नजर आ रही है। मै यह बिलकुल नही चाहता कि तुम उससे मिलो-जुलो। वह तो बिलकुल अनपढो जैसी मालूम पड रही है। भगवान की कृपा समझकर पुरानी बूढी औरतो की भाति बच्चे पैदा करती जा रही है। वह तो तुझे भी उल्टा पाठ ही पढाएगी। ऐसी बड़बोली से दूर ही रहना।''

''जी मैं आपकी बहुत बकवास सुन चुकी हूं। अब तक तो मैं खमोश रही हू। अगर कभी फिर ऐसी बकवास की तो मैं चुप नहीं रह सकूंगी। मेरी बातो को ध्यान लगाकर सुन लेना--वर्ना आप बहुत पछताओगे।''

दूसरे दिन कॉलिज पहुंचकर नीलम संजना से आप जाकर मिली।

''बहन कल की घटना को माइड न करना। मेरे साहब कुछ ऐसे ही है। कल उनके द्वारा कहे अपशब्दो के लिए तुमसे माफी चाहती हूं। सजना मैं तुम्हें कैसे बताऊ

मे ऐसे व्यक्ति के साथ कैसे जिंदगी के दिन बिता रही हू। कल उनके द्वारा कहे अपशब्द मुझे आप बुरे लगे है। संजना ऐसे कमीने व्यक्ति की क्या-क्या बाते मे तुझे बताऊ। हम तो पुरानी सहेलिया है।"

"नीलम तुम क्यो इतना फील कर रही हो--इसमे तुम्हारी क्या गलती है। हा यह मै समझ गई हू कि तेरे साहब तो बहुत घटिया स्वभाव के मालिक हैं। बहुत कडवे स्वभाव के हैं। उन्हे तो बोलने की भी कोई तमीज नही है। जो मुह मे आया बक दिया। मुझे तो अब उलटा तुम्हारी हालत पर तरस आ रहा है। तुम कितनी साधारण और साफ दिल की मालिक हो। तुम ऐसे कडवे स्वभाव के व्यक्ति के लायक बिलकुल नही थी। तुम्हारे साथ कुदरत ने बेइसाफी की है।"

नीलम भरे मन से कहने लगी--"सजना, अभी तुमको उनके बारे मे क्या जानकारी है। अगर मैं तेरी भाति स्पष्टवादी होती तो ऐसे व्यक्ति से कब का किनारा कर तलाक ले लिया होता। तुम तो शुरू से ही जानती हो कि मुझे घुट-घुट कर मरने की आदत है। कोई भी बात मै मुंह चढ़कर कह नही पाती हू। मै अपना दुख किसी को बताना भी नहीं चाहती हूं। तुमने कल हमारे बच्चे पूछे थे। तुम्हारे सवाल का जो जवाब साहब ने दिया था--वह तो तुमने सुन ही लिया था। शायद तुम समझ भी गई होगी।

मेरी सच्ची कहानी तो पूरी दुनिया से अलग है। यह दुनिया मेरी कहानी को सच भी नही समझ सकेगी। अगर मैं अपनी कहानी किसी को सुनाऊ भी तो कोई इसे सच नही मान सकेगा। मेरी इस सच्ची कहानी को भी दुनिया मनघड़त कहानी ही समझेगी। मेरी किस्मत मे सब कुछ सच होते हुए भी झूठ जैसा रोल लिखा हुआ है। तुम मेरी प्यारी सहेली हो मगर लगता है तुम भी मेरी कहानी को सच नही मान पाओगी। यही कारण है कि मैं अपनी कहानी पूरी दुनिया से छुपाकर ही रखना चाहती हूं। मै नही चाहती कि मेरी सच्ची कहानी सुनकर दुनिया वाले उलटे मुझे ही सदेह की निगाहो से देखने लगे कि ऐसे तो हो ही नही सकता है। लोग सोचेगे कि नीलम ही गलत कह रही है।"

"नीलम इसका मतलब हुआ कि तुम अपनी कहानी मुझसे भी छुपा कर ही रखना चाहती हो। ऐसा करना तो फिर तुम्हारे लिए उचित नही होगा। मै तुम्हारी हमदर्द हू। हो सकता है कि तुम्हारी मुश्किल मै आसान कर सकू। तुम्हारी उलझन सुनकर मैं उसका समाधान कर सकती हूं।"

"सजना अगर यकीन करोगी तो सुनो--जब से हमारी शादी हुई--बस हम लोगो की निगाहो मे ही पति-पत्नी हैं। शादी हुए इतने वर्ष बीत जाने पर भी मै अभी वही नीलम--कंवारी नीलम ही हूं जो तुम्हारे सग कॉलिज के दिनों पढ़ा करती थी। साहब तो बस साधू ही हैं पक्के ब्रह्मचारी हैं सचमुच के देवता हैं आज के कलयुगी

साधू भी बस नाम के ही साधू होते है वैसे तो कर्म कुकर्म सभी करते है तुमने भी अखबार मे बहुत सी गंदी खबरें पढ़ी होगी कि फलाना साधू फलानी औरत परतु मेरे साहब देवता..'' कहते-कहते नीलम की आखो से आसू बहने लगे। ''बहुत धार्मिक व्यक्ति है मेरे साहब। बस संजना इससे आगे और स्पष्ट मै क्या कहू—और विस्तार से तो कुछ आगे कहने की जरूरत नही होती है।''

''नीलम यह हकीकत है ? यह मै क्या सुन रही हू ?''

''हा सजना, हकीकत तो यही है—मगर मै फिर भी साहब की पत्नी हूं। मेरे साहब तो देवता है—पक्के ब्रह्मचारी ही है। भोग-विलासिता की चीजो को उन्होंने कभी छुआ तक नहीं है। जब से हमारी शादी हुई है तब से ही मेरे साहब जी की वृत्ति तो भगवान से ही जुडी हुई है, ससार के मोह-जाल से वह दूर ही रहे हैं। वह मुझे भी हमेशा धार्मिक ख्याल मन में रखने के लिए प्रेरित करते रहते हैं। 24 घन्टे ही ब्रह्मज्ञान की, वेद ग्रन्थो की बाते करते रहते हैं। अब तो मैंने भी अपनी सभी इच्छाए दबा ही ली हैं। वैसे यह मै अच्छी भाति जानती हूं कि सांप को पिटारी मे बन्द कर देने से सांप का विष समाप्त नहीं हो जाता। बस सजना दबाई हुई इच्छाए कहीं मुझे मानसिक रोगी ही न बना दे। सब कुछ जानते हुए भी अनजान बने रहना बहुत मुश्किल होता है। कभी-कभी मेरा मन बहुत बेकाबू हो जाता है। अब मेरा भी गुस्सा सीमा से ज्यादा ही बढने लगा है। मै उन्हें डाटने लग जाती हू। मैंने अपने ढग से उन्हे लाइन पर लाने की बहुत कोशिश की। सजना, तुम मेरी प्यारी सहेली हो इसलिए ही मै अपने दिल की पूरी कहानी तुझे बता रही हू।

सर्दियो की आधी रात थी। साहब जी घोडे बेचकर सो रहे थे। मेरे मन ने मुझे बेचैन कर दिया। मन कहने लगा कि नीलम तुम्हारी शादी हुए इतने वर्ष बीत गए हैं—तुमने अभी तक अपना औरतो वाला कोई चरित्र नही किया है—अपनी कोई भी चाल चलकर नहीं देखी है। आज तुझे किसका डर है। साहब जी आराम से सो रहे हैं—कम से कम इनकी नीद तो उडा कर देख—साले शादी सोने के लिए की थी। मैंने अपने मन को तैयार कर—अपना बिस्तरा छोड—उन्हे नीद से जगाया—परन्तु पत्थर को जोंक कैसे लगती। मर्द हो तो ही करट लगता.. नही-नही सजना मै...।''

''नीलम बहन अपना मन हलका होने दो, मै तेरी बचपन की सहेली हू—पूरी बात मन से बाहर निकाल दो। अब आगे की कहानी बताओ।''

''मैने कहा मेरे देवता जी मुझे नीद नहीं आ रही है। कहने लगे फिर मै क्या करू। मैंने कहा आप मेरा सिर दबाओ—मेरी टागों की मालिश कर दो। अपनी बाहें..मैंने सुना है कि अगर नीद न आ रही हो तो अपने पतिदेव को जगा लेना चाहिए। वह अपनी मर्द-बाहों में लेकर इलाज कर देता है। संजना बहन सभी पागल

देश छोड़कर अभी बाहर नही गए है—वह मुझे कहने लगे नीलम तुम पागल हो गई हो—भगवान ने रात सोने के लिए बनाई है। तुम चुप कर करवट बदल कर सो जाओ—और मुझे भी सोने दो। रातो मे व्यक्ति नही चोर और उल्लू ही जागते है।

सजना, उस दिन मुझे मालूम नही क्या हो गया था—मैने फिर अपने साहब से कहा—जी रातो मे उल्लू और चोर तो जागते ही है—पति-पत्नी आशिक-माशूक भी आधी-आधी रात तक जागते हैं—क्या आपने वह गाना नही सुना—

शाम को जब दिन ढलता है,
तू दीवाना क्या जाने, काहे को पतगा जलता है।

मैने स्पष्ट बोल दिया कि अब तुम भी जाग जाओ—जब से हमारी शादी हुई है आपने मुझे रातों में जागने की कहानी सुनाई ही नही है। जी पति-पत्नी क्यो जागते रहते हैं। सजना मैने इससे भी आगे बहुत कुछ कहकर देख लिया। फिर आखिर मे मैंने कहा—जी आज मुझे अकेली को सर्दी लग रही है।. यार सजना बस मैं मुह से साफ-साफ कुछ नही कह पाई—क्योकि साहब जी करवट बदलते हुए कहने लगे कि नीलम अगर ज्यादा ही सर्दी लग रही है तो एक और कबल अपनी रजाई के साथ जोड़ लो।

सजना उस दिन की मेरी पहली कोशिश आखिरी कोशिश बनकर रह गई। मेरी हिम्मत के साथ मेरा दिल भी टूट गया—मन अच्छी भाति समझ गया कि इन तिलो में तेल ही नहीं है। अब मुझे साहब पर बहुत गुस्सा आता रहता है। परतु अब मै कर भी क्या सकती हू। जल-भुन कर ऐसे ही अपना खून फूंकते रहना अब मुझे अच्छा नही लग रहा है।"

"नीलम बहन ऐसे निकम्मे नामर्द व्यक्ति को तू अभी भी साहब-साहब बोल रही है। अच्छे साहब हें। नीलम अगर उन्हें किसी चीज की जरूरत ही नही थी—साधू-महत थे तो फिर उन्होने तुम्हारे साथ शादी ही क्यो की थी ? किसी के दिल के अरमानो का कत्ल करना सबसे बडा पाप है। वह तो पापी हुए—तू उन्हे देवता-देवता क्यों कहती रहती है।"

"सजना मेरी जिदगी तो एक आदर्श के लिए ही है। पहले मैं यह सोचती रहती थी कि साहब अब ठीक हुए अब ठीक हुए परतु अब तो मेरी सभी इच्छाए सभी कामनाएं खत्म ही हो गई है। मैने अपने मन के साथ समझौता कर लिया है कि अब मै एक आदर्श जीवन ही बिताऊगी। अब मैंने अपनी सभी सांसारिक कामनाओं का त्याग कर दिया है। सजना यह है मेरे दिल मे छुपी दर्द भरी कहानी।"

"नीलम तुमने तो अपना सब कुछ ही बर्बाद कर लिया है। मेरे जैसी होती तो स्पष्ट बोल देती कि अगर आप साधू महात्मा हो तो छोडो मेरा घर-बार, जाओ जगल में ढूंढ लो अपना भगवान। ऐसे मेरी भावनाओं का कत्ल करके आपको भगवान

नही मिलेगा। अगर आपको भगवान की खोज करनी है तो मेरा पीछा छोडो, अपने भगवान को जगलो में खोजो। मेरी जिदगी के साथ ऐसे खिलवाड़ करने का आपको कोई भी अधिकार नही है।

जो व्यक्ति घर-गृहस्थी के उसूलों को न बूझ सके वह भगवान के रहस्यों को कैसे समझ पाएगा। उस भगवान ने ससार में काम की वृत्ति पैदा करके ससार को आगे चलाया हुआ है। यह काम की वृत्ति भगवान ने ही पैदा की हुई है। घर-गृहस्थी छोडकर भागे बडे-बड़े फरेबी महत भी काम के अधीन ही है। तभी तो उनमे से कुछ डगमगाए डोलते हुए फरेबी साधुओ की कहानिया प्राय अखबारो मे पढने के लिए मिलती रहती है। ससार का हर जीव काम के अधीन है। उस भगवान के बनाए नियमों को समझे बगैर तुम्हारे साहब कई जन्मो तक भटकते ही रहेंगे।''

संजना गुस्से मे बहुत कुछ बोल गई।

नीलम उसे कहने लगी, "सजना तुम मेरी प्यारी सहेली हो—इसलिए ही मेरी कहानी दुनिया से न्यारी जान कर तुझे गुस्सा आ रहा है। परंतु संजना मै तो हालातो के कारण मजबूर ही थी।''

''नीलम तुम मजबूर नही डरपोक थी। जिदगी मे कुछ पल ऐसे भी आते है जब व्यक्ति को टो टूक फैसला लेना होता है। वह फैसला व्यक्ति को किसी दूसरे की सलाह पूछे बगैर अपने आप ही करना होता है। फैसले के वह पल बहुत कीमती है—थोडे से समय में ही निर्णय करना होता है। उस पल मे लिया गया गलत फैसला व्यक्ति की जिंदगी बरबाद कर देता है। मुझे पक्का यकीन है ऐसे पलो मे जब तुमने चुप रहने का निर्णय लिया होगा तुम्हारी आत्मा ने भी तुझे जरूर झझोडा होगा कि नीलम दुनिया की परवाह न कर, ऐसे साहब को लात मार, फिर तुम डर जाती होगी। मेरी समझ मे आता है कि बहुत समय पहले ही तुझे ऐसे साहब से तलाक ले लेना चाहिए था—मगर तुम फैसले के समय डर गई—और जिंगदी बर्बाद ही कर ली है। हा उस पल अगर तुम सही निर्णय ले लेती तो जिदगी रगीन होती। भरा-भरा तेरा अपना घरबार, बाल-बच्चे, अपना ही ससार होता।''

"सजना ऐसा फैसला मै लेना तो चाहती थी—मगर मैने हमेशा अपनी लोक-लाज बनाकर रखी है। अब भी मै खुश हू कि चलो लोगो की निगाहो मे तो मे एक आदर्श पत्नी हूं। अगर गलत फैसला करके इनसे तलाक ले लेती तो भी तो कवारी ही रहकर मायके ही बैठना पडता। अब मै अपने घर मे तो हू। मै मकडी की भाति अपने ही जाल में लिपटी हुई आनदित हू।''

"अच्छा नीलम अगर तुम ऐसे ही खुश हो तो मै तुम्हारे साहब को अपने ढग से समझाने की कोशिश करूगी। साली आधी घरवाली—जो बात तुम उनसे सीधे साफ़ नहीं कह सकीं मैं साली का पार्ट अदा कर तुम्हारे साहब जी को ऐसा करट

लगाऊंगी तुम आप ही देखना। नीलम तुम खुद भी बहुत ढीली ढुलमुल हो—इसलिए ही तो तुम्हारे साहब साधू बनकर रह गए हैं। औरत अपनी आई पर आ जाए तो तुम्हारे साहब तो क्या साधू हैं—बडे-बडे ब्रह्मचारियो के इरादे बदल जाते है।"

"सजना बहन ध्यान से मेरी बात भी सुनो—इज्जत की जिदगी जीने का मजा कुछ और ही है। एक बार औरत के इरादे डोल जाए वह किसी भी सीमा तक पहुच जाती है। बुरे काम बुरे ही होते हैं। बदनाम हुई औरत धोबी के कुत्ते की भाति ना घर-गृहस्थी की रहती है न बाहर की रहती है। ऐसी हालत मे जो आत्मग्लानि होती होगी—उसे सोचते हुए—मेरी यह जिदगी कही बेहतर है। वैसे असल कहानी वह ही जानता है जिसके ऊपर ऐसी घटना घटी हो।

शादी के पश्चात मैने बहुत कोशिश की थी कि मैं कैसे अपने देवता के बस सजना मेरे साहब न तो देवता ही थे और न ही घर-गृहस्थी के काबिल। अब वह मानसिक रोगी बन गए है। जब भी मैं घर-गृहस्थी, अपने बच्चो के लिए मन की इच्छाए, बच्चे की बात करती हूं तो मेरे देवता का एक ही जवाब होता है कि मनुष्यदेह भगवान की प्राप्ति के लिए ही होती है। मेरे देवता अपने मन मे पक्का यकीन रखते है कि मै पूरी दुनिया से उलट चलकर भगवान को जानने की कोशिश कर रहा हू। बस मै भगवान को मिल ही चुका हू क्योकि मुझे किसी सांसारिक वस्तु की अब जरूरत ही नहीं हैं। अब उनकी मनोवृत्ति सांसारिक नही है। साहब जी की 24 घटे एक ही शिक्षा के कारण अब मेरा भी मन बदल चुका है। अब तो मैं हर रविवार को आसाराम बापू के सत्सग मे जाने लगी हूं। ससार मे तो दुख ही दुख है। ससार मे हर एक व्यक्ति दुखी है। हमने यह जान लिया है। गुरु नानक देव जी भी अपना तजुर्बा अपनी बानी मे लिख गए है कि भाई ससार दुखो का घर है। एक उस भगवान की शरण मे जाने से ही सुख मिलते है।

नानक दुखिया सब ससार,
सो सुखिया जिन नाम आधार।

संजना ससार से जुड कर दुख ही दुख मिलते है। ससारी लोगो के मन भीतर से कुरेद कर देखने पर मालूम पडेगा कि कोई ससारी व्यक्ति सुखी नजर नही आएगा।"

"हां नीलम बहन तुम्हारा तजुर्बा बिलकुल सही है—तुम सत्य बोल रही हो। मे इस बात में तुमसे सहमत हू। अगर दुख न हो तो प्राणी उस भगवान को भूल ही जाए। जिस शक्ति ने ससार की रचना की है उसके रग न्यारे ही है। बहन तुमने अपना दुख तो मुझे बता दिया है। मेरा भी भीतरी मन खोलकर देख। मैं ऊपर से खुश रहने की कोशिश में लगी रहती हू। अदर के दुख हर एक के सामने प्रकट नही किए जाते अंदर से मेरा दिल भी दर्द से भरा पडा है मैं भी बहुत दुखी हू

अब तुम मेरी कहानी भी सुन ही लो।

तुम शायद जानती हो—मैंने मुकेश से लव मैरिज की थी। शादी के एक वर्ष के पश्चात हमारे घर बेटी रजनी ने जन्म लिया। फिर दो वर्षो के पश्चात बेटी नेहा न जन्म लिया तो मुकेश बहुत उदास-उदास रहने लगा। मैने बहुत प्यार से उन्हे समझाया कि बेटा-बेटी को जन्म देना किसी भी औरत की अपनी मर्जी का काम नही होता—भगवान के हाथ ही यह सभी कुछ होता है। मुकेश मुह से तो कुछ नही बोलता था मगर मन से मेरे साथ नफरत करने लगा। मैं अपने मन को समझा-बुझा समय पास करती रही। नीलम भगवान भी कई वार व्यक्ति का इम्तिहान ही लेने लग जाता है। तीसरी बार हमे लडके की पक्की उम्मीद थी मगर बेटी सुजाता ने जन्म लिया। हमारी उम्मीदो पर पानी फिर गया।

सुजाता के जन्म के पश्चात हमारे घर मे खामोशी छा गई। चोट तो मेरे मन पर भी लगी कि भगवान लड़का दे देता तो अच्छा ही था। सरकार का फेमिली प्लानिग का नारा मैं भी तो जानती ही हू। हम दो हमारे दो। पढे-लिखे व्यक्ति को बच्चे दो ही पैदा करने चाहिए—मगर लडके की इच्छा से मेरे को अनजान बनकर ज्ञान-ध्यान छोड़ना पडा। मन कह रहा था कि बेटियां तो अपने-अपने घर चली जाएगी। बेटा जरूर चाहिए।

बेटी सुजाता के जन्म के पश्चात मुकेश का दिल टूट गया। दिल तो मेरा भी टूटा मगर इसमे मेरे वश मे कुछ नही था। एक दिन मुकेश बातो-बातो मे मुझे कहने लगा कि तुम्हारे साथ शादी करवाके मैने अपनी जिंदगी बर्बाद कर ली है। अब और कितनी बेटियां पैदा करोगी। बहाने से मुकेश मुझे डांटने लगा—आज मेरे कपडे प्रैस नही है। सब्जी ठीक नहीं है—रोटी कच्ची है। यह है वह है।

एक दिन मै अपने ऊपर अपना कट्रोल खो बैठी। मैंने मुकेश से गुस्से मे कहा कि अगर आपको मेरे से नफरत हो गई है तो देर मत करो तलाक ले लो। संभालो अपनी बेटिया मेरा पीछा जल्दी छोडो। आपका मन मेरी तरफ से भर चुका है तो दूसरी शादी कर लाओ। अपना अलग रास्ता पकड़ो। मै अदालत मे केस दायर कर अपना गुजारा भत्ता आपसे वसूल करूंगी। कहां गए वो वादे जब मेरे बगैर एक-एक पल न कटने की बात कहा करते थे। अब बेटियां पैदा हो गई है तो इसमें मेरा क्या दोष है ? अगर तुम्हारे अपने वस की बात थी तो लड़के पैदा कर लेते।

मुकेश फिर मेरे गुस्से के सामने टिक न पाया। उस दिन के पश्चात हम प्यार से जिदगी बिताने लगे। अगर उस दिन मैं डर जाती कि कहीं मुकेश मुझे सच ही तलाक न दे दे तो फिर मुझे भी तेरी तरह ही डरते-डरते दिन काटने पडते।

आखिर परमात्मा ने हमारी प्रार्थना सुन ही ली—हमारे घर बेटे अतुल ने जन्म लिया। मुकेश फिर मेरी इज्जत करने लगा। अब मेरे बच्चे ही मेरा ससार है। मगर

बात दिलों के दर्द की चल रही है।

मेरी बेटी रजनी बी. ए. में पढ रही है—उसकी शादी की चिंता हमें अभी से परेशान कर रही है। जब बेटी सी. बी. एस. ई. के इम्तिहान देने के पश्चात साइकिल चलाना सीख रही थी उसके दाएं पांव में चोट लग गई थी। वह चोट ठीक नहीं हुई—उस चोट से रजनी के पांव की हड्डी टूट गई थी। बेटी उमर भर के लिए लंगडी हो गई है। अब हम उसे पढाएं-लिखाएंगे मगर एक लंगडी लड़की को कौन पसंद करेगा—यह चिंता हमें अभी से बहुत दुखी कर रही है। सोच-सोचकर मन चिंतित रहने लगा है। सयाने कहते हैं कि जो घर नहीं देखा है—वह ही अच्छा है।''

दोनों सहेलियों ने अपनी-अपनी कहानी एक-दूसरी को बताकर अपने-अपने मन हलके किए।

नीलम कहने लगी, ''संजना अब मैं अपने घर चलती हूं। मेरे देवता अब मैं और कुछ तो कह नहीं सकती..मेरे देवता घर में मेरा इन्तजार कर रहे होंगे। अब हमेशा हम ऐसे ही एकांत में बैठकर अपने दिलों के दर्द बांटकर अपने दिल हलके करती रहेंगी।''

घर की तरफ जाते हुए नीलम के मन में विचारों की लड़ी चालू हुई। सहेली संजना से दिल की बातें कर कुछ तो मन हल्का हुआ। अपने ही मन में छुपाई बात किसी को बताने से मन हल्का हो जाता है। शायद इसीलिए पागल हुए व्यक्ति कुछ ना कुछ बोलते ही रहते हैं। उनके दिलों के दर्द सुनने वाला शायद कोई नहीं होता होगा। मैं संजना को सुखी समझ रही थी .उसका मन भी दुखी ही है। जब इस संसार के सभी लोग दुखी ही हैं तो फिर मैं भी तो एक संसारी जीव ही हूं। मेरा दुखी होना कोई नई बात नहीं है।

जहां इतना बडा संसार दुखी है—मेरे मन का दुखी हो जाना कोई अनहोनी बात नहीं है। जिंदगी के सफर में कोई न कोई मुसीबत तो गले पडी ही रहती है। अब संजना की बेटी रजनी से शादी कौन करेगा ? बेचारी रजनी का अब क्या होगा ? क्या उसकी शादी होगी ही नहीं ? संजना ने अपनी मर्जी से लव मैरिज की थी—मैंने घरवालों की मर्जी से शादी की थी। नतीजा एक ही है। मेरा मन भी दुखी है, संजना का मन भी दुखी ही है। परंतु रजनी से शादी कौन करवाएगा ? सामने पांव का टूटे होना—लंगडा कर चलने वाली लड़की को कौन पसंद करेगा ? यह ऐसा नुक्स है जो छुपाए छुप नहीं सकेगा। संजना से भी ज्यादा नीलम रजनी की शादी की चिंता करने लगी। ऐसी लडकी से कोई दयावान या फिर ऐसा ही लडका जिसमें अपने में कोई कमी हो—हीन-भावना का शिकार मेरे साहब जैसा ही शादी कर सकता है। ऐसे बेचारी रजनी की भी मेरी भांति ही जिंदगी बर्बाद हो जाएगी। वैसे इस जमाने

मे इमानदार लड़का मिल जाए, मुश्किल लगता है। अपने ही विचारो से घिरी नीलम अपने घर पहुंची। घर पहुंच नीलम आराम करने लगी। जल्द ही उसे नीद आ गई। नीद में नीलम को अजीब-अजीब सपने दिखाई देने लगे।

व्यक्ति चाहता है कि सब कुछ उसकी मर्जी के मुताबिक होना चाहिए। मै यह करूंगा मे वह करूंगा। परन्तु कुछ घटनाए ऐसी हो जाती है कि व्यक्ति सोचने के लिए मजबूर हो जाता है कि क्या सभी कुछ अपनी मर्जी से ही किया जा सकता है या फिर भगवान ही सब कुछ अपने आप हमारे से कर-करवा रहा है।

एक अजीब घटना नीलम के साथ घटी। संयोगवश एक दिन नीरू नीलम से पूछने लगी कि कोई हमे लड़का बताओ मैं अपनी बेटी के लिए लड़के की तलाश में हू। मे जल्दी ही अपनी बेटी के हाथ पीले करना चाहती हू।

नीलम कुछ देर सोचने लगी। अपने मन मे विचार करने लगी कि अगर मेरे भाई की शादी ही नीरू की बेटी से हो जाए तो बहुत अच्छा हो जाए। फिर भाई सुनील मुझे भी मिलता-जुलता रहेगा।

अब मे सीधे-सीधे यह बात नीरू से कैसे कह सकती हू। नीलम मन ही मन उलझन मे पड़ गई। फिर हौसला करते हुए कहने लगी, "नीरू मेरा अपना भाई एम ए. में पढ रहा है। अगर आप उसे देखना चाहते है तो मै उसे यही दिल्ली मे ही अपने पास बुला लेती हू। अगर मेरा भाई आपको पसद आए तो बात आगे हो जाएगी। मेरी अपनी इच्छा भाई की शादी यहा दिल्ली ही करने की है। वैसे मै अपने ही भाई की बात आपके साथ करने से संकोच कर रही थी--क्योकि ऐसे रिश्ते-नातो की बाते सीधे-सीधे नहीं की जाती--ऐसे काम बिचौलिए ही करवाते रहे है। मेरा भाई अभी पढ रहा है। अब हम उसकी शादी करना चाहते है। उसकी इच्छा तो पढकर कोई सर्विस लगने के पश्चात शादी करने की है। अब मेरा मन चाहता है कि अगर भाई की शादी दिल्ली ही हो जाए तो मेरे लिए बहुत अच्छी बात होगी। भाई इस बहाने ही हमें मिलता रहेगा। आप भी जानती ही हो कि जब कोई मायके से मिलने आ जाए तो मन को कितनी खुशी मिलती है।"

नीलम शांति से नीरू की ओर देखने लगी।

नीरू भी कुछ सोचने लगी। फिर कहने लगी, "नीलम अगर आपके भैया हमे पसद आ जाए तो यह तो बहुत ही अच्छी बात होगी। हम और आप तो रले-मिले ही है। जमाना खराब है। आप तो भले स्वभाव की हो। आपके भैया—आपके माता-पिता भी अच्छे स्वभाव के ही होगे। आप उन सभी को यहीं बुला लो—अगर आपके भैया हमें पसद हुए तो आपके माता-पिता से हम आगे की बात कर रिश्ता पक्का कर देगे।"

नीलम ने टेलीफोन करके अपने माता-पिता और भाई सुनील को अपने पास

बुला लिया।

नीलम के माता-पिता और भैया नीलम के पास पहुचे। नीलम की खुशी का कोई ठिकाना न रहा—नीलम का मन बहुत खुश हुआ। नीलम फूली नही समा रही थी।

नीलम ने नीरू के घर अपने माता-पिता और भाई के दिल्ली पहुच जाने की खबर भेजी।

नीरू और सुशील—सुनील को देखने के लिए नीलम के घर पहुचे।

नीलम ने उनकी सेवा करने का पूरा प्रबंध पहले ही कर रखा था।

सभी मिलकर चाय पीते हुए बाते करने लगे।

नीलम कहने लगी, "नीरू अगर आप अपने किसी रिश्तेदार को भाई सुनील को दिखाना चाहो—किसी रिश्तेदार-सबधी से सलाह पूछनी हो तो हमे कोई जल्दी नही है। आप अपनी तसल्ली अच्छी भांति कर सकती हो।" नीरू सुशील की ओर देखने लगी।

नीरू और सुशील ने सुनील को देख आपस मे कुछ बाते की, एक-दूसरे से सलाह-मशवरा किया।

नीरू नीलम से कहने लगी, "नीलम हमने और किसी से कुछ नही पूछना है—बेटा सुनील हमें पसद है। कल हम अपनी बेटी को अपने साथ ही कॉलिज मे ही ले आएगे। आप हमारी बेटी को देख लेना—बाकी तो उसके पश्चात ही होगा।"

दूसरे दिन नीरू अपने रिश्तेदारो और अपनी बेटी को साथ लेकर कॉलिज के सामने पार्क मे पहुच गए। नीलम अपने माता-पिता और भैया सुनील को साथ लेकर वही पार्क मे पहुची। सभी मिलकर इकट्ठे बैठ बाते करने लगे।

ऐसा माहौल बना जैसे पुराने दोस्त बहुत समय के पश्चात मिले हो। सभी ऐसे बाते कर रहे थे—जैसे पहले से ही एक-दूसरे को जानते हो। कोई भी अपने आप को अजनबी महसूस नही कर रहा था।

धनपत राय कहने लगे, "बेटी स्वीटी हमें पसद है।"

नीरू और सुशील सुनील को पहले ही पसद कर चुके थे।

नीरू कहने लगी, "नीलम अब आप हमें अपना आगे का प्रोग्राम बताओ। क्या-क्या आपकी माग है। आप कैसे सगाई की रस्म करनी चाहते हो। शादी कब करनी चाहोगे। हा हमें अभी पूरी बाते स्पष्ट बोलो। ताकि बात पक्की होने के पश्चात कोई भी ऐसी-वैसी बात ऐसे अच्छे सबधों मे दरार पैदा न कर सके। साफ और स्पष्ट बात करनी अच्छी होती है।"

"धनपत राय कहने लगे दहेज-वहेज के चक्कर से हम पहले से ही बहुत दूर है। मेरा अपना जोर चले तो मै दहेज की प्रथा को बिलकुल ही समाप्त कर दू। मैंने अपनी तीनों बेटियां की शादिया बगैर दहेज दिए की है। बहुत स्पष्ट बात हे

कि मेरी कोई मांग नही है। दहेज के लिए घुमा-फिरा कर कोई बात हमे नहीं बोलनी।"

सुशील कहने लगा—"जी हम तो आपकी आज्ञा अनुसार ही चलेंगे। जैसा आप उचित समझे हमे हुक्म कर देना। बेटा सुनील हमने पसंद कर ही लिया है। अब आपकी हर आज्ञा हमारे सिरमाथे। अब आप हमें आगे की रस्म करने का आदेश दो। आप कैसे करना चाहते हो।"

धनपत राय कहने लगे, "अच्छा फिर हमारा फैसला सुनो—मैं चाहता हूं कि शादी बहुत ही साधारण रस्मो से की जाए। किसी का भी कोई नाजायज खर्चा न करवाया जाए। मेरा अपना मन तो सभी काम कोर्ट मे निपटाने का है। मै वकील हू इसलिए शादी कोर्ट मे अभी रजिस्टर्ड करवाना अच्छा समझता हूं।"

नीरू और सुशील ने अपने रिश्तेदारों से सलाह करके वकील धनपत राय के साथ अपनी सहमति प्रकट की। सभी काम धनपत राय की इच्छा अनुसार किए गए। सुनील और स्वीटी के मन्दिर में फेरे करवाए गए। भगवान को हाजिर मानते हुए शादी की रस्म पूरी की गई। फिर कोर्ट मे शादी रजिस्टर्ड करवा दी गई।

क्या अजीब घटना, स्वप्न की भांति ही शादी की रस्में पूरी हो गई। वकील धनपत राय खुश नजर आने लगे।

नीलम के माता-पिता, भैया सुनील और स्वीटी आगरे के लिए रवाना हुए। नीलम के घर खुशियों के पश्चात फिर पहले की भांति ही खामोशी छा गई। नीलम चुप अपने मन मे विचार करने लगी कि यह सभी कुछ सच में हुआ है। ऐसे लग रहा है जैसे किसी की शादी की एलबम देखी हो। भैया की शादी भी क्या सपने मे होते हुए देखी है। अजीब सयोग जुडे है। नीलम चुपचाप रहने लगी।

सजना ने नीलम को भैया की शादी करने की मुबारक दी।

"नीलम देख लिए हैं कुदरत के रंग। नीलम वास्तव में सब कुछ भगवान के हुक्म के अधीन हो रहा है। व्यक्ति के अपने हाथ कुछ नही है। भगवान हमारे से वही काम करवाता है जो उसे अच्छा लगता है। सभी कुछ उस भगवान के हुक्म के अनुसार हो रहा है। जब हम उस भगवान के हुक्म से उलटा चलने लगते है तो हमें दुख महसूस होने लग जाता है। बस इस भेद को समझने वाला ही ज्ञानी है कि वह भगवान ही सभी काम व्यक्ति से आप करवाता है। उस भगवान का हुक्म मानना ही पडता है। व्यक्ति उसके हुक्म के अधीन है। ऐसा व्यक्ति हमेशा सुखी रहता है। नीलम जब मैने अपनी मर्जी से मुकेश से शादी की थी—तब मै भी यही सोचा करती थी कि अपनी मेहनत से कुछ भी काम किया जा सकता है। अपना मुकद्दर आप बनाना पडता है मगर अब मैं समझ गई हूं कि वह भगवान अपने आप ही सभी कुछ हमारे से अपने हुक्म से करवाता है। अब मैं भगवान की शक्ति को

मानने लगी हू। अब मुझे बेटी रजनी की शादी की चिंता सताने लग गई है। अब मै बैठी यही सोचती रहती हू कि बेटी रजनी की शादी कैसे होगी। नीलम बताओ अब कौन रजनी से मेरी तरह लव मैरिज करना चाहेगा ? ऐसा सहनशीलता वाला कौन युवक आगे आने को तैयार होगा। फिर भी बेटी की शादी तो करनी ही है।''

''सजना जब मन को ठोकर लगती है तब कही मन मानता है। भाई सुनील की शादी का घटनाचक्र देख कर मेरे तो बहुत से भुलावे दूर हो गए हैं। अब मेरे मन को शाति महसूस हुई है वर्ना मैं तो हमेशा यही सोचने लगी थी कि अपने बधन मे कैसे काट डालू। अच्छा बहुत समय हो गया है फिर मिलेगी। मेरे लिए भगवान का यही हुक्म है कि अपने साहब की सेवा मन लगाकर अवश्य करती रहू।''

सजना अकेली बैठी बेटी रजनी के लिए सोचती रहती। सोचते-सोचते समय बीतता गया। रजनी ने एम ए की परीक्षा पास की। समय अपनी चाल चलता रहा।

सजना के घर का दरवाजा नीलम ने खटखटाया। नीलम बहुत घबराई हुई थी। नीलम हांफते हुए कहने लगी, ''बहन संजना जल्दी हमारे घर आना, साहब जी को मालूम नहीं क्या हो गया है। मुझे कुछ समझ नहीं आ रहा है।''

संजना बहुत चिंतित हुई कि नीलम आज क्यो घबराई हुई है। सजना ने अपने घर का दरवाजा बन्द किया और नीलम के साथ चल पडी। मोहन साहब बेहोश पडे थे। मोहन की हालत देखकर सजना नीलम की चिंता का कारण समझ गई।

नीलम कहने लगी, ''संजना बहन अब मै क्या करूं—साहब जी पहले कभी भी बेहोश नहीं हुए हैं। आज इन्हे क्या हो गया है—मेरी तो कुछ भी समझ में नही आ रहा है।''

''नीलम बहन धीरज रखो। मै अभी टैक्सी स्टैण्ड से टैक्सी बुला लाती हू। हम अभी इन्हे हॉस्पिटल ले चलते है। साहब अभी ठीक हो जाएगे।''

टैक्सी नीलम के घर पहुंच गई। नीलम और सजना मोहन को सुन्दर लाल जैन चैरिटेबल हॉस्पिटल के एमरजेंसी वार्ड मे लेकर पहुंचीं।

डॉक्टरो ने मोहन को चार इन्जैक्शन लगाए। कुछ समय के पश्चाद मोहन को होश आया। मोहन ऊंचा-ऊचा शोर मचाने लगा, ''नीलम तुम मुझे यहा क्यों लेकर आई हो। मैं यहा बिलकुल नही रहूंगा। नीलम इन सालो ने मुझे क्या कर दिया है। मेरा तो बायां हाथ और बायां पैर टूट गए है। मुझे क्या हो गया है। मुझे जल्दी अपने घर ले चलो।''

डॉक्टरों ने नीलम और संजना को बताया कि आपके साहब जी को अंधरग (पैरालाईसिज) का दौरा पडा है। इनकी रीढ की हड्डी में इन्जैक्शन लगाने पडेंगे। एक्सर साइज हर रोज करवानी पडेगी। यह इस बीमारी का पहला अटैक है। अगर आपने

थोडी-सी भी लापरवाही की तो यह बीमारी बहुत बढ जाएगी।

डॉक्टरो की सलाह मानकर नीलम ने मोहन को तीन दिन हॉस्पिटल मे ही रखा।

चौथे दिन मोहन ने चिल्लाना शुरू कर दिया। ऊची-ऊची आवाज मे गदी-गदी गालिया बकने लगा, "नीलम कुतिया, नीच, कमजात तुम मेरी बात क्यो नही मान रही हो। मुझे घर ले चलो।"

मोहन के भाई-भतीजे मोहन की खबर पूछ घर लौट गए थे।

मोहन के ज्यादा शोर मचाने के कारण हॉस्पिटल वालों ने मोहन की छुट्टी कर दी। नीलम मोहन को लेकर अपने घर पहुची। नीलम ने मोहन का इजाज घर ही करवाना शुरू रखा।

डॉक्टर अपने समय से आता—मोहन को एक्सरसाइज करवा दवाई लिख अपनी फीस ले लेता।

मोहन की यह बीमारी लम्बे समय चलने वाली थी। ऐसे मरीज को कैसे सहे भगवान ही जानता है।

कुछ समय के पश्चात मोहन को दूसरा अटैक हो गया। अब नीलम अकेली मोहन को सभाल नही सकती थी। नीलम बहुत बड़ी उलझन में फंस गई। पहले तो नीलम यह ही सोचा करती थी कि टैक्सी ड्राइवरों को मै जब चाहू घर बुला सकती हू। दस रुपए फालतू देने की मेरी आदत से सभी टैक्सी वाले एक संदेश मिलते ही फौरन मेरे पास आकर खुश हो जाते हैं—मेरी मुश्किल हल हो जाती है।

सयाने कहते है कि मुसीबत के समय झाड पेड भी दुश्मन बन जाते है। मोहन के चिडचिड़े स्वभाव के कारण टैक्सी ड्राइवर भी नीलम के पास आने बन्द हो गए।

मोहन बाथरूम भी किसी के सहारे बगैर नहीं जा सकता था। नीलम छोटे बच्चे की भांति मोहन की देखभाल करने लगी। परंतु लम्वी बीमारी ने नीलम का मनोबल तोड़ दिया। सभी मिलने-जुलने वाले और रिश्तेदार नीलम से कहने लगे कि अब मोहन का स्वस्थ होना मुश्किल है। बस आप मन लगाकर इनकी जितनी हो सके सेवा करती रहो। नीलम अपना नारी धर्म निभाओ—नीलम अपना नारी धर्म निभाती हुई मोहन की सेवा करती रही।

नीलम को अपना कोई भी हमदर्द नजर नही आ रहा था। नीलम अपने मन मे सोचती रहती कि इस मुसीबत के समय कौन हमदर्द मेरी मदद कर सकता है। उसे अपने ही सवाल का अभी कोई जवाब नहीं मिल रहा था।

एक दिन मोहन ही नीलम से कहने लगा, "नीलम कभी-कभी सोहन ड्राइवर हमारे पास आया करता था—मेरा मन कह रहा है कि इस मुसीबत के समय सोहन हमारी मदद अवश्य करेगा मैंने नोट किया था सोहन ड्राइवर होते हुए भी बहुत

साधारण और भगवान को मानने वाला है। मैंने हमेशा उसे अकेले बैठे देखा हे। शायद वह कुछ लिखता रहता है।''

''जी आप ठीक कह रहे है। सोहन पजाबी भाषा में कविता लिखता है। आपको याद भी होगा एक बार उसने अपनी लिखी एक कविता हमे सुनाई भी थी। उसकी कविता शुद्ध धार्मिक कविता थी।''

''नीलम मैं तो पहले ही कह रहा हू—कि वह एक धार्मिक व्यक्ति है। इस कारण मेरा मन कह रहा है कि सोहन हमारी मदद अवश्य करेगा। नीलम तुम सदेश भेज कर उसे अपने घर बुला लो। मै भी उसे यह कहूगा कि भाई सोहन आप हमारी मदद करो।''

नीलम का मनोबल टूटा हुआ था। उसके मन को धीरज नही मिल रहा था। नीलम कहने लगी, ''जी मैं सोहन की मदद की आशा कैसे करू। भगवान ही जानता है कि इस मुसीबत के समय कौन फरिश्ता हमारी मदद के लिए आगे आएगा। अगर आपने मेरी बात मानकर कोई बच्चा गोद ले लिया होता तो वह ऐसे समय हमे सभालता। काश ' आपने जिंदगी मे मेरी कोई बात तो मान ली होती। मैं अब तक आपकी सभी बाते मानती आ रही हू। अब भी मैं आपकी आज्ञा मान सोहन को संदेश भेजकर घर बुला ही लेती हू। शायद आपकी अतर आत्मा की आवाज सच्ची ही हो। सोहन मेरी मदद करने के लिए तैयार हो ही जाए।''

नीलम का सदेश मिलते ही सोहन घर आ पहुचा।

''साहब जी हुक्म करो गरीब को कैसे याद किया है। मै आपके किस काम आ सकता हू। आपकी क्या सेवा कर सकता हू।''

सोहन के मन की नम्रता देख मोहन कहने लगा—''सोहन भैया, दुखी ओर मजबूर व्यक्ति हुक्म नहीं विनती कर सकता है। अब मैं आपसे यह विनती कर रहा हू कि भैया सोहन इस मुसीबत के समय आप हमारी मदद करो। पूरे टैक्सी स्टैण्ड पर एक आप ही हमे ऐसे व्यक्ति नजर आए हो जो हमारी मदद कर सकते हो। इसलिए ही मैने आपको यहा घर बुला लाने का कष्ट दिया है।''

''साहब जी जो भी सेवा मै कर सकता हू जरूर करूंगा। अगर सेवा मेरे लायक हुई तो अवश्य करूंगा।''

नीलम कहने लगी, ''भैया सोहन यह तो आप समझते ही है कि साहब जी अब कितने मजबूर हो गए है। ऐसी मुसीबत के समय सभी मिलने वाले और रिश्तेदार हमारा साथ छोड गए हैं। हम मुसीबतो मे फस गए हैं। पहले तो सोनू घर का पूरा काम सभालता था—अब तो वह भी काम छोड चला गया है। पूरे घर का काम, साहब जी की देखभाल सभी मेरे जिम्मे पड़ गई है।'' नीलम का मन भर आया। सोहन भी नर्म दिल का ही व्यक्ति था—नीलम की हालत देखकर उसका मन भी

पसीज गया।

"मैडम जी मै आपकी मदद अवश्य करूगा। आप हमें स्पष्ट बताओ मै आपकी मदद कैसे कर सकता हू। मैं बहुत स्पष्टवादी हूं। आप अपनी बात स्पष्ट बताओ।"

"सोहन आप अपनी टैक्सिया साफ करने के लिए क्लीनर तो अपने स्टैण्ड पर रखते ही हो। अब आप अपने क्लीनर को कुछ समय के लिए हमारे पास भेजना शुरू कर दो। वह यहा साहब के पास बैठा होगा तो मैं बेफिक्र होकर कॉलिज जा सकूगी। कृपया कोई ऐसा लड़का हमारे घर भेजना शुरू करो। जब कभी हमें क्लीनिक जाना होगा तो हम आपकी टैक्सी बुला लिया करेगे।"

"मैडम जी जहा तक मेरी मदद की बात है मै वह कर सकता हू। किसी लडके को ऐसे आपके पास भेजना मेरे अकेले के बस की बात नही है। क्योकि स्टैण्ड पर क्लीनर सभी मम्बरों के साझे होते है। क्लीनर वैसे भी स्टैण्ड छोड़ कर बाहर नही जा सकता है। आप अपने घरेलू काम के लिए किसी घरेलू नौकर नेपाली लड़के की तलाश करो।"

"सोहन भैया अब घरेलू नौकर भी कोई विश्वास वाला मिल नहीं रहा है। आप ही अपने विश्वास का ऐसा लड़का ढूढ़ लाओ। हम तो बहुत परेशान है। इसलिए हम चाहते है कि आप अपने ही स्टेण्ड का कोई लडका हमारे पास भेज दो।"

मोहन कहने लगा, "सोहन हमें पूरा विश्वास है कि आप ही हमारी इस उलझन का समाधान कर सकते हो।"

"जी बात यह है कि जो लडके हमारे पास ड्राइवरी सीखने आते हैं—उनसे हम घरेलू नौकरी नहीं करवाते है। हमारे पास हमारे भाई-भतीजे, रिश्तेदारों के लडके ड्राइवरी सीखने आते है। हा अगर आप यह ही चाहते है कि हमारी ही जान-पहचान का लड़का आपकी सेवा करे तो फिर आप कोई कम कीमत की सैकेण्ड हैंड कार खरीद लो। जब आपके पास अपनी कार होगी तब हमारे स्टैण्ड का लड़का आपके पास आ सकेगा। बहुत स्पष्ट बात है कि हमारे स्टैण्ड के लडके ड्राइवर के तौर पर ही आपकी मदद कर सकेंगे।"

"सोहन भैया मैं तो पहले ही साहब जी को अपनी कार लेने के लिए कहा करती थी। अब मै आपकी यह सलाह मानकर अपनी कार खरीद लूगी। मेरी इच्छा तो पहले से ही कार खरीदने की है। सभी पडोसियो के पास अपनी कारे है। कार खरीदने से हमारी इज्जत भी बढ़ेगी और हमारी मुश्किले भी हल हो जाएंगी।"

"नीलम तुम कठिनाइयो को कम करने की बजाय और उलझने पैदा करना चाहती हो। मेरी बीमारी पर कितना खर्चा हो रहा है। हम अपनी कार कैसे खरीद सकेंगे।"

"सोहन भैया इनकी बातें मत सुनो—यह कभी भी मेरी कोई बात मानने के

लिए तैयार नहीं होते हैं। आप ड्राइवर का प्रबध करो हम कार अवश्य खरीद लेगे। अभी आप एक महीने के लिए अपने क्लीनर को हमारे पास भेजना शुरू करो मै 25 रुपए उसे हर रोज देती रहूगी। इन पैसो से वह अपना लाइसेंस भी बनवा लेगा। हमारी कुछ कठिनाइयों का समाधान हो जाएगा।"

"ठीक है मैडम जी आप कार खरीदने का मन बनाओ। मैं कल से अपने क्लीनर चेतू को कुछ समय के लिए भेजना शुरू कर दूगा। आपकी कुछ कठिनाइया कम हो जाएगी।"

मोहन सोहन की बातो से बहुत बेचैन हुआ—कहने लगा—"भैया सोहन मै कुछ बाते आपसे इस संसार की पूछनी चाहता हू। आयु मे तो आप मेरे से छोटे हो मगर आपकी बोली-वाणी, आपकी स्पष्ट बातें मुझे अच्छी लगी है। सोहन मैं भी बहुत धार्मिक व्यक्ति था। जिन्दगी भर मैने कभी कोई बुरा काम नहीं किया है। देख रहे हो मेरी क्या हालत हो गई है। बुरे कर्म करने वाले व्यक्ति मेरे ही सामने सुख भोग रहे है। इसका क्या कारण हो सकता है ? इसका क्या भेद है ?"

"जी आपने बहुत भेद और उलझन वाला सवाल पूछ लिया है। मैं तो ज्ञानवान नही हू। आपको इस सवाल का जवाब मालूम होगा। जहा से सवाल उठता है वहा जवाब भी अवश्य होता है।"

"भैया सोहन ऐसा नही है। मैं तो दुनिया को देख हैरान हो रहा हू। गलत काम करने वाले व्यक्ति ऐसे मौज-मस्ती करे, हमारे जैसा धार्मिक व्यक्ति बीमार पड जाए—मुझे तो कुछ समझ में नही आ रहा है।"

"साहब जी जिन व्यक्तियो को आप बुरे समझ रहे हो—हो सकता है कि वह व्यक्ति आपको बुरा समझ रहे हों। हर एक व्यक्ति अपने आप को अच्छा समझता है। परतु अच्छा व्यक्ति तो वह ही समझा जाता है जो दुनिया की नजरो मे भी अच्छा हो। जिसे दूसरे लोग भी कहने लगें कि फलाना व्यक्ति बहुत अच्छा है। नेक है। मतलब वह व्यक्ति ही अच्छा होता है जिसकी पीठ पीछे भी लोग-बाग उसकी तारीफ करने लग जाए। अगर कोई व्यक्ति अपने मुह मियां-मिट्ठू बनता फिरे कि मै बहुत अच्छा हूं तो फिर लोग-बाग उसकी पीठ पीछे उसका मजाक ही उडाते है।"

"सोहन भैया मैंने बहुत-सी धार्मिक किताबे पढी है। जो शिक्षा उनमें लिखी हुई है मैंने उस शिक्षा पर अमल किया है। नीलम से पूछो मै सभी बुराइयों से हमेशा दूर रहा हू। धार्मिक किताबो मे लिखा हुआ है कि पाच चोर काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहकार यह पांचो दुष्ट, व्यक्ति की आत्मा को नीच अवस्था की ओर प्रेरित करते रहते हैं। व्यक्ति को ससार के साथ जोड़कर रखते है। परमात्मा से मिलाप नहीं होने देते। मैने इन पाचों दुष्ट प्रेरको से हमेशा दूर रहने की कोशिश की है। रिजल्ट आप देख रहे हो—उलटा मैं बीमार पड़ गया हूं। अब मुझे ऐसे महसूस होने लगा है कि

परमात्मा तो कही है ही नही। बस भगवान एक कोरी कल्पना है। अगर भगवान कही भी मौजूद होता—दुनिया को देख रहा होता तो मै बीमार कभी न होता। आपकी इसमे क्या राया है ?"

"जी हमारी बात का बुरा मत मानना—जब आप परमात्मा की मौजूदगी से भी इनकार कर रहे हो आप उसे पहचानोगे कैसे ? अपनी ही आत्मा जब हमें नजर नही आती है तो वह परमात्मा हमे कैसे नजर आएगा। पहले हमे अपनी अन्तर आत्मा की पहचान करके आत्मावान वनना होता है। पहले आत्मा फिर परमात्मा। शरीर से आत्मा अलग है। हम अपने शरीर से ही जुडे हुए है। साहब जी आप भी अपने शरीर को ही सभी कुछ समझ रहे हो। अदेही शक्ति आत्मा आपको कैसे मालूम पडेगी। दुख-सुख उस परमात्मा के हुक्म से मिलते है। आप उलटा सोचने लगे हो। यह ऋषियो का अनुभव रहा है कि अगर परमात्मा किसी व्यक्ति पर मेहरबान होता है तो वह अपने प्यारे को दुखो की सौगात देता है। यह दुख ही उस व्यक्ति के लिए वरदान सिद्ध होते है। गुरुबाणी मे भी कहा है कि—"दुख दारु सुख रोग भया।" अगर भगवान कष्ट दे रहा है तो वह अपनी याद दिलवा रहा है कि हे मनुष्य, कोई और सुपर शक्ति भी मौजूद है—उसे याद कर। अगर सुख ही सुख मिल रहे है तो समझो कि भगवन हमे ससार के साथ जोड़कर रखना चाहता है। सुखी व्यक्ति को सुख देकर परमात्मा उसे ससार के मोहजाल में फसाना चाहता है।

साहब जी आपको अपनी धार्मिक रुचि का उल्टे अभिमान हो गया है कि मे बहुत धार्मिक व्यक्ति हूं। आप सासारिक मोहजाल में फसे व्यक्तियों को सुखी समझ रहे हो—जब कि ऐसे व्यक्ति पल-पल परमात्मा से दूर जा रहे हैं।"

कुछ समय चुप रहने के पश्चात मोहन कहने लगा, "सोहन क्या तुम काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार को दुष्ट नहीं मानते हो।"

"साहव जी हमारी बात थोड़े ध्यान के साथ सुनो—शरीर को चलाने वाली शक्ति का कोई रग-रूप नही है। शरीर को चलाने वाली आत्मा परमात्मा का ही अश है। आत्मा की शक्ति से व्यक्ति का मन हरकत मे आता है, मन के कारण व्यक्ति अपने शरीर को देखता है। शरीर से संबंधित मन फिर दुनिया के साथ होने लग जाता है। ऐसे हम संसार के साथ जुडे हुए है। आत्मावान लोग हमें समझाते रहते है कि आध्यात्मिकता का रास्ता अकेले चलने का है। परमात्मा के मिलाप के लिए अपनी आत्मा को दुनिया से उलट अलग रास्ते पर चलना पड़ता है। आत्मा अमर तत्व है। संसार नाशवान्त है। बस हमे अमर तत्व आत्मा को जानकर झूठे ससार और शरीर का मोह छोड़ना है। कबीर साहब जब अपनी आत्मा से सबंधित हुए—उन्होंने फौरन घोषणा कर दी कि मै मिटने वाले शरीर से ऊपर उठ गया हूं—मैंने अमर तत्व आत्मा को पहचान लिया है। अब मैं अमर आत्मा मे ही रहूंगा।

"इब ना रहू माटी के घर मे,
अब मै जाय मिलू अपने हरि में।"

परमात्मा की रचना परमात्मा ही जाने। साहब जी जिन तत्वो को आप दुष्ट कह रहे हैं–यह महाशक्तिया उस परमात्मा की ही पैदा की हुई है। हम इन शक्तियो को देवता समान समझते है। महाबली काम देवता ने पूरे ससार को अपने अधीन किया हुआ है। परमात्मा ने काम देवता को शक्ति देकर–काम की वृत्ति उत्पन्न करके ससार को आगे चलाया हुआ है। कोई भी व्यक्ति भगवान की कृपा बगैर काम देवता को अपने अधीन नही कर सकता है। हा एक सीमा से पार हर एक चीज हानिकारक होती है। पूरे संसार को चलाने वाला दुष्ट नही हो सकता। ससारी जीव काम की वृत्ति के अधीन है। क्या अब तक कोई जीव इस ससार मे किसी और तरीके से आया है। ऋषि-मुनि-ज्ञानी सभी ससार में एक ही तरीके से आए हैं। बस जी सीमा से पार जाना गलत होता है। "एको नारी सदा ब्रह्मचारी।" सीमा के भीतर काम को भोगना बुरा नहीं है। यह भेद व्यक्ति समझ जाए तो उसका मन भटकता नही है। ऐसे ही क्रोध अगर दुनिया से समाप्त हो जाए तो भी यह संसार कट्रोल में नहीं रह सकता है। साहब जी एक कहानी है कि एक बार एक साप ने कही सत्सग सुन लिया कि क्रोध चडाल होता है। भले व्यक्ति को कभी क्रोध नहीं करना चाहिए। साप ने शराफत की सीमा पार कर ली। सांप ने क्रोध करना छोड़ ही दिया। लोग साप की शराफत का नाजायज फायदा उठाने लगे। दुनिया की ठोकरे झेलते हुए साप को ज्ञान हुआ कि वह तो शराफत की सीमा पार कर गया है। सांप ने अपनी आत्मा की आवाज सुनी–सांप ने अपने अतरज्ञान से प्रेरणा लेकर फुफकारना शुरू कर दिया। साप की फुंकार सुनकर लोग सांप से डरने लगे। सिर्फ फुफकारने से ही साप के मन को शाति नसीब होने लगी। एक सीमा के भीतर क्रोध भी जायज है। अगर ससार में क्रोध न होता तो अब तक कोई लडाई-झगड़ा न होता, बडे-बडे युद्ध न होते। अगर बडे युद्ध न होते तो आप ससार की आबादी का अनुमान भी न लगा पाते। हा अगर क्रोध सीमा पार कर जाए तो यह संसार, यह दुनिया भी समाप्त हो जाए।

ऐसे ही लोभ मोह अहंकार सभी परमात्मा के पैदा किए हुए है। यह सभी महाबली देव अजित है। परमात्मा ने यह संसार इन वृत्तियो को पैदा करके अपने कट्रोल में रखा हुआ है। हमें इनको कबूल कर लेना चाहिए। हमें सीमा कभी भी पार नहीं करनी चाहिए।"

नीलम कहने लगी, "सोहन आप की दलीलें हमे बहुत पसंद आई हैं–काश। आप दस वर्ष पहले हमे मिल गए होते। अब तक तो कोई भी व्यक्ति साहब जी को अपनी दलीलों से संतुष्ट नहीं कर सका था तुम्हारी सच्ची और स्पष्ट बातों

ने साहब जी को बेजुबान कर दिया है। वर्ना साहब जी कभी बहस मे चुप नही होते थे। अच्छा अब आपका भी सवारी का समय हो रहा होगा—बेशक जाओ। हमे ऐसे ही मिलते रहना। दिन मे एक चक्कर हमारे घर जरूर लगाते रहना।''

सोहन अपने स्टैण्ड की ओर चल पडा। सोहन ने अपने चेतू क्लीनर को नीलम के पास भेजना शुरू कर दिया। समय अपनी चाल चलता रहा।

सुनील नीलम का भैया नीलम से मिलने आया। नीलम की आंखो मे आसू आ गए।

''सुनील भैया देख लिया है अपने जीजाजी की हालत को। समझ सकते हो मै इनकी 24 घटे कैसे देखभाल कर रही हू।''

''वहन आप धन्य है। आपका घरेलू नौकर सोनू कहां है—नजर नहीं आ रहा है। कहा गया है वह।''

''भैया मुश्किल मे सभी सगी-साथी छोड़ने लग जाते है। बीमारी के कारण इनका स्वभाव बहुत चिड़चिड़ा हो गया है। परेशान होकर वह भी हमारे घर से चला गया है। पद्रह वर्षो से वह हमारे पास काम कर रहा था। अब उस जैसा विश्वास का नौकर हमें नहीं मिलेगा।''

तभी चेतू घर आया।

''भैया यह लड़का टैक्सी स्टैण्ड से आया है। मुसीबतो मे हमेशा यह टैक्सी स्टैण्ड वाले हमारे काम आतें हैं। अपनो से भी बढकर यह लोग हमारी मदद करते रहते है। सोनू के जाने के पश्चात अब यह लडका चेतू ही हमारी मदद कर रहा है। यह टैक्सी स्टैण्ड पर टैक्सी चलानी सीख रहा है। ड्राइवर बन यह कही और चला जाएगा। भैया चेतू को हमारे पास भेजने वाला ड्राइवर सोहन है। वह हमे कह रहा है कि अगर आप अपनी कोई कार खरीद लो तो चेतू आपके पास ही रह जाएगा।''

सुनील की भी यह इच्छा थी कि उसकी बहन के पास भी अपनी कार हो। सुनील ने दो दिन घूम-फिर बाजार का जायजा लिया और बहन नीलम के लिए एक फीएट कार खरीद ली। फिर सुनील आगरे के लिए रवाना हुआ।

चेतू क्लीनर से ड्राइवर बन गया। वह ड्राइवर होते हुए भी साहब मोहन की सेवा करने लगा। एक दिन नीलम और संजना इकट्ठी बैठी घरेलू बातें करने लगी। सजना कहने लगी, ''नीलम बेटी रजनी एम ए में पढ रही है। उसे पढ़ाना-लिखाना, उसकी शादी करना हमारी नैतिक जिम्मेदारी है। परतु कुछ लोग ऐसा सोचते हैं जैसे कि पूरी दुनिया की उन्हें ही फिक्र हो। कल की ही बात है। मैं अपने बच्चो को साथ लेकर कमला नगर कुछ चीजें खरीदने गई। वहां मुझे मैडम नीरज खन्ना मिल

गई। मेरी उसके साथ कोई खास उठन-बैठन भी नही है। वैसे ही जब कभी हमारा आमने-सामने मेल हो जाता था—तो एक-दूसरी को राम-राम कह दिया करती थी। कल वह मुझे रजनी की शादी के लिए ऐसे ही पूछने लगी—बेटी रजनी की शादी कब करोगे ? मैने कहा कि अभी तो बेटी पढ़ रही है। अभी हम बेटी की शादी नही करेंगे। वह मुझे फौरन कहने लगी कि घर मे बेटी जवान हो तो माता-पिता को नीद नही आती है। आप तो बहुत बेफिक्र औरत हो। वह मुझे ऐसे समझाने लगी जैसे मुझे बेटी की शादी की कोई फिक्र ही न हो।

बस फिर क्या था—मैंने उसे खूब खरी-खोटी सुनाई। नीलम मै चाहती हू कि रजनी पढ़-लिखकर किसी नौकरी से लग जाए। जैसी नौकरी मिलेगी उस हिसाब से ही वर ढूढ लेगे। अभी से हम क्या फैसला कर सकते है। नीलम मै तो पहले भी आपसे कहा करती थी कि हमें इस दो-मुंही दुनिया की कोई परवाह नहीं करनी चाहिए। आपने भी देख ही लिया होगा यह दुनिया कैसे गिरगिट की भांति रग बदल लेती है। अब हम बेटी को पढ़ा रहे हैं। लोग कह रहे हैं कि हमें बेटी की शादी की चिन्ता नही है। कल को दुनिया कहेगी कैसा वर ढूढा है। ऐसा नही वैसा चाहिए था। इस दुनिया को कोई भी खुश नहीं कर सकता। इसलिए हमें दुनिया की परवाह नही करनी चाहिए। जैसे परमात्मा की इच्छा है, उसका हुक्म है—वैसे ही सभी काम होते हैं। जिसकी किस्मत मे जो लिखा होता है वह ही मिलता है। बेटी रजनी पढ़-लिखकर अपने काम लग जाए—जैसा माहौल होगा—देख लेगे। वैसे नीलम मै तग दिल की नही हू। बेटी रजनी से मै स्पष्ट बाते कर लेती हू। अगर मै स्पष्टवादी न होती तो बेटी रजनी हीन-भावना का शिकार हो जाती। मै नही चाहती थी कि रजनी अभी से अपनी शादी की फिक्र करने लग जाए।"

नीलम अपने मन के दर्द को दबाती हुई—ऊपरी मन से संजना की बातो को सुन रही थी। घन्टे भर की बात के पश्चात दोनो सहेलिया अपने-अपने घर को चल पडी।

पन्द्रह दिनों के पश्चात उन्हे फिर बात-चीत करने का समय मिला। सजना दशहरे की छुट्टिया मनाली बिताकर आई थी। सजना नीलम से मोहन की बीमारी का हाल-चाल पूछने लगी।

नीलम ने लम्बी हुंकार भरते हुए कहा, "सजना साहब की बीमारी तो अब मुझे भी ले बैठेगी। तुम सुनाओ कैसे बीते छुट्टियों के दिन ? कुल्लू का दशहरा जो इतना मशहूर है उसकी क्या खास खूबी है, कितनी भीड़ इकट्ठी होती है मेले मे।"

"नीलम हमारा टूर बहुत अच्छा रहा है। घूम-फिर कर मन बहुत खुश हुआ है। कुल्लू के दशहरे मे मुझे कोई खास चीज नजर नहीं आई है। अपनी दिल्ली की

भाति ही लोगो का हजूम इकट्ठा हुआ था। तिल रखने की जगह न थी। अब अपने देश की आबादी बहुत हो गई है। वहां भी लोग कीट-पतगों की भाति मेले में घूम रहे थे।''

नीलम अपने मन मे विचार करने लगी कि हमे भरी दुनिया से क्या लेना-देना जब हमारी ही दुनिया अजीब बन गई है। बस साहब .नीलम उदास मन अपने घर की ओर चल पडी।

नीलम ने मोहन को सजना की कहानी सुनाई कि कैसे वह छुट्टिया बिता कर आई है। नीलम ने अपने मन की बात कहते हुए कहा कि ''आपने तो भरी जवानी मे भी कभी मेरे अरमान पूरे नही किए हैं।''

''नीलम तुम लोगो की बातों मे आकर यह भूल ही जाती हो कि औरत की सबसे बडी खुशी पति के खुश रहने मे ही होती है। अगर पति को कुछ हो जाए तो पत्नी के लिए यह भरा संसार सूना-सूना-सा हो जाता है। अगर मैं स्वस्थ होता तो तुम्हारे साथ मे मुझे भी खुशी होती।''

''जी आप तो बहुत चालाक वन रहे हो। यह तो आप समझ गए हो कि औरत की खुशी उसके पति की खुशी में ही होती है। कौन-सी एक घडी याद है जो मेरे साथ खुशी से विताई हो। आपने तो मेरी कोई भी कामना पूरी नही की है।''

''अच्छा मै अब समझा कि तू ऐसे क्यो दुखी हो रही है। पढी-लिखी होने के वावजूद भी तुम्हारी सोच अनपढ़ औरतों जैसी ही है। मुझे तुमसे यह उम्मीद नही थी।''

''जी पढे-लिखे और अनपढ का सवाल नही है। पति-पत्नी पढे-लिखे हों या अनपढ़, सच्चाई से मुंह नही फेरा जा सकता है। परंतु अब अपना वह समय बीत चुका है। अब पछताए होत क्या जब चिडिया चुग गई खेत। मुझे भगवान ने सब्र-संतोष की दौलन दी है। तुम्हारे जैसे निकम्मे पति के साथ जीवन बिताना कोई छोटी भक्ति न थी। मन तो मेरा दुखी ही है।''

''नीलम तुम औरतों जैसी अडी पर आ गई हो। अगर अब मेरी बाते ध्यान से सुनती रहोगी तो एक न एक दिन तुम्हे ब्रह्मज्ञान प्राप्त हो जाएगा। अगर मेरी ही बात नही मानोगी तो फिर तुम्हारी अब तक की हुई सेवा निष्फल हो जाएगी। क्योकि दुख मे साथी का साथ छोड़ना, दुखी जीवन साथी को और दुखी करना उचित नही होता है। और मेरी आत्मा तुझे आशीष नहीं बल्कि बददुआए ही देगी। ऐसे तेरे मन को शाति प्राप्त नहीं हो सकेगी।''

''जी आप बाते तो खूब जानते हो—अपने आप को बहुत बडे ज्ञानी समझ रहे हो। अगर आप पहुंचे हुए महत थे तो फिर आप बीमार कैसे पड़ गए हो। आपको कोई ज्ञान प्राप्त नही हुआ है। परमात्मा के मन में क्या है वह किसी को भी बताता

नही है। ब्रह्मज्ञानी संत इस ससार मे ही आम व्यक्तियों की भाति जन्म लेते है। आम व्यक्तियो की भाति ही ससार में रहते है। हा उनकी पहचान हो जाती है। ब्रह्मज्ञानियो के विचार ऊंचे और शुद्ध होते है। मै अपने मन में किसी का भी बुरा नही सोचती हू। किसी का बुरा कर पाना तो बहुत दूर की बात है। ब्रह्मज्ञानी की पहचान मुश्किल बात नही है।

ब्रह्मज्ञान आम सासारिक पढ़ाई की भाति प्राप्त नहीं किया जा सकता। सासारिक पढाई सासारिक कामों में काम आती है। ब्रह्मज्ञान देवी ज्ञान है। भगवान की कृपा दृष्टि से ही प्राप्त होता है। ब्रह्मज्ञानी हमेशा अच्छे काम करने के लिए तत्पर रहते है। हमें परमात्मा की कृपा के पात्र बने रहना चाहिए। ब्रह्मज्ञानी हमेशा अपनी जिदगी की डोर परमात्मा के हाथ समझता है। अगर ब्रह्मज्ञान बुद्धि से प्राप्त किया जा सकता तो यह बहुत आसान काम होता। ब्रह्मज्ञान व्यक्ति को ब्रह्म भाव मे विलीन होने पर ही प्राप्त होता है। इसलिए हम ब्रह्मज्ञान अपनी बुद्धि से प्राप्त नही कर सकते है। कृपादृष्टि परमात्मा ही करता है।''

''नीलम तुम समझ नही रही हो। पत्नी के लिए पति ही उसका प्रत्यक्ष भगवान का रूप होता है। इसलिए औरतो को भक्ति करना आसान है। हाजिर नाजिर प्रत्यक्ष पति परमेश्वर के समान होता है। बस दिल लगाकर अपने पति की सेवा करती रहो। अपने आप तुम्हें ज्ञान प्राप्त हो जाएगा।''

''जी वेदों ग्रथों में यह भी लिखा है कि परमात्मा सभी को हमेशा मेहर की नजरो से एक समान देखता है। आप नाजिर पति-परमेश्वर की बात कह रहे हो—अखबारो मे कैसी-कैसी खबरें पढने को मिलती है ? कितनी औरतो के पति-परमेश्वर बेचारियो को मिट्टी का तेल डाल जला देते है। क्या वह पति-परमेश्वर हमेशा क्रोध से ही पत्नियो को देख सकते है।''

नीलम और मोहन की नोक-झोंक होती रही। दोनों कुछ खाए-पीए बगैर ही सो गए। फिर वह कुछ दिन शात रहे।

एक दिन सजना ने नीलम से कहा, ''हमारे कुछ मेहमान कनेडा से आ रहे है। मेरे लिए सोहन की टैक्सी बुला देना। सोहन का स्वभाव अच्छा है। शहर मे टैक्सियो की तो कोई कमी नही है—हा जानकारी वाले टैक्सी ड्राइवर के साथ अकेले जाते कोई फिक्र नही होती है।''

''संजना मै सोहन को बुला लूंगी—वह सही समय टैक्सी लेकर तुम्हारे घर पहुच जाएगा। तुम बेफिक्र हो जाना।''

सोहन समय पर अपनी टैक्सी लेकर सजना के घर पहुंच गया। संजना का नौकर रामू सोहन के लिए चाय का कप ले आया।

सजना सोहन की टैक्सी मे बैठकर एयरपोर्ट चल पडी। सोहन अपनी आदत मुताबिक चुपचाप टैक्सी चलाने लगा। संजना ने ही बात शुरू की—"सोहन भैया मैं औरत होते हुए भी बहुत खुले दिल की हूं। मैंने जिंदगी मे हमेशा खुश रहना ही सीखा है। ड्राइवर होते हुए भी आप चुप रहते हो। आप मुझे अपनी खामोशी का कारण बताओ—क्यों चुप रहते हो। मेरी बातों का बुरा न मानना। चुप रहने वाला व्यक्ति तो ऐसे ही बोर हुआ रहता है। तुम तो ड्राइवर हो पूरा दिन सफर मे रहते हो—मेरा ख्याल है कि आप तो बोर ही हुए रहते होगे। मैने तो ड्राइवरो को चबर-चबर बोलते हुए देखा है। ड्राइवरो को तो चार-चार जबाने लगी होती है। हसते हुए हमेशा अठखेलियों करते रहते है। ज्यादातर ड्राइवर लोग हर बात का उलटा ही मलतब लगाते हमने देखे है।"

"मैडम जी ऐसी बात नहीं है—ड्राइवर लोग सिर्फ बदनाम है। लेकिन सभी ड्राइवर बुरे नही होते है। भगवान ने पाचो उंगलिया एक जैसी नही बनाई हैं।"

"सोहन भैया भले-बुरे की बात नही है। आम कहावत है कि बद अच्छा बदनाम बुरा। चलो सभी बेअर्थ बातों को छोड़ मुझे अपने चुप रहने का कारण बताओ। अभी तुम्हारी आयु ही कितनी है जो अभी से चुप रहने लगे हो।"

"मैडम जी मैने अपनी इस छोटी आयु में ही जिदगी के बहुत उतार-चढाव देख लिए हैं। अगर मैं आपको बताऊं कि मैं पंजाबी यूनिवर्सिटी पटियाला से बी ए पास हू तो आप यकीन नहीं कर सकोगी क्योकि मैं बहुत साधारण स्वभाव का हू। साधारण ही बनकर रहता हू। मै अपनी जिंदगी को शुरू दिन से ही बहुत साधारण रहते हुए बिताता आया हू। खेत मजदूरो से लेकर राजनीतिक नेताओ, पढ़े-लिखे आई ए एस. के दर्जे के व्यक्तियो से मेरा सम्बन्ध रहा है। यहां राजधानी मे टैक्सी चलाते हुए इलैक्शन के समय मै राष्ट्रपति ज्ञानी जैल सिह के साथ रह चुका हू। अब मोहन साहब की बीमारी देखते हुए मुझे महसूस होने लगा है कि जिदगी भी सच होते हुए एक सपने की भांति ही है। मन अच्छी तरह समझ गया है कि जीना झूठ मृत्यु ही सच्चाई है। अब मुझे दुनिया एक सपने की भाति नजर आने लगी है। मन मे वैराग्य होते हुए भी आप देख रहे हो—मै अपना काम कर रहा हू। मै ड्राइवर हूं। ड्राइवरो के साथ रहता हू। परंतु कहां पढ़े-लिखे व्यक्तियों की संगत कहा बदनाम हुए ड्राइवरो का 24 घंटे का साथ। मै अपनी मौज मे मस्त हू। दुनिया की मुझे कोई परवाह नही है। मुझे किसी का डर नही है। अब अपनी टैक्सी चलाते हुए मेरा परिचय आप जैसे पढे-लिखे लोगो के साथ हो रहा है।

एक दिन मैं अपनी टैक्सी में स्कूल के बच्चो को छोड़ने गया। स्कूल टीचर ने मुझे अनपढ समझ बहुत ज्ञान की बाते सुनानी शुरू कर दी—सरदार जी आप बहुत अच्छी गाड़ी चलाते हो। ड्राइवरी से अच्छा कोई काम नहीं है। जीवन की गाडी

चलाने के लिए भैया मन रूपी अच्छे ड्राइवर की जरूरत होती है। समझो अपना शरीर एक गाडी है। मन इसका ड्राइवर है। जैसे अच्छा ड्राइवर सही ढग से गाडी चला कर अपनी मजिल पर पहुच जाता है—ऐसे ही शरीर रूपी गाडी का मन रूपी ड्राइवर अच्छा हो तो व्यक्ति की जिंदगी का सफर खुशी-खुशी पूरा हो जाता है। समय हसी-खुशी बीत जाता है। अगर मन रूपी ड्राइवर चचल हो तो फिर व्यक्ति भटकता रहता है।

सरदार जी अपने मन रूपी ड्राइवर को समझाते रहो। अपना काम जो भगवान ने दिया है खुशी-खुशी करो। दूसरे की थाली का लड्डू हमेशा बडा नजर आता है। दूसरो की ओर देख कर अपना मन दुखी न करो—फिर वह मुझे पूछने लगी कि जिदगी का सफर अभी अकेले ही बिता रहे हो या कोई जीवनसाथी चुना हुआ है। मैने कहा अभी तो अपना ही बोझ उठाना मुश्किल नजर आता है, और वजन मे कैसे उठा सकता हू। वह मुझे कहने लगी कि तभी तो आप परेशान नजर आ रहे हो। एक दिन का बस या रेल का सफर भी करना हो तब भी हमे साथी की जरूरत महसूस होती है। लम्बी जिंदगी का सफर कैसे कटेगा। जिंदगी बिताने के लिए जीवनसाथी जरूर होना चाहिए—मैडम जी उस औरत की बातों से मैं बहुत प्रभावित हुआ।''

बातो-बातों मे ही टैक्सी एयरपोर्ट पहुंच गई।

संजना के मेहमान पहले ही पहुंच चुके थे। सजना अपने मेहमानो से बाते करने लगी। सोहन ने उन्हे अपनी टैक्सी मे बिठाया और वापस घर के लिए चल पडा।

सोहन अपने ख्यालो में खोया टैक्सी चलाता रहा। सोहन के मन मे अजीब-अजीब नए-नए ख्याल उठने लगे—कि भगवान का बहुत शुक्रिया है कैसे-कैसे खुले स्वभाव के लोगो से मिलकर बाते करने का समय मिल रहा है। कितनी खुलेदिल और हसमुख है मैडम सजना। फिर मन मे ख्याल उठने लगे कि औरत भगवान की बनाई सबसे कोमल कृति है। यह ससार औरतो के स्वभाव और हृदय की कोमलता के कारण नियमित है। संसार और समाज अच्छे लग रहे है। अगर भगवान औरतो को ऐसा कोमल दिल न देता तो ससार का नक्शा कुछ और ही होता। हम ऐसे ससार के रूप की कल्पना भी नही कर सकते। अपने ही सपनो मे खोए सोहन को मालूम भी न पड़ा कि कैसे सफर पूरा हो गया है। वह इतनी जल्दी घर पहुच गए है।

समय-समय की बात होती है। हर समय व्यक्ति के विचार एक जैसे नही होते है। कभी-कभी ऐसे-वैसे ख्याल व्यक्ति को वैसे ही परेशान करने लग जाते है।

कभी-कभी वह ही विचार व्यक्ति को अच्छे लगने लग जाते है। किसी ने ठीक ही कहा है—

समय ही समर्थ है—वही अर्जुन तेरे बाण वह ही तुम्हारे हाथ है। एक समय हाथ मे धनुष लेकर अर्जुन सोचने लगा कि मै किसे मारूं—मेरे सामने तो दोनों ओर अपने ही खडे नजर आ रहे है। उस समय अर्जुन को ज्ञान नही था। अर्जुन अपने आप को हर काम का कर्ता समझ रहा था। श्री कृष्ण के समझाने पर उसका कर्ता होने का भाव खत्म हुआ—उसे तब ज्ञान प्राप्त हुआ था।

सजना ने जब अपनी पढाई पूरी की थी तो उसे फौरन प्रोफेसर की पोस्ट मिल गई थी। सजना यह ही सोचकर अपनी बेटी रजनी को पढाती रही थी।

रजनी की पढ़ाई पूरी हुई। रजनी ने पहले दर्जे में एम. ए इकनॉमिक्स पास की। संजना ने रजनी को एडजस्ट करवाने की अपनी भरपूर कोशिश की मगर रजनी को कोई सरकारी सर्विस न मिली।

सजना की चिता दिनोदिन बढने लगी। समय अपनी चाल चलते हुए किसकी परवाह करता है। रजनी को पढ़ाई छोड़े हुए भी पाच वर्ष बीत गए। रजनी की जवानी अब मुरझाने लगी थी। रजनी अपने घर की चारदीवारी के भीतर रहकर बोर होने लगी।

पढते समय उसका पूरा ध्यान पढ़ाई मे ही लगा रहता था। अब उसके मन के भीतर भांति-भाति के ख्याल उठने लगे।

संजना अपनी बेटी के दिल के अरमानो को अच्छी तरह समझ रही थी। संजना के मन की चिंता रजनी के लिए सोचते-सोचते बढ़ने लगी। संजना के सोचे सपने झूठे साबित होने लगे। उसकी आखों की नींद उड गई। वह सोने के लिए नीद की गोलियो का सहारा लेने लगी।

मां को परेशान देखकर एक दिन रजनी कहने लगी, "मा मेरी चिंता मत करो। आपकी खुलेदिली के कारण अब मैं भी खुले विचारो वाली बन गई हू। अब मैने शादी न करने का पक्का निश्चय कर लिया है। अब मैं एक नर्सरी स्कूल चलाकर अपनी जिदगी के बाकी दिन स्कूल मे मासूम बच्चो को पढाकर व्यतीत करूगी। अनमोल और मासूम बच्चो के साथ मेरा समय बीतता रहेगा।"

"बेटी तुम क्या सोचने लग गई। चांद जैसे सुंदर जवाई के साथ मैं तुम्हारी शादी करूंगी। अभी तुम्हारी उम्र ही क्या है। पढे-लिखे लोग 30-35 वर्ष की उम्र मे शादियां करते है। पहले लोग अनपढ होते थे—इसलिए छोटी उम्र मे ही बच्चो की शादिया कर देते थे।"

रजनी की सर्विस की चिता छोड सजना रजनी की शादी की चिंता करने लगी।

सजना ने अपना पूरा ध्यान रजनी के लिए वर ढूढने मे लगा दिया।

एक दिन टेलीविजन की एक प्राइवेट कपनी ने मैनेजर की पोस्ट के लिए अखबार मे विज्ञापन दिया। रजनी सजना से कहने लगी, "मां जब सरकारी नौकरी नही मिल रही है तो प्राइवेट कपनी मे काम करना ही उचित है।"

"बेटी इन कंपनियों में तो लोग मजबूरी में ही काम करते है। हमें ऐसी-वैसी कपनी मे काम करने की कोई जरूरत नहीं है। हम तो सरकारी सर्विस को ही अच्छा समझते हैं।"

"मा घर बैठे रहने से समय मुश्किल से पास होता है। काम मिलना ही मुश्किल होता है। छोडना तो अपने हाथ होता है। अगर कोई सरकारी सर्विस मिल जाएगी तो प्राइवेट छोड दूगी।"

मन की दुविधा मे ही रजनी ने अपनी एप्लीकेशन लिख भेजी। एक हफ्ते के भीतर ही कपनी की ओर से रजनी का इन्टरवियू काल आ गया। रजनी का मन बहुत खुश हुआ कि चलो जिंदगी मे पहला इन्टरवियू काल तो आया। परमात्मा का नाम लेकर रजनी इन्टरवियू के लिए कपनी के दफ्तर पहुची। वहा पहुच रजनी हैरान होने लगी। प्राय वह यही सुना करती थी कि अपने देश मे इतनी बेरोजगारी बढ गई है कि एक-एक पोस्ट के लिए हजार-हजार उम्मीदवार पहुंच जाते हैं। परतु यहा तो कोई भी उम्मीदवार नजर नहीं आ रहा है।

कपनी के चपरासी ने रजनी को बताया कि एक उम्मीदवार इन्टरवियू के लिए गया हुआ है। वैसे यहा हर रोज एक दो उम्मीदवार ही आते है। अभी तक कोई भी उम्मीदवार चुना नही गया है।

रजनी के मन मे भांति-भाति के ख्याल उठने लगे। वह सोचने लगी कि मा तो मुझे यहा एप्लाई करने से भी मना कर रही थी—मगर मुझे लगता है कि कोई उचित उम्मीदवार अभी तक यहा आया ही नही है। शायद लोग प्राइवेट कपनियो मे काम करना पसंद नही करते हैं।

एक लडकी जो शायद इन्टरवियू देकर ही आई थी—दफ्तर से बाहर आई। जमीन की ओर सिर झुकाए हुए वह जल्दी-जल्दी बाहर की ओर चल पडी।

चपरासी ने रजनी को दफ्तर मे जाने के लिए कहा। रजनी दफ्तर में गई। दफ्तर मे एक व्यक्ति ही बैठा था। उसकी शक्ल-सूरत देखकर रजनी डर गई।

वह व्यक्ति रजनी से पूछने लगा कि आपके माता-पिता क्या काम करते है।

रजनी चुप ही रही क्योंकि रजनी नाम, एडरैस और माता-पिता का व्यवसाय एप्लीकेशन में पहले ही लिख चुकी थी।

रजनी के मन मे सदेह हुआ कि वह गलत व्यक्ति के पंजे में फंस गई है।

दाल मे कुछ काला महसूस करते हुए रजनी बहुत डर गई। दफ्तर में अश्लील तस्वीरें देखकर रजनी शर्म महसूस करने लगी। दफ्तर का माहौल देखकर रजनी दफ्तर से बाहर जाने लगी।

कपनी का मालिक रजनी का हाथ पकडकर कहने लगा, "जाल मे जकडी मछली आसानी से जाल तोड कैसे भाग सकेगी। अगर प्यार से कुछ बाते सुनकर जाना चाहो तो फिर ही जा सकोगी। गरीब और जरूरतमद को बात मानने पर मुह मागी कीमत दी जाती है। हजारो रुपए मिल जाएगे। पैसो की जरूरत हो तो मागकर देख लो। घन्टे भर के लिए यहां रहना होगा।"

इज्जत को दाग लगता देख रजनी ने झटके से अपना हाथ पीछे खीचा—"कुत्ते-कमीने, नीच तुम्हारी इतनी हिम्मत ? नीच, मै घर यहा का एडरैस बताकर आई हू कि मैं यहा इन्टरवियू के लिए जा रही हूं। अब तुम्हारी यह झूठ की दुकान मै बंद करवाऊगी।" जख्मी शेरनी की भांति रजनी गरजने लगी, "कुत्ते तुम्हारे मे हिम्मत है तो मुझे जाने से रोक ले। मै अपनी जान देकर भी तुझे कैद करवा दूंगी।"

कंपनी का मालिक शांत होकर कहने लगा कि "अगर तुम सती-सावित्री हो तो मै तुझे छोड देता हू। दूसरी मेरी बात ध्यान से सुन लेना—मै पुलिस को महीना देता हू। अगर तुमने पुलिस के पास जाने की गलती की तो पुलिस मेरा कुछ नही बिगाड़ पाएगी। पुलिस के पास रिपोर्ट पहुंचने के पश्चात मेरे बदमाश तुम्हारे घर पहुच जाएंगे। आगे तेरी मर्जी है। अब तुम्हारे ज्यादा कहने पर तुझे छोड़ रहा हू। अगर दूसरी हालत में तुझे पकडकर यहा लाना पडा तो बहुत पछताना पड़ेगा।"

दबे पांव रजनी दफ्तर से बाहर निकली। कमरे के बाहर रजनी की रफ्तार ठीक वैसी ही तेज हो गई—जैसे उससे पहली उम्मीदवार की थी।

कपनी का मालिक बेफिक्र मस्त था कि और लडकियो की भांति रजनी भी डर गई होगी।

रजनी सीधे अपने घर पहुची। रजनी अपने मन की दुविधा मे फस गई कि आपबीती घर मे किसी को बताए या फिर चुप ही कर जाए। रजनी ने अपनी दुविधा खत्म कर आपबीती अपनी मां को बता ही दी।

पूरी कहानी जानकर सजना का बदन गुस्से से कापने लगा। सजना सीधे पुलिस हेड क्वाटर पहुंची। सयोग की बात थी कि पुलिस कमिश्नर की पत्नी सजना की सहेली ही थी। सजना की रिपोर्ट की सुनवाई शुरू कर पुलिस फौरन हरकत मे आ गई।

लेडी पुलिस की एक कर्मचारी मिसिज सीमा को कपनी के दफ्तर में भेज

गया। दफ्तर को पुलिस ने सिविल वर्दी मे चारो ओर से घेर लिया। सीमा की इन्क्वारी के मुताबिक कपनी के मालिक को 420 के केस मे बंद कर दफ्तर सील कर दिया।

दूसरे दिन सभी अखबारों मे सुर्खियो मे यह खबर छपी कि इन्टरवियू के बहाने कैसे लडकियो की अनमोल इज्जत के साथ खेला जा रहा था। सजना की तारीफ लिखी गई कि कैसे उसकी दिलेरी और हिम्मत से झूठ की दुकान का पर्दा उठाया गया। बेचारी सजना के सभी सपने चकनाचूर हो गए। सजना ने रजनी की शादी एक छोटे सरकारी कर्मचारी के साथ कर दी। सजना अपने दिल के दर्द को अब किसी को भी नहीं बताना चाहती थी।

सजना और नीलम की मुलाकात बहुत दिनो के पश्चात हुई। दोनो सहेलियो ने अपने-अपने दिलो के दर्द एक-दूसरे को बताकर अपने-अपने मन हलके किये।

सजना बातो का रुख बदलते हुए कहने लगी, "नीलम तुम्हारा टैक्सी ड्राइवर सोहन तो बहुत छुपा रुस्तम है। उसने अपनी जिन्दगी में बहुत उतार-चढ़ाव देखे हुए है। शायद इसी कारण ही उसका मन नर्म है। उसके मन में मजबूरों और दुखियो के लिए हमदर्दी है।"

"हां संजना सोहन सगे सम्बन्धियों की भाति हमारी भी मदद करता रहता है। सगे संबंधी भी अब हमारे से दूर रहने लगे है। एक सोहन ही है जो सच्चे मन से हमारे साथ हमदर्दी कर रहा है।"

अपने मन के भार हल्के कर दोनो सहेलियां अपने-अपने घर की ओर चल पडी।

हर व्यक्ति की मृत्यु का समय जन्म के साथ ही कुदरत निश्चित कर देती है। व्यक्ति एक भी सास उस समय से ज्यादा या कम नही ले सकता है। कुदरत ने यह भेद छुपाकर ही रखा हुआ है। हा व्यक्ति आशा के सहारे आगे से आगे सोचकर संसार से जुडा हुआ ही रहना चाहता है।

मृत्यु अटल सच्चाई है। सभी धर्म के लोग यह बात मानते है कि जन्म लेने वाले की मृत्यु अवश्य होती है। गुरु तेग बहादुर जी अपनी वैरागमयी वाणी मे लिखते है–

"जो उपजिया सो बिनसिहै,
परों आज के काल।"

यह सच होते हुए इस सच्चाई को सच समझते हुए अपने मन मे मान लेना हर एक व्यक्ति के बस की बात नहीं है। जिसे हर समय अपनी मृत्यु याद रहे उस व्यक्ति का व्यवहार आम ससारी व्यक्ति जैसा नही रह सकता। मृत्यु को याद रखने वाला व्यक्ति धार्मिक बन जाता है। आम संसारी व्यक्ति हमेशा मृत्यु को याद नहीं

रख सकता है। ससार से जुडकर मन को आगे से आगे स्कीमे सोचनी पड़ती है। सो वर्ष की आयु के बूढे व्यक्ति को भी यह यकीन बना रहता है कि अभी उसकी मृत्यु नही हो सकती है।

सामान सौ वर्ष का मगर पल की खबर नही है। परमात्मा ने ऐसी योजना, ऐसे ढग मे संसार चलाया हुआ है कि व्यक्ति उसके छुपे भेद मालूम नही कर सकता हे। हा कुछ ऐसे सवाल है जिनका आज तक कोई भी सही जवाब नही है।

कुछ अदेही शक्तिया अपनी शक्ति से अपने प्रभाव से व्यक्ति को ऐसे दृश्य सपनो या ख्यालो मे प्रकट कर देती है–जिसे देखकर व्यक्ति उन शक्तियो को मानने लगता है।

नीलम की एक दिन सुबह 4 बजे ही कोई अजीब सपना देखकर आख खुल गई। जागकर नीलम अपने मन मे विचार करने लगी। ओह-हो–कैसा सपना नजर आ रहा था। मेरी आंख क्यो खुल गई। नीलम अपना सपना याद करने लगी। भगवान तुम्हारी क्या अजब लीला है नीद में देखे सपने याद क्यों नहीं रहते है। शरीर के भीतर वह कौन-सी शक्ति है जो व्यक्ति के सोते समय भी देखती रहती है। मन मे चल रहे सपनों को देखती रहती है। सपने क्यो दिखाई देते है। सपने अजीव-अजीब क्यों नजर आने लगते है। यह सपने चेतन मन को याद क्यो नही रहते है।

नीलम को नीद में देखे सपने की धुधली-सी तस्वीर याद आने लगी–सपने मे पिताजी हू-ब-हू मेरे सामने बैठ मेरे से बातें कर रहे थे। मुझे स्पष्ट कह रहे थे कि बेटी नीलम मै अपना पच-भूत शरीर त्याग रहा हूं, मै शरीर से अलग था–शरीर नाशवान था–मेरी आत्मा अमर है।

बस इतना सपना याद आते ही नीलम का मन भर आया। सपनो का अर्थ समझने वाले बुज़ुर्ग कहते है कि सवेरे के सपने ज्यादातर सच ही होते है। कहीं मेरा यह सपना सच न हो जाए। बस पिताजी . जरूर कोई गडबड हुई है। मुझे दुखी समझते हुए पिताजी की आत्मा जरूर मेरे पास पहुची होगी। आत्मा आखिरी बार मुझे मिलना चाहती होगी। मै समझूं या न समझ सकूं पिताजी की आत्मा...हम तो शरीरो को ही पहचानते है। आत्मा का तो कोई रंग-रूप नहीं होता है। अमर आत्मा मुझे सच-सच बताना चाह रही होगी। मगर शरीर के उपकरण के बगैर आत्मा भी कैसे बोल सकती है। मेरी आत्मा का तार पिताजी की आत्मा से जुड गया था। मै सपने मे पिताजी को पहचान नही सकी हूं।

टैलीपेथी के ढग से पिताजी की आत्मा ने मेरी आत्मा से संबध जोड़कर बाते की होंगी। नीलम का दिल बहुत तेज धड़कने लगा। नीलम का मन बेचैन हो गया।

नीलम लेटकर आराम करने लगी।

कुदरत के करिश्मे है। नीलम का सपना सच ही था। नीलम को आगरे से टेलीफोन आया कि उसके पिता धनपत राय जी नही रहे।

नीलम की आंखो मे आसू आ गए।

नीलम को फौरन फैसला लेना पडा। नीलम मोहन को टैक्सी मे बिठा आगरा के लिए रवाना हुई। आगरे पहुंच अपने पिताजी के अतिम दर्शन कर रोने लगी। नीलम को चुप करवाते हुए मा गीता कहने लगी, "बेटी रोना बन्द करो—पक्के भाडो का क्या है—पक्के भाडे के फूटने का कोई गम नही है। आज नहीं तो कल पक्के भाडे आखिर फूटने ही हैं। बेटी अपना मन लगाकर अपने देवता की पूजा करती रहना। इस जन्म मे कोई फल नहीं मिला है—कोई बात नही है। अगले जन्म मे परमात्मा तुझे सेवा का फल अवश्य देगा।"

नीलम मन ही मन रोती रही।

वकील साहब के मृत शरीर को अग्नि की भेट करने के लिए लोग मिल-जुल कर श्मशान घाट ले गए। अंतिम संस्कार की रस्म पूरी कर लोग अपने-अपने घरो की ओर चल पड़े।

दूसरे दिन नीलम और मोहन भी दिल्ली के लिए चल पड़े।

एक दिन सोहन नीलम के पिता का अफसोस करने के लिए नीलम के पास पहुचा। सोहन नीलम को दिलासा देने लगा।

नीलम कहने लगी, "सोहन मेरे पिताजी बहुत ही नेक स्वभाव के व्यक्ति थे। पिताजी की आत्मा को अवश्य ही स्वर्ग मे जगह मिली होगी।"

"मैडम जी आगे की बातों को कौन जान सकता है। नरक-स्वर्ग बस कल्पनाए हैं।"

"भैया सोहन हम तो हमेशा यह सोचकर ही काम करते है कि हमारा आगे का जन्म जरूर सुखी ही हो।"

"मैडम जी आपको हमारे से कहीं ज्यादा ज्ञान है। मै आपसे इस टॉपिक पर बहस नही कर सकता हू। परतु ग्रथो मे स्वर्ग-नरक को ठीक नही माना गया है। स्वर्ग और नरक चित्त की भावदशा से सबधित होते है। समय खुशी, बेफिक्री, आनद से बीत रहा हो तो समझो कि व्यक्ति का चित्त स्वर्ग भोग रहा है। समय चिन्ताओ, निराशा और भगवान से गिले-शिकवे करते हुए बीत रहा हो तो समझो व्यक्ति नरक भोग रहा है। स्वर्ग-नरक की चिन्ता छोड हमे नेक काम करने चाहिए। जो आत्मिक शाति हम प्राप्त कर सकते है—मनुष्य जीवन में प्राप्त कर सकते है। मनुष्य देह को ही असली परमात्मा का मदिर कहते है। यह मनुष्य देह भी हमे परमात्मा की कृपा से ही मिलता है मैडम जी आपको इस मनुष्य जन्म में सब्र-सतोष सब प्राप्त हुआ

है। सब्र-सतोष की दौलत भी किसी एक खुशनसीब को ही प्राप्त होती है। ज्ञान और भक्ति से आपको यह अमोल दौलत प्राप्त हुई है। दौलत की प्राप्ति का वर्णन वेदो-ग्रथो मे भी है कि यह दौलत होना भी बहुत बड़ी बात है।''

''जब आए सतोष धन,
सब धन धूल समान।''

''सोहन हम अगले जन्म को मानते हुए अगले जन्म के लिए अभी से अच्छे कर्म करते है। पूर्वजन्म में किए अच्छे कर्मो के फल स्वरूप हमे मनुष्य देह मिली है। पूर्वजन्म मे किए कर्मो का फल हम मौजूदा देह मे भुगत रहे है। अब के कर्मो का फल हमें अगले जन्म मे मिलेगा। भैया सोहन मैं साहब जी की सेवा करते हुए कभी किसी का मन नही दुखाती हू। अगर सभी लोग स्वर्ग-नरक को न मानें तो इस दुनिया मे पाप और बुरे कर्म बढ जाएंगे। धर्म का नाश हो जाएगा। धर्म का नाश होने पर पृथ्वी पर यहा प्रलय आ जाएगी। लोग दान-पुण्य क्यों करते है ? इसलिए करते हैं कि हमारा अगला जन्म अच्छे माहौल मे हो। अगर स्वर्ग-नरक सिर्फ व्यक्ति की कल्पनाएं ही हैं—तो भी फिर यह कल्पना अच्छी ही है। बुजुर्गो ने सोचकर ही स्वर्ग-नरक की कल्पनाए की होगी। इन्सान का फर्ज तो मेहनत और नेक कमाई करना ही है। वैसे अगर हम सब कुछ अपनी अक्ल से ही कर सकते तो इस ससार का फिर नक्शा ही कुछ और हो जाता।

भगवान का लाख-लाख शुक्रिया है कि उसने यह भेद अपने ही हाथ मे रखा हुआ है आशा के सहारे जीवन आगे चलता रहता है। कोई भी व्यक्ति आने वाले समय के बारे मे कुछ नही जानता। बस विनती करते हुए आशा-उम्मीद लगाए व्यक्ति आगे से आगे देखता रहता है। सोहन साहब जी को देख रहे हो ? अब मन—मन भी सोहन कुछ कहने को भी मन नहीं करता है। कैसे कहू ? लगता है एक न एक दिन साहब जी . बस सोहन मुझसे कहा भी नही जा रहा है। परतु साहब जी का बिछोडा मै सहन नही कर पाऊगी। साहब जी के साथ ही...सोहन तब फिर कल्पनाए करते रहना। तुम्हारी कोई भी कल्पना शायद हमारे पास पहुच नही पाएगी।''

नीलम के दिल के दर्द को सोहन समझ रहा था—दर्द से भरा नीलम का मन छलक पडा। मोटी बरसात की भाति नीलम की आखो से आसू छलकने लगे। सोहन भी कुछ बोल न सका।

नर्म स्वभाव का सोहन भरे मन से अपने स्टैण्ड की ओर चल पडा। चलते-चलते सोहन सोचने लगा कि क्या यही सच है। सोहन का मन कहने लगा कि हा, यही सच है। मृत्यु का एक दिन निश्चित है।

जीना झूठ मरना सच है। तब फिर किस कारण ऐसे ही व्यक्ति भटकता रहता है।

सोहन की आत्मा ने ही उसे जवाब दिया—हा सोहन, मृत्यु एक अटल सच्चाई है। व्यक्ति के जीवन की डोर भगवान के ही हाथ में है।

मृत्यु सभी कुछ समाप्त कर देती है। मृत्यु के पश्चात व्यक्ति के सभी रिश्ते समाप्त हो जाते है। बस बाकी रह जाती हैं यादे—इन यादो के सहारे पीछे जीने वाले सबधियो की लम्बी सूनी-सूनी जिदगियां। किसका अंत कहां और कैसे होगा कोई भी ससार में जानता नहीं। हुक्म का गुलाम ससारी जीव भगवान का हुक्म मानने के लिए मजबूर ही होता है। वरना यह ससार छोडने को तो किसी का भी मन नही चाह रहा होता है। हां जो आत्मावान, ज्ञानी ऋषि-मुनि होते है मन की बातें वह ही जानते होगे। अपने मन से बाते करते हुए सोहन अपने स्टैण्ड पर पहुचा। सब कुछ भूल सोहन अपनी टैक्सी की ओर ध्यान से देखने लगा।

